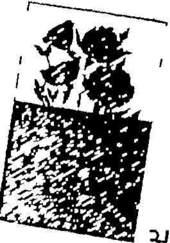
आधुनिक हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत



आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों के प्रेम गीत

सम्पादक

क्षेमचन्द्र 'सुमन'

प्रथम संस्करण
अगस्त १९६२

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
पोस्ट बाक्स १०६४ दिल्ली

कार्यालय और प्रेस
जी॰ टी॰ रोड शाहदरा दिल्ली ३२

बिक्री-केन्द्र
कश्मीरी गेट दिल्ली ६

●

मुद्रक
शोभा प्रिंटर्स
१०८६३ ईस्ट पार्क रोड दिल्ली

मूल्य
सात रुपये

ADHUNIK HINDI KAVYITRIYON KE PREM GEET
KSHEM CHANDRA 'SUMAN' POETRY

1

सखि वे मुझसे कहकर जाते !
कह तो क्या मुझको वे अपनी
पथ-बाधा ही पाते !'

और

'मुझे फूल मत मारो !
मैं बाला अबला वियोगिनी,
कुछ तो दया विचारो !

उन अनेक अमर प्रणय-गीतों के स्रष्टा
श्रद्धेय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
को सादर

यह संकलन

इस संकलन की भी एक कहानी है। 'हिन्द पॉकेट बुक्स' के अन्तर्गत प्रकाशित 'हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेम-गीत' नामक पुस्तक के सम्पादन के दिनों में ही यह विचार मेरे मन में आया था कि हिन्दी की आधुनिक कवयित्रियों द्वारा लिखित प्रेम-गीतों का भी एक संकलन अलग से प्रकाशित होना चाहिए। परिणामस्वरूप उक्त पुस्तक को प्रेस में मुद्रणार्थ दे देने के उपरान्त मैं जून १९६१ में इस काम में संलग्न हो गया। जब मैंने हिन्दी की आधुनिक कवयित्रियों को इस आशय का एक परिपत्र भेजकर उनसे अपने इस कार्य में सहयोग देने की प्रार्थना की तो सब ओर से मेरे इस प्रस्ताव का स्वागत ही नहीं हुआ, प्रस्तुत सामग्री भी आनी प्रारम्भ हो गई। जुलाई के अन्त में जब मैं अपने पास आई हुई उस सामग्री को कुछ व्यवस्था देने बैठा तो मैंने यह अनुभव किया कि अभी इस कार्य में पर्याप्त परिश्रम और खोज अपेक्षित है। जब सहज भाव से मेरे मानस में इस संकलन का संकल्प उठा था तब मैंने स्वप्न में भी न सोचा था कि यह इतना दुस्तर और दुरूह काम निकलेगा।

मेरा यह विचार था कि इस संकलन में खड़ी बोली-काव्य के क्षेत्र में अवतरित सभी प्रसिद्ध अप्रसिद्ध आधुनिक कवयित्रियों के प्रेम-गीत ही समाविष्ट न हों, प्रत्युत यह अपनी विशेषताओं के कारण हिन्दी-साहित्य का एक प्रतिनिधि 'आकर ग्रन्थ' भी बन सके। मेरी यह भी भावना थी कि इस संकलन में हिन्दी-काव्य की समृद्धि में योग देने वाली सभी प्रतिष्ठित कवयित्रियों के गीतों का समावेश होने के साथ-साथ उन कवयित्रियों की रचनाएँ भी रहें जो अपने साहित्यिक जीवन में पदार्पण करते समय कभी कविताएँ लिखा करती थीं और आज किसी कारण

अन्य साहित्य की अन्य विधाओं में रचना करके हिन्दी की अभिवृद्धि में अपना योग दे रही हैं, या इस क्षेत्र से सर्वथा उपराम ही हो गई हैं।

अपने उक्त विचार को कार्य रूप में परिणत करने के पवित्र उद्देश्य से प्रेरित होकर मैं सर्वात्मना इसमें जुट गया और देश के विभिन्न प्रमुख पुस्तकालयों में जाकर हिन्दी की नई-पुरानी पत्र-पत्रिकाओं की फाइलें तक छानीं। पहले मैंने उन सभी कवयित्रियों की तालिका तैयार की जो पहले से अब तक बराबर खड़ी बोली-काव्य की अभिवृद्धि में अपना सहयोग दे रही हैं, और बाद में उन बहनों की भी सूची बनाई जो अब विस्मृति की गहन गुहा में विलीन हो गई हैं। मेरी इस ऊहापोह से मेरा यह कार्य सरलता से जटिलता की ओर बढ़ गया और मैं अपने द्वारा ही फैलाए गए इस जाल में इतना उलझ गया कि न तो काम समाप्त होने में आता था और न इससे पार पाने का ही कोई मार्ग दिखाई देता था।

इस छान-बीन में मैंने रचनाएँ तो प्रायः एकत्रित कर लीं, परन्तु उनके जीवन-परिचय तथा चित्र आदि कहाँ से उपलब्ध किये जायँ यह समस्या अत्यन्त भीषण रूप में मेरे सामने आ खड़ी हुई। कुछ स्वर्गीया कवयित्रियों के चित्र तथा जीवन-परिचय-सम्बन्धी सामग्री जुटाने में मुझे जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उसकी कहानी बहुत लम्बी है। इस सम्बन्ध में जहाँ मैंने उनके पतियों सगे-सम्बन्धियों और पारिवारिकजनों का पता लगाकर उन्हें अनेक पत्र लिखे वहाँ उनसे सम्बन्धित नगरों व स्थानों की यात्राएँ भी कीं। खेद है कि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य में भी हिन्दी की कुछ उल्लेखनीय स्वर्गीय कवयित्रियों के पतियों ने अपना सहयोग देना तो दूर, मेरे पत्रों का उत्तर देने की आवश्यकता भी नहीं समझी। यहाँ तक ही नहीं, जब मैं उनसे मिलकर कुछ सामग्री प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके नगर में गया तो वहाँ भी उन्होंने मुझे मिलने का समय देने तक का सौजन्य नहीं बरता।

इस संकलन से सम्बन्धित सामग्री संजोते समय जो प्रमुख

कठिनाई मेरे सामने आई, वह थी कुछ कवयित्रियों द्वारा अपने चित्र और जीवन-सम्बन्धी सामग्री भेजने में आनाकानी करना। मैंने भी हिम्मत न हारी और अपने उद्देश्य की पवित्रता बताकर उनसे संकलन की 'एकरूपता' बनाए रखने में सहयोग देने की फिर याचना की। मेरी इस अभ्यर्थना का अधिकांश बहनों पर बड़ा सौम्य प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपने चित्र भेजकर वहाँ मुझसे सहयोग किया वहाँ 'हिन्दी साहित्य' के ऐसे महत्त्वपूर्ण आकर ग्रन्थ' की भी शोभा बढ़ाई। मेरे निरन्तर अनुरोध एवं अविरत आग्रह करने पर भी कुछ ऐसी बहनें इस संकलन में समाविष्ट होने से रह ही गईं जिन्होंने किन्हीं कारणों से अपने चित्र भेजने में असमर्थता प्रकट की। संकलन की 'एकरूपता' बनाये रखने की दृष्टि से मुझे ऐसा 'कठोर' निश्चय करना पड़ा। इसके लिए मैं अपने पाठकों के निकट क्षमा-प्रार्थी हूँ।

एक और बात यदि मैं अपने पाठकों के सामने स्पष्ट न रखूँ तो मैं अपने कर्तव्य से विमुख समझा जाऊँगा। मैंने इस पत्र-व्यवहार तथा यात्रा में भी प्रायशः' यह अनुभव किया कि हमारी अधिकांश बहनें इस जागरण के युग में भी अपने पारिवारिक वातावरण और पतियों अथवा अभिभावकों द्वारा अनावश्यक रूप से थोपे गए बन्धनों से भी विवश हैं। मैं इच्छा रहते हुए भी कुछ ऐसी बहनों की रचनाएं इस संकलन में समाविष्ट न कर सका जो वास्तव में मेरे उद्देश्य की पवित्रता के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हुए भी हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि के लिए संयोजित मेरे इस यज्ञ में अपने सहयोग की समिधाएं न दे सकीं। अपने पास आए हुए अनेक पत्रों में से कुछेक पत्रों के अंश मैं पाठकों की जानकारी के लिए दे देना अपना नैतिक कर्तव्य समझता हूँ। इससे जहाँ हमारे पाठक यह अनुमान लगा सकेंगे कि बीसवीं शताब्दी के इस 'प्रगति' युग और स्वतन्त्र भारत में ऐसी महिलाएं भी हैं जो अपने पतियों की इच्छा पूर्ति के लिए अपने साहित्यिक जीवन की आहुति देने तक को तत्पर हैं वहाँ वे यह भी जान सकेंगे कि पुरुषवर्ग के इस निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार से

साहित्य की कितनी क्षति हो रही है।

जब मेरे कई पत्र एक बहन के पास गए तो उन्होंने कदाचित् सहृदयतावश उत्तर देना ही अधिक उचित समझा। अपने पत्र में उन्होंने जो कुछ लिखा उसे मैं अक्षरशः यहाँ दे रहा हूँ। उन्होंने लिखा था—

"आपके कई पत्र मुझे मिले। उत्तर न देने की अपराधी अवश्य हूँ किन्तु मेरे पतिदेव को कविता और कल्पना-लोक पसन्द नहीं। इस कारण मैं इस क्षेत्र से बहुत पीछे छूट गई हूँ। अपनी रचनाएं मैंने नष्ट कर दी है और यह भूल गई हूँ कि कभी मैंने भी कुछ लिखा था। इस तरह से भावनाओं का गला घोंटकर मैंने अपने पति का मन तो जीत लिया किन्तु आत्म-समर्पण में वेदना बहुत हुई।

अपनी नम्र पुस्तक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर आपने मुझे याद किया बहन समझकर लिखा—इसके लिए मैं किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूं? केवल आभारी होने के अतिरिक्त मैं सिर्फ ही क्या सकती हूँ। अच्छा है आपकी यह व्यापकता किसी के सन्देह का कारण न बने। मेरे पति देवता-तुल्य हैं उनकी इच्छा के विरुद्ध मेरी इच्छा नहीं हो सकती। अतः मैं हाथ जोड़कर आपसे क्षमा माँगती हूँ। आवेश में मैं जो कुछ भी भला-बुरा लिख गई हूँ उसके लिए भी क्षमा प्रार्थी हूँ। आशा है आप मेरी इस उदासीनता को विवशता समझकर क्षमा करेंगे और कवयित्रियों की सूची से मेरा नाम काट देंगे। (वैसे तो मैं एक पाठिका भी नहीं हूँ।)"

ऐसे एक नहीं अनेक पत्र मेरे पास आए हैं, जिनका उल्लेख मैं अपनी पिछली पंक्तियों में कर चुका हूँ। ऐसी ही एक दूसरी बहन ने जब मेरे पत्रों का कोई उत्तर देने का कष्ट न उठाया तो मैंने उसी नगर के अपने एक साहित्यिक बन्धु को उनकी रचनाएँ, चित्र और परिचय आदि भिजवाने के सम्बन्ध में पत्र लिखा। मेरे पत्र के उत्तर में उन साहित्यिक मित्र ने जो पंक्तियाँ मुझे लिखीं उनसे भी हमारी आज की अधिकांश

बहनों की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है—

"मैंने   से कह दिया था पर मुझे लगता है कि उनके पति-देवता नहीं चाहते कि कविता के क्षेत्र में उनकी ख्याति बढ़े और कवयित्री के रूप में लोग उन्हें जानें। अतएव यदि वे सामग्री भेज दें तब ठीक है नहीं तो उनके बगैर ही आप अपना संग्रह प्रकाशित करें।"

कुछ ऐसी कवयित्रियाँ भी मिलीं जो प्रचार और विज्ञापन से दूर रहकर अपने अभीष्ट की साधना में तल्लीन हैं और वे शान्ति में ही अपनी साधना की सफलता समझती हैं। अपने एक पत्र में ऐसी ही एक बहन ने मुझे यह लिखा—

"मैंने आपसे स्वयं ही सविनय स्थिति साफ कर दी थी कि आप कृपया मेरी कविता की प्रतीक्षा न करें तथा अपना बहुमूल्य ग्रन्थ निश्चित समय पर प्रकाशित करें। आपने अपने बहुमूल्य संकलन के लिए मेरे गीतों को मांगकर जो आदर मुझे प्रदान किया उसके लिए आपको कोटिशः धन्यवाद।

गीत न भेज सकने के लिए क्षमा करिएगा। परमात्मा आपको अपने ध्येय में सफलता प्रदान करें। कभी-कभी खामोशी का भी कुछ कारण होता है। जिगर साहब की ये नज्में आपने देखी ही होंगी

मालूम ए साहिल तो है मगर
शायद यह मुझे मालूम नहीं
साहिल से भी लहरें उठती हैं
खामोश भी तूफाँ होते हैं

जिसने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही भगवान् में समर्पित करके अपने को ही भगवान् का गीत बना दिया है उसको यश या नाम की लिप्सा कहाँ रही? जैसी भगवान् की इच्छा है वही होता है तथा हो रहा है। भगवान् जो तात्कालिक कर्तव्य सामने

भारती सरला सेवक और विद्यावती वर्मा जैसी हिन्दी की चौदह प्रमुख स्वर्गीया कवयित्रियों की ऐसी जीवन-सामग्री चित्र और गीत समाविष्ट हैं, जो यथाविद् अन्यत्र दुर्लभ हैं। इस संकलन को देखकर पाठकों के सामने यह भी भली भाँति प्रकट हो जायगा कि हिन्दी अब किसी विशेष प्रदेश या जनपद की भाषा न रहकर समग्र भारत देश की अभिव्यक्ति का मूल स्रोत है। इस संकलन की कवयित्रियों में से अनेक ऐसी हैं जिनकी मातृभाषा हिन्दी न होकर गुजराती मराठी तैलुगु बंगला या पंजाबी है। सांस्कृतिक उन्नयन और वचारिक संगम की दृष्टि से भी यह संकलन हमारे लिए एक नई प्रेरणा देने वाला है। हिन्दी आज भारत के सभी जनपदों और प्रदेशों के परिवारों के पारस्परिक सम्मिलन का ऐसा साधन बन गई है कि अब उसे अपनी अभिव्यक्ति का सहज माध्यम समझने लगे हैं। इस प्रकार के संकलनों का सभी भाषाओं के पाठकों को हिन्दी की ओर आकृष्ट करने में बड़ा योग हो सकता है। वह दिन दूर नहीं जब सारे देश के लोग हिन्दी को बोलने समझने तथा अपने दैनिक कार्य व्यापार में व्यवहृत करने के साथ-साथ उसमें साहित्य रचना भी उसी उत्साह से करने लगेंगे जिस उत्साह से वे अपनी-अपनी मातृ भाषाओं में करते हैं।

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि लगभग १०-११ महीने के अथक परिश्रम और अविरत पत्र-व्यवहार के बाद मैं यह संकलन पूर्ण कर सका। इसे सर्वांगीण और सफल ग्रन्थ कहने की धृष्टता तो मैं नहीं कर सकता, किन्तु इतना तो मुझे सन्तोष है ही कि मेरा यह संकलन हिन्दी के आधुनिक प्रेम-काव्य की अभिवृद्धि के लिए किये गए हमारी बहनों के कृतित्व को सामने रखने की दिशा में एक अत्यन्त विनम्र किन्तु ठोस प्रयास है। मैं यह भी जानता हूँ कि देश के विभिन्न कोनों में बिखरी हुई बहुत-सी बहनों की रचनाओं का समावेश इसमें न हो सका होगा किन्तु इतना तो मैं अवश्य ही विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी कवियों के सम्बन्ध में जो भी संकेत या सुझाव दिये जायँगे उन्हें मैं विनीत मन

और उदार हृदय से स्वीकार करूँगा जिससे इस संकलन के आगामी संस्करणों को मैं और भी अधिक उपादेय एवं संग्रहणीय बना सकूँ।

इस कार्य में मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन-जिन व्यक्तियों का सहयोग साहाय्य मिला है उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। विशेष रूप से उन बहनों का आभारी हूँ जिनके सक्रिय सहयोग और सौजन्य मय आशीषों के बल पर मैं इस दुस्तर कार्य को सम्पन्न कर सका।

यदि हिन्दी-जगत् में मेरे इस प्रयास का तनिक-सा भी स्वागत किया तो मैं अपने को धन्य समझूँगा।

अजय निवास दिलशाद कालोनी
शाहदरा, दिल्ली–३२

क्षेमचन्द्र 'सुमन'

तालिका

जब तुम्हारी ओर देखा !

जब तुम्हारी ओर देखा, खिच गई मन में सुरेखा !

स्वप्न सब साकार पल में हो गए
गा उठे सब तार मन के, जो कभी थे सो गए
दम गए शबनम के मोती फूल-से
उठ गई नजरें अचानक भूल से
लाज की सब आ गई रश्मि सुरेखा !
जब तुम्हारी ओर देखा खिच गई मन में सुरेखा !

मुक्त सरिताएँ मिलन को चल पड़ीं
यामिनी भी चाँद से मिल हँस पड़ी
दीप सब निस्सार उस पल हो गए,
लाज के बन्धन तभी सब खो गए
मिट गई मध्यस्थ की मर्याद-रेखा
जब तुम्हारी ओर देखा, खिच गई मन म सुरेखा !

जन्म-स्थान — अलवर (राजस्थान)। जन्म तिथि — १ जून १९२५। शिक्षा — एम ए (हिन्दी), एल टी। प्रकाशित रचनाएँ — 'हिन्दी काव्य में यमुना-वर्णन' (आलोचना) 'यवनिका' 'सन् सत्तावन की



अर्चना

छाया में' (कविता संग्रह) 'अर्चना' (खण्डकाव्य)। विशेष — वास्तविक नाम मधुरप्रभा भार्गव। वर्तमान पता — हिन्दी-प्राध्यापिका गवर्नमेण्ट कालिज श्रीगंगानगर (राजस्थान)।

पलकों से ढक लूँ !

अञ्जलि जल झरता है
रोक सको—रोक लो !

चाहा था—तुमको प्रिय ! प्राणों में रख लूँ
अन्तर-पट में लपेट पलकों से ढक लूँ
तुम संग रह जीवन में—प्रेमामृत चख लूँ
काल-चक्र चलता है
रोक सको—रोक लो !

सूना है पथ सजन ! कुछ कहो कहो
बिछुड़ गए साथी सब, बाँह अब गहो
हो न मौन मुँह न फेर सको, रुक रहो
पल-पल दिन ढलता है
रोक सको—रोक लो !

हाय विवश अश्रु उत्स झरता ही जाता है
उर का यह हा-हा रव बढ़ता ही जाता है
प्राण विरह दुःख-दमित जलता ही जाता है
प्रति पल उर गलता है
रोक सको—रोक लो !

अञ्जलि-जल झरता है, रोक सको—रोक लो !

जन्म-स्थान—भवन (झेलम) पश्चिमी पाकिस्तान। जन्म तिथि— १ जून १९३७। विशेष—पाकिस्तान बनने से २ मास पूर्व ही इनके पिता का स्थानान्तरण मावरा हो गया था। तब ही से मावरा में थी।



अविनाश

अब इनका विवाह हो गया है। इनकी कुछ रचनाएँ 'प्राण की छाया में' नामक एक काव्य संकलन में प्रकाशित भी हुई हैं। वर्तमान पता— द्वारा ज्ञानी ड्राई क्लीनर्स सदामत बाजार पटियाला।

तुम मुसकुरा दो !

मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ
बीन मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

आज मैं रखने चली पदचिन्ह स्वर के
राह की रज से तुम्हारी
अनकही-सी बात जो अब तक रही थी
बोल म मैंने सँवारी

मैं तुम्हारी पीर लेकर गा रही हूँ
स्पर्श कर तुम तार मेरे झनझना दो !
मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ
बीन मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

है तुम्हारी ज्योति अम्बर से झरी जो
किन्तु उसमें छिप रही मैं
बोल गा-गाकर तुम्हारे बन गई 'तम'
क्यों स्वयं सब लिख रही मैं

मैं तुम्हारा चाँद लेकर जग रही हूँ
तुम जलाकर दीप मेरा झिलमिला दो !
मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ
बीन मेरी तुम बजाकर गुन गुना दो !

गीत का वह दूर पर मंदिर शिखर है
दीप की बेला हुई है

ज्योति चंचल ओट कब से जल रही पर—
अर्चना यह अनछुई है
मैं तुम्हारा ही भजन तो गा रही हूँ,
आरती स्वीकार कर तुम मुसकुरा दो !
मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ
बीन मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

जन्म-स्थान — झेलम पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान)। जन्म-तिथि—७ अप्रैल १९२१। शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर, बी ए। रचनाएँ—अभी तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ५० के लगभग



आशारानी व्होरा

जानूँ क्या मनुहार प्यार की !

जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

महा शून्य का मौन इशारा—
पाकर सौ-सौ बार निहारा
खुली खुली अँखियाँ पथराइ—
खुला नहीं अम्बर का द्वारा

चाँद न निकला, किरण न फूटी काले बादल कभी न छितरे !
जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

प्रिय की छवि नित नई अदाएँ
(निरख कल्पना जिन्हें सजाए)
अंकित करतीं सहज भाव से
सपनों की सुरमई घटाएँ

बिन बने पर धुँधले-धुँधले चेतन-पट पर कभी न निखरे !
जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

लुटी प्रतीक्षा की सब घड़ियाँ
टूट चुकीं सपनों की कड़ियाँ
प्रिय का हार पिरोते टूटा—
बिखर गईं मानस की लड़ियाँ

उस निष्ठुर से प्यार कहाँ का, जो अन्तर में कभी न उतरे !
जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

जन्म-स्थान— नागपुर। जन्म तिथि— १ सितम्बर, १९१२। शिक्षा—एम ए (अंग्रेजी) एल टी। प्रकाशित रचनाएँ—'अपने मान और हठ, वह कौन थी, विष-पान' (उपन्यास) 'संध्या के आँसू' (कहानी-संग्रह)। 'नया बसेरा' (एकांकी-संग्रह) प्रेस में—



इन्दिरा 'नूपुर'

'मंजिल और मीत' (उपन्यास) 'सुबह के भूले' (कहानी-संग्रह) 'एक साँझ। एक मीत' (कविता-संग्रह)। वर्तमान कार्य— अंग्रेजी प्राध्यापिका राजकीय महिला इण्टर कालिज प्रतापगढ़। स्थायी पता—चन्द्र लोक ६१ लाउदर रोड इलाहाबाद।

पथ का साथी कौन रहेगा ?

खुशी के सब फूल छीन लो पर ये काँटे मत बीनो तुम
काँटे ले लोगे तो बोलो पथ का साथी कौन रहेगा ?

चार दिनों की भरे चाँदनी
दीप मगर जलता रहता है
सुख के मीत न साथ निभाते
पर अभाव खलता रहता है
सुख की सारी घड़ियाँ ले लो पर दुख के क्षण मत छीनो तुम
दुख ले लोगे तो फिर बोलो, इन गीतों को कौन रचेगा ?

जब-जब भोर सुहानी आती
निशि का आँसू गल जाता है
साँझ साँवली फिर आए तो
दिन का सूरज ढल जाता है
तुम मेरी मुसकान छीन लो पर बदनाम पीर मत करना
पीड़ा ले लोगे तो बोलो दुख का चन्दन कौन बनेगा ?

दिनकर ताप असह देता है,
चन्दा शीतलता भर देता
आँख कभी रो लेती है तो
गीत वही आँसू हर लेता
मुझसे तुम बदनाम छीन लो पर पापों का शाप न लेना
पाप मगर तुम ले लोगे तो यह जीवन कैसे बीतेगा ?

जन्म-स्थान— नागपुर। जन्म तिथि— ३ सितम्बर, १९१२। शिक्षा—एम ए, (अंग्रेजी) एल टी। प्रकाशित रचनाएँ—'सपने मान और झूठ', 'वह कौन थी' 'विष-पान' (उपन्यास) 'संध्या के आँसू' (कहानी-संग्रह)। 'नया बसेरा' (एकांकी-संग्रह) प्रेस में—



इन्दिरा 'नूपुर'

'मंजिल और मौत' (उपन्यास) 'सुबह के भूले' (कहानी-संग्रह) 'एक साँझ। एक गीत' (कविता-संग्रह)। वर्तमान कार्य— अंग्रेजी प्राध्यापिका राजकीय महिला इण्टर कालिज प्रतापगढ़। स्थायी पता—चन्द्र लोक ६१ लाउदर रोड इलाहाबाद।

पथ का साथी कौन रहेगा ?

झोली के सब फूल छीन लो पर ये काँटे मत बीनो तुम
काँटे ले लोगे तो बोलो पथ का साथी कौन रहेगा ?

चार दिनों की भरी चाँदनी
दीप मगर जलता रहता है
सुख के मीत न साथ निभाते
पर अभाव पलता रहता है
सुख की सारी घड़ियाँ ले लो पर दुख के क्षण मत छीनो तुम
दुख ले लोगे तो फिर बोलो, इन गीतों को कौन रचेगा ?

जब-जब भोर सुहानी आती
निशि का आँसू गल जाता है
साँझ साँवली फिर आए तो
दिन का सूरज ढल जाता है
तुम मेरी मुसकान छीन लो पर बदनाम पीर मत लेना
पीड़ा ले लोगे तो बोलो दुख का बन्धन कौन बनेगा ?

दिनकर ताप असह देता है,
चन्दा शीतलता भर देता
आँख कभी रो देती है तो
गीत वही आँसू हर लेता
मुझसे तुम वरदान छीन लो पर शापों का कोष न लेना
शाप मगर तुम से लोगे तो यह जीवन कैसे बीतेगा ?

जन्म-स्थान — सीतापुर (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि — सन् १९१०। विशेष—आप का विवाह सन् १९२५ में श्री गयाप्रसादजी शास्त्री के साथ हुआ। श्री शास्त्रीजी के सम्पर्क में आकर आपने संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य का अध्ययन किया और आयुर्वेद की जानकारी प्राप्त की। आजकल हैदराबाद में अपने पति



इन्दिरादेवी शास्त्रिणी

देव के साथ 'नारी आरोग्य मन्दिर' नामक संस्था का संचालन कर रही हैं। हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। वर्तमान पता—द्वारा डॉ॰ गयाप्रसाद आयुर्वेद शास्त्री आन्ध्र प्रदेश आयुर्वेदिक अकादेमी मुरली धर बाग, हैदराबाद (आन्ध्र)।

ले चल उनकी ओर !

नाविक ! ले चल उनकी ओर !
छोटी-सी यह जीवन-नौका, कब पाएगी छोर ?

प्रेम-सिन्धु में विरह-भँवर है आँधी चिन्ता घोर
घन बन नयन बरसते पल-पल, कैसी विपति कठोर ?
नाविक ! ले चल उनकी ओर !

यश-अपयश, सुख-दुख सब भूली, जग का नाता तोर
मैं जाती हूँ उसी दशा को, जहाँ बसें चित चोर !
नाविक ! ले चल उनकी ओर !

तुम हँसते हो, मैं रोती हूँ, क्यों न तरणि दो मोर
मरकर ही फिर जीवन धन की लखूँ दया दृग-कोर
नाविक ! ले चल उनकी ओर !

छोटी-सी यह जीवन-नौका कब पाएगी छोर ?

जन्म-स्थान—नई दिल्ली। जन्म-तिथि— ५ अगस्त सन् १९१५। शिक्षा— हिन्दी साहित्य में एम ए प्रथम श्रेणी में (नई हिन्दी कविता के विशेष अध्ययन के साथ)। विशेष—कविता तथा उपन्यास के अतिरिक्त कभी-कभी कहानियाँ भी लिखती हैं। अंग्रेजी साहित्य पढ़ने में विशेष रुचि।



इन्दु जैन

चित्र-कला नृत्य और संगीत में भी पारंगत हैं। आकाशवाणी के साधारण और टेलीविजन के कार्यक्रमों में भाग लेती रहती हैं। 'ज्ञानोदय' के सम्पादक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन की सुपुत्री। वर्तमान पता—गुरु निवास १६ दरियागंज दिल्ली।

मेघ भरा आकाश सखी री !

मेघ भरा आकाश सखी री निबुआ है बौराया !
कण-कण के उर में मधु भरता, जीवन-सा सरसाया !

छन-छन पवन बही मतवाली
झिझक झुकी वह घूँघट वाली

गोरी के गालों पर सजनी कुमकुम है छितराया !
मेघ भरा आकाश सखी री निबुआ है बौराया !

डफली, ढोल मँजीर बाजे
कजरी के मीठे सुर साजे

छन छन छनन पायल घुंघरू सावन रास रचाया !
मेघ भरा आकाश सखी री निबुआ है बौराया !

पवन झमक बिखराए गोरी
नयननवा की काजर डोरी

सजा, नवा हिरनी सी मैना अद्भुत साज सजाया !
मेघ-भरा आकाश सखी री, निबुआ है बौराया !

मेंहदी गमक रही हाथों में
दूज चाँद ने तैर नयन में

अधर-कुई में पुलक बसाया राग रंग बरसाया !
मेघ भरा आकाश सखी री निबुआ है बौराया !
कण-कण के उर में मधु भरता, जीवन-सा सरसाया

जन्म तिथि—सन् १९२१ । प्रकाशित रचनाएँ— 'बाट बाटिन' (पूर्णियाँ की मैथिली लोक-भाषा के मातृत्व-गीत का संकलन एवं आलोचनात्मक परिचय)। अप्रकाशित रचनाएं 'इन्दु लेखा' (स्फुट गीत-संग्रह) 'कुन्ती का अभिशाप' (लघु



इन्दुमाला देवी

कथा-काव्य) देवयानी (लघु काव्य) 'पांचाली' (प्रबन्ध-काव्य) और 'पूर्वी मैथिली के लोकगीत' (निबन्ध-संग्रह)। विशेष—बिहार के प्रख्यात समीक्षक श्री प्रताप साहित्यालंकार की पत्नी। पहले साहित्य साधना कहानी से प्रारम्भ हुई। बाद में कविता की ओर अभिरुचि। वर्तमान स्थायी पता—ग्राम व पोस्ट—लक्ष्मीपुर भिवहरिया थाना बिहारीगंज पूर्णियाँ (बिहार)।

यह मिलन रात !

रजनीगन्धा मेरे द्वारे कहती पुकार
मादक सौरभ का झुम-झुम आता मुक्त द्वार
मल्हड़ कलियाँ सज लेतीं फूलों का सिंगार
मदिराम पाँव से आता है दक्षिणी वात !

यह मिलन रात !

मधुकर का घन सपना पलकों में उतराता
नीलम घन की परछाईं में आ मुसकाता
विद्युत्-चितवन से मुक्त छिपकर है सकुचाता
पुलकों की सिहरन से भर जाता मृदुल गात !

यह मिलन-रात !

अपरूप रूप-छवि का पकड़ बन हृदय-हार
मुखरित होता लालस पलकों में बार-बार
कर पान न पाती रूप-सुधा जी-भर निहार
साँसों-साँसों में खो जाती यह मिलन-रात !

यह मिलन रात !

जन्म-स्थान— मायनपुर (पाकिस्तान)। जन्म-तिथि— अक्तूबर १९३१। शिक्षा— विभाजनोपरान्त दिल्ली में बड़ी बहन ने ट्यूशन व नौकरी करके इन्हें मैट्रिक कराया। प्रथम श्रेणी प्राप्त की। तत्पश्चात् टंकण सीखकर १९४९ में सरकारी कार्यालय में नौकरी करके अपनी बहन



उर्मिला 'कुसुम'

सहित ५ प्राणियों के परिवार के पालन में व्यस्त। नौकरी करते हुए सन् १९५ में बी० ए० १९५४ में बी० एड० किया। सन् १९५७ में एम० ए०। १९४८ मे [illegible] में विवाह। वर्तमान पता— इण्डियन ब्यूरो ऑफ माइन्स पी २१ मिशन रो एक्सटेंशन कलकत्ता १३।

प्राण विकल हैं!

प्राण विकल हैं स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान!

मुझको अपने कमल-करों में
रक्खा जैसे गीत स्वरों में

अँगड़ाती ऊषा को आओ दें हम स्वागत-गान!
प्राण विकल हैं स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान!

विश्व निमज्जित है क्रीड़ा में
ढूँढ़ूँ मैं तुमको क्रीड़ा में

स्वप्न सत्य कर दो, जीवन का हो न जाय अवसान!
प्राण विकल हैं स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान!

जाऊँगी सागर के तल में
लाऊँगी मुक्ता-मणि पल में

रख दूँगी पथ बीच तुम्हारे स्वागत का सामान!
प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान!

चन्दा की बेंदी से सजकर
आशा की मेंहदी से रचकर

तुमसे मिलने को आकुल हूँ, करती हूँ आह्वान!
प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान!

जन्म-स्थान—धार (मध्य प्रदेश)। जन्म-तिथि—५ नवम्बर १९१८। शिक्षा—बी० ए० साहित्य रत्न। विशेष—साहित्य में रुचि जरा भी नहीं थी। डॉक्टर बनने का



उर्मिला निरखे

विचार था। प्रवाह साहित्य की ओर मुड़ गया और वह सपना अधूरा रह गया। पूरा नाम उर्मिला दिवाकर निरखे। वर्तमान पता—सहायक अध्यापिका गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी (मध्य प्रदेश)।

मैं प्रमदामी-सी लौट गई !

संघर्ष सदा जग में पाया
है अमर प्राण ! उसका साया
जिस डाल पै नीड़ बनाया था
वह डाल वहीं से टूट गई !
जो लहर हमारा सम्बल थी
वह सब-कुछ लेकर डूब गई !

सागर की कोई थाह नहीं
तिरने की कोई राह नहीं
इस पार नहीं, उस पार नहीं
यदि डूबूँ तो मँझधार नहीं !
जिसको थामे तिर जाना था
पतवार वहीं से टूट गई !

संगी-साथी इस पार रहे
जो बचे सभी मँझधार रहे
माँझी भी हिम्मत हार गया,
उस पार का साथी कोई नहीं !
जिसको लेकर कुछ आस बँधी,
उसकी भी हिम्मत टूट गई !

उस पार सूर्य की किरण पड़ी
मैं आँख बिछाए इधर खड़ी

जागृत भी सपनों में खोई,
पहले मुसकाई, फिर रोई !
जब चलकर समय स्वयं आया,
मैं अनजानी-सी लौट गई !

जन्म-स्थान— सौरनी (बुलन्दशहर) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि—१ फरवरी सन् १९२८। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)। विशेष—हिन्दी की प्राय सभी पत्र-पत्रिकाओं में

उर्मिला वार्ष्णेय



कविताएँ, कहानियाँ एकांकी एवं लेख आदि समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। वर्तमान पता—१ डी० ईस्टर्न कोर्ट के पीछे, नई दिल्ली १।

भुलाया कब तुम्हें उर से !

तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी !

भला तुम करो मेरी भुलाया कब तुम्हें उर से
जलन का छोर ही पकड़ा सदा ही प्यास के डर से
दुखी हो बीन को छोड़ा करुण-सी रागिनी भर के
तुम्हारे राग का अभिमान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके ही रहूँगी ही !

अमर पर मा न पाई जो नयन को छोड़कर चल दी
लहर मँझधार में पड़कर किनारे तोड़कर चल दी
शलभ को क्या जलाएगी तड़पकर लौ स्वयं जल दी
उसी अभिशाप का अवदान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी ही !

उमगकर फूल के मिस मा लता ने धूल को चूमा
कसकती याद कँटि-सी उधर हँस धूल भी झूमा
दुखों के धूल-उपवन में कहाँ सुख फूल-सा खिलता
उसी तव ज्ञान का अनुमान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी ही !

वियोगी की व्यथाओं में मिलन चुपचाप ही जलता
मुकर हो मधु के कण से मुकद वह आह में पलता
कसक बीते हुए युग की मिटाए से नहीं मिटती—
उन्हीं मादक क्षणों का ध्यान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी ही !

जन्म-स्थान— फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि— १ मार्च १९४०। विशेष— सबसे पहला गीत 'दीदी' में प्रकाशित हुआ था। 'ताल की छाया में' नामक काव्य-संकलन में कई रचनाएं प्रकाशित। 'दीदी' के भूतपूर्व सम्पादक



उर्मिला सिनहा

ठाकुर श्रीनाथसिंह से विशेष प्रोत्साहित प्रभावित। विवाह से पूर्व 'उर्मिला राठौर' नाम से लिखती थीं। वर्तमान पता—द्वारा डॉ० एच० एन सिनहा ४ १ सिविल लाइन्स विक्टोरिया रोड जबलपुर (मध्य प्रदेश)।

जन्म-स्थान— लाहौर। जन्म-तिथि— १४ मार्च सन् १९१७। विशेष—हिन्दी में कुछ रुबाइयाँ और गीत लिखे हैं। कहानियाँ और लेखादि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।



कमल पुरी

'उलझे तार' नाम से एक उपन्यास भी लिखा है जो शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान पता—द्वारा श्री पी० ए० पुरी हाउस नं० १८६२ गली नं० २१ रैगरपुरा करौल बाग नई दिल्ली ५।

ये नैन बरस जाते हैं !

जब याद तुम्हारी प्रिय मुझको है आती
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !

आते हैं जब सावन में पावन बादल
तब मन हो जाता है वियोग में पागल
जाता है जब मन सूनेपन में खोल
तब याद तुम्हारी आती है प्रिय प्रतिपल
रिमझिम वर्षा में कोयल है जब गाती
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !

जब बढ़ता विरही रातों का सूनापन
बादल रो रोकर हो जाते हैं घायल
बिजली भी चमक चमककर छिप जाती है
जैसे तुम लेकर मेरे मन का शतदल
जब चाँद बुलावा दे जाता प्रिय पथ पर
तब जाने क्यों ये प्राण तरस जाते हैं !

दिन भर का थका हुआ पंछी भी
आ जाता है नीड़, रोज सन्ध्या को
पर दूर कहीं, दुख के सागर में मेरा मन
मारा करता है गिन-गिन हरदम गोते
ज्यों ही सन्ध्या की लाली है छा जाती
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !

जन्म-स्थान—अजमेर (राजस्थान) । जन्म-तिथि—सन् १९२४ । विशेष—पुरानी विचार धारा का परिवार होने के कारण पंजाब की हिन्दी की परीक्षाएँ घरेलू अध्ययन से ही उत्तीर्ण की । १५ वर्ष की अवस्था में ही लिखने की प्रेरणा । सबसे



कमला मोखराम

पहली कविता १९५६ में 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित । अब तो दूसरे प्रमुख साप्ताहिक और मासिक पत्रों म भी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं । वर्तमान पता—बी० १०७ डबल स्टोरी रमेशनगर, नई दिल्ली ।

वेदना से छटपटाते प्राण !

वेदना से छटपटाते प्राण फिर क्यों जी रहे हैं ?

वे सुकोमल कल्पनाएँ
औ' लिये उद्गार अविरल,
फूल-सा कोमल हृदय
मुरझा गया खा चोट प्रतिपल

छलछलाते आँसुओं मिस जहर फिर क्यों पी रहे हैं ?
वेदना से छटपटाते प्राण, फिर क्यों जी रहे हैं ?

सिसकियाँ ये करुण जितनी
वेदनाएँ विषम उतनी,
भावनाएँ मृदुल जितनी
यातनाएँ दुसह उतनी

डूबकर गम की भँवर में तैरकर क्यों जी रहे हैं ?
वेदना से छटपटाते प्राण फिर क्यों जी रहे हैं ?

२

जन्म-स्थान—इलाहाबाद।
जन्म-तिथि—सन् १९०७।
विशेष—आपकी तीनों बहनें कवयित्रियाँ थीं। उनमें से आपसे बड़ी और बहनों में तीसरी स्व० श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान थीं जिन्होंने हिन्दी-कविता के क्षेत्र में पर्याप्त यश और ख्याति अर्जित की। स्व० सुभद्राकुमारी चौहान की भाँति



कमलाकुमारी

आपने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। इधर वर्षों से रुग्ण रहने के कारण आप आजकल साहित्यिक तथा सार्वजनिक कार्यों से उपरत हैं। आपके पति डॉ० एन० सिंह वाराणसी के शीर्षस्थ होम्योपैथी चिकित्सक हैं। प्रकाशित रचनाएँ—'जीवन की साधना' (१९१८)। स्थायी पता—द्वारा डॉ० एन० सिंह होम्योपैथ ५/१ चेतगंज वाराणसी।

मैं कब से यहाँ खड़ी हूँ ?

वह तरल हँसी प्रियतम की
अब मुझ याद आ जाती।
आँसू की धारा मानो
स्वगगा है बन जाती ॥

भरकर दृग-जल से प्याली
चरणों को धोने आई ।
मैं कब से यहाँ खड़ी हूँ
पर उन्हें देख क्या पाई ?

मैं विह्वल तड़पा करती
प्रियतम-पद के दर्शन को ।
यदि चरण-वारि पा जाती
करती पवित्र जीवन को ॥

जीवन सर्वस्व हमारे,
मैं राह देखती तब स ।
इस रूप-हीन दुखिया को
तुम छोड़ गए हो जब से ॥

जल चुकी विरह-पावक में
तब आज दौड़कर आए ।
अपने उज्ज्वल मस्तक पर,
क्या क्षार लगाने पाए ?



कमला चौधरी

जन्म-स्थान—लखनऊ। जन्म-तिथि—२२ फरवरी १९ ८। प्रकाशित रचनाएँ—'उन्माद' 'पिकनिक' 'यात्रा' 'बेलपत्र' (कहानी-संग्रह) 'खैयाम का जाम' (रुबाई-यात उमर खैयाम का सचित्र हिन्दी काव्य रूपान्तर) 'आपन मरन जगत की हाँसी (हास्य-व्यंग्य की विविध कविताएँ) 'चित्रों में मोरियाँ तथा गान्धी बन जाऊँ' (बालोपयोगी कविताएँ)। विशेष— उत्कृष्ट कहानी लेखिका कवयित्री तथा प्रख्यात सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्त्री। वर्तमान पता—विनीत कुञ्ज सीपी तालाब मेरठ (उत्तर प्रदेश)।

मेरी याद तुम्हें आ जाए !

याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !
रेख-खचित है राह तुम्हारी, कौन पार जा व्यथा सुनाए !

बँधे सभी हैं जटिल नियम में,
मन के साथी-सहचर सारे
सतत भ्रमण कर दूर-दूर तक
थके कल्पना के हरकारे

सीमा लाँघ न कोई पाया, जो सन्देश तुम्हें दे आए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

व्यस्त खोज में विविध रूप से
किन्तु विफल सब हैं बन्धन में,
चपल चित्त चिन्तन आतुर हो
तड़-तड़कर फँसता उलझन में

चतुर कपोत न बन पाया जो धाम ढूँढ पाती पहुँचाए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

भाव-पुआपा अमित सँजोए
मन तल्लीन हुआ अर्चन में
साँस-साँस हो रही समर्पण
हृदय-स्पन्दन-रत वन्दन में

प्राण-पहरुआ तन में तन्मय बाहर जाने से घबराए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन मेरी याद तुम्हें आ जाए !

स्वर, लय ताल भुलाती रसना,
स्वत्व गँवाती प्रीति रीत में,
व्यथा-कहानी कह जाती है
अस्फुट अनगढ़ सरस गीत में

सम्भव है संगीत मौन हो, तेरी वीणा से टकराए!
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें ना आए!

जन्म-स्थान— बीराना (सागर) मध्यप्रदेश। जन्म-तिथि—१२ अगस्त, १९२५। शिक्षा—एम ए। विशेष—'आधुनिक जैन कवि' नामक पुस्तक में उसकी सम्पादिका श्रीमती रमारानी जैन ने आपकी रचनाएँ भी संगृहीत की



कमला जैन 'जीजी'

है। आपके भाई श्री ज्ञान भारिल्ल आजकल राजस्थान साहित्य अकादेमी में हैं। सम्पादित—'नारी जीवन'। आप कभी-कभी कहानियाँ भी लिखती हैं। वर्तमान पता—मरुधर बालिका विद्यापीठ रानी (राजस्थान)।

स्वर, लय, ताल भुलाती रसना,
स्वत्व गँवाती प्रीति-रीत में
व्यथा-कहानी कह जाती है
अस्फुट धनमय सरल गीत में

सम्भव है संगीत मौन हो, तेरी वीणा से टकराए!
याद तुम्हारी प्रतिपल भूलूँ मेरी याद तुम्हें आ जाए!

जन्म-स्थान— बीना (सागर) मध्यप्रदेश। जन्म-तिथि—१५ अगस्त, १९२५। शिक्षा—एम ए। विशेष—'आधुनिक जैन कवि' नामक पुस्तक में उसकी सम्पादिका श्रीमती रमारानी जैन ने आपकी रचनाएँ भी संग्रहीत की



कमला जैन 'जीजी'

हैं। आपके भाई भी ज्ञान भारिल्ल आजकल राजस्थान साहित्य अकादेमी में हैं। सम्पादित—'नारी जीवन'। आप कभी-कभी कहानियाँ भी लिखती हैं। वर्तमान पता—नवभारत बालिका विद्यापीठ रानी (राजस्थान)।

एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

भाव भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !
मत कहो कुछ ये सलज पलकें उठाकर
एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

बस रहे उर के देश में प्रिय प्राण हो तुम
इस धड़कते-से हृदय का साज हो तुम
बज रही सरगम कि इसका स्वर तुम्हीं हो
गूँजती जो आज वह आवाज हो तुम

किन्तु मन का एक कोना है अँधेरा,
टोह है इसको नहीं संसार की !
भाव भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !

प्राण लहरों पर भटकती एक सिहरन
आज सागर के हृदय पर ज्वार-सा है
कौन जाने तीर कितनी दूर है प्रिय
इस तरी के तले तो मँझधार-सा है

आज सुन लेंगे भँवर की हम कहानी
और जानेंगे विवशता धार की !
भाव भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !

पीर से ही प्यार-सा कुछ है हमें तो
प्यार में कितनी जलन है झाँक लो तुम
आज इस उर में दबे अंगार मेरे,
बस निमिष-भर द्वार से ही झाँक लो तुम
आ न जाना पास इसकी दाह के प्रिय
है कसम तुमको हृदय के ज्वार की!
भाव-भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की!
मत कहो कुछ ये सजल पलकें उठाकर
एक चितवन ही बहुत है प्यार की!



जन्म-स्थान—लखनऊ। जन्म-तिथि— २५ दिसम्बर सन् १९१२। शिक्षा—महिला कालेज लखनऊ। विशेष—पारिवारिक वातावरण प्रारम्भ से ही साहित्यिक रहा। अपने मामा श्री सोहनलाल द्विवेदी से विशेष प्रभावित। गद्यगीत और

कमला दीक्षित

कहानियों की ओर विशेष अभिरुचि। रचनाएं 'अवन्तिका' 'दक्षिण भारती' 'भारती', 'मानव' 'रेखा' 'युवक' 'दीदी' 'युग छाया' 'मस्ताना जोगी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। स्थायी पता—कमल निवास धौरा (महाराष्ट्र)

सखि वे आए थे एक बार !

जब नयन मधु की माला से
चरणों पर हो जाते बलिहार
विकल वेदना मचल उमगती
सूखी स्मृतियाँ बन साकार
सच वे आए थे एक बार !

अन्तर-वीणा की झंकारें
बिखराती हैं मादक पराग
यों दूर क्षितिज के तट पर वह
है कौन छेड़ता मधुर राग
क्या वे आए थे एक बार ?

शबनम धो जाती मधु प्याल
रस-कलश लुटाती जब कलियाँ
झुक झूम-झूम बहता समीर
सींची जातीं मधु से गलियाँ
सखि तब आए थे एक बार !

अन्तरमन के वातायन से
है कौन झाँकता कर पसार
क्या प्रियतम आए हैं जिसने
नव खोल पलक के स्वप्न-द्वार
सखि वे आए थे एक बार !

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

बनी मिट्टी की मेरी देह
बना मिट्टी का मेरा गेह
भरा मिट्टी का ही सुस्नेह
दीप की ज्योति मृत्तिका-क्रीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

गगन का मुझमें है अवसान
जलन से ही उसकी पहचान
हँसे यह गगन न इसका भान
जलन की शाश्वत है यह रीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

जन्म स्थान—दिल्ली । जन्म तिथि—१ जनवरी सन् १९२८ । शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर, साहित्य रत्न साहित्यालंकार । प्रकाशित रचना—'शाप या वरदान' (उपन्यास) विशेष—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थायी समिति

कमलेश सक्सेना



की सदस्या । आपकी रचनाएं प्राय: 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । दो-तीन पुस्तकें मुद्रणार्थ तैयार हैं । वर्तमान पता—प्रिंसिपल कमलेश बालिका विद्यालय बाजार सीताराम दिल्ली ।

'नहीं निर्दयी तुम, नहीं बे रहम तुम !'

तुम्हारी हँसी और मेरे रुदन को
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

उधर झिलमिलाते हैं तारे गगन में,
इधर ओस के बिन्दु भू पर बरसते,
उधर केलि करते विहरते हैं बादल,
इधर बूँद को भी हैं चातक तरसते

तुम्हारा परस प्राप्त करने विकल-सी
हवा कुञ्ज में काँपती-डोलती है !
तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

तिमिर-आवरण को जरा चीरकर तुम,
कभी मन-हरन निज झलक तो दिखाओ
कुसुम की जो भीगी हुई पत्तियाँ हैं
उन्हें अपने हाथों से पोंछो, सजाओ

यह मोती के दाने तुम्हारे लिए हैं,
उषा जग की आँखें जिन्हें रोलती है।
तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को,
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

न जाने तुम्हारे श्रवण के पुटों तक
पहुँच पायगी कब दबी आह मेरी
न जाने कि किस दिन तुम्हारे नगर तक
मुझे प्राण ! पहुँचायगी राह मेरी

'नहीं निर्दयी तुम नहीं बे-रहम तुम',
क्षितिज पर से कोई किरण बोलती है !
तुम्हारी हँसी और मेरे रुदन को,
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

जन्म-स्थान—मुरादाबाद।
जन्म-तिथि—२५ मई १९२५।
शिक्षा—एम० ए० (इतिहास तथा हिन्दी)। प्रकाशित रचनाएँ 'जीवन-दीप' 'ऊष्मा' (गद्य काव्य-संकलन)। विशेष—गद्य-काव्य-सृजन की दिशा में विशेष ख्याति अर्जित की।



कान्ति त्रिपाठी

प्रकृति और जीवन के अनुभव ही रचनाओं के मुख्य प्रेरणा स्रोत। सृजन के क्षण ही आन्तरिक शान्ति के अग्रदूत। सन् १९४० से मुरादाबाद के गोकुलदास गर्ल्स कालिज में प्राध्यापिका। स्थायी पता—लोहागढ़ मुरादाबाद।

I

प्राण ! अनजाने निकटतर आ रहे हो !
मैं किसी के चरण की गति प्रगति हूँ आराधना की

डगमगा जाएँ न उनके चरण पथ में
कठिन पथ है गहन गुम्फित वीथिकाएँ
लड़खड़ा जाएँ न वह विश्वास-नद में
कठिन मद है कौन वह तृष्णा बुझाए
मैं किसी के प्राण की ऊष्मा कसक हूँ कामना की !
मैं किसी के चरण की गति प्रगति हूँ आराधना की !

भावना जो भी उसे पाथेय माना
कामना को सदय मानो ध्येय मानो
मधुर मानो वेदना रस पेय मानो
यह हलाहल अमृत है मानो न मानो
जो निशा के स्वप्न उनमें प्रगति हूँ उद्भावना की !
मैं किसी के चरण की गति प्रगति हूँ आराधना की !

चरण ध्वनि में स्मृति गुंजाते आ रहे हो
इस विदा को एक क्षमता पा रहे हो
एक क्षण हित सौ क्षणों को गा रहे हो
प्राण अनजाने निकटतर आ रहे हो
मैं चरण की भ्रम हूँ या सिद्धि अपलक साधना की !
मैं किसी के चरण की गति प्रगति हूँ आराधना की !

जन्म-स्थान — महीमपुर (उन्नाव) उत्तरप्रदेश। जन्म-तिथि—जनवरी १९३५। शिक्षा—आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए० 'हिन्दी उपन्यास और कथानक तत्व' विषय पर शोध-कार्य (अभी पूरा नहीं हुआ)। विशेष—हिन्दी के तरुण कहानीकार श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव की



कीर्ति चौधरी

सहधर्मिणी और प्रख्यात कवयित्री श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा की सुपुत्री। पूरा नाम कीर्तिबाला सिनहा। प्रकाशित रचनाएँ—'कविताएँ' 'तीसरा सप्तक' (अज्ञेय द्वारा सम्पादित संकलन में कविताएँ संकलित) वर्तमान पता—द्वारा श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव १ भगतसिंह रोड विले पार्ले पश्चिम बम्बई ५७।

मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !

चाहे जिस मन्दिर के पट को अब खोलो
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !
भटकी राहों में मुझे न रोना आता
मेरे चरणों को बढ़ते आना आता
चाहे जितने अस्पष्ट बोल अब बोलो
मैं अपने मन के भाव समझ ही लूंगी !
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !
मेरी दृढ़ता पर तुम्हें दया यदि आए
मेरे साहस को क्षमा तुम्हें भरमाए
चाहे जितने भी निष्ठुर तब तुम हो लो
मैं अपने ऊपर दया स्वयं कर लूंगी !
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !
तो वरदानों की छांह बनाए रहना
'साधना सफल हो सिद्धि मिले' यह कहना
चाहे जिस दिशि में अब नौका स डोलो
मैं अपने तट की खोज स्वयं कर लूंगी !
चाहे जिस मन्दिर के पट को अब खोलो
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !

जन्म-स्थान — दिल्ली । जन्म-तिथि — १२ अक्तूबर, १६१६ । शिक्षा—बी० ए० (ऑनर्स) बी० टी० । विशेष—दिल्ली और पंजाब-विश्वविद्यालय की बी० ए० और बी० टी० परीक्षाओं में महिलाओं में प्रथम आने के कारण स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। दो वर्ष तक लाहौर के हंसराज महिला ट्रेनिंग कालिज में



कुन्थकुमारी जैन

बी० टी० श्रेणी की अध्यापिका । दिल्ली के प्रसिद्ध शिक्षा-प्रेमी फतहचन्द जैन खजांची की पुत्री और 'ज्ञानोदय' तथा भारतीय ज्ञानपीठ के सम्पादक एवं नियामक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन की धर्मपत्नी । स्थायी पता—'साहू जैन निलय' ६ अमीपुर पार्क प्लेस कलकत्ता—२७ ।

मानस में कौन छिपा आता ?

जीवन में ज्वार उठा करके मानस में कौन छिपा आता
मेरे उन्माद भरे मन को मनमाने में बहला जाता

मानस में कौन छिपा आता ?

इस क्षण में सुख-दुख की झाँकी इस पल विराग, उस पल रागी
उठती-मिटती-सी पीड़ा का उलझा जाता सुलझा जाता

मानस में कौन छिपा आता ?

शशि रजत-सुधा बन रजनी में मादकता सहराता जो म
जिसका माधुर्य तेज बनकर, रवि-पथ पर बिखर सिमट जाता
मानस में कौन छिपा आता ?



कुमारी कुमुद

जन्म-स्थान—ग्राम मरवन (मुजफ्फरपुर) बिहार। जन्म-तिथि—सन् १९४१। शिक्षा—बी० ए० (ऑनर्स), इस वर्ष बिहार-विश्वविद्यालय से एम० ए० (अंग्रेजी) की परीक्षा दी है। विशेष—बिहार के हास्य-रस के सुप्रसिद्ध कवि श्री रामजीवन शर्मा 'जीवन' की सुपुत्री। प्रकाशित रचनाएँ—'फुलझड़ियाँ' नामक बालोपयोगी कविताओं का पहला संग्रह १९६० में प्रकाशित। 'कुमुदिनी' १९६० में प्रकाशित। कई कविता-संग्रह अप्रकाशित। सम्प्रति मुजफ्फरपुर के महन्त दर्शनदास महिला कालेज में अंग्रेजी की लेक्चरर हैं।

सिसकता प्यार ले लूँगी !

शरद् की पूर्णिमा से हास का वरदान तुम माँगो
अमा से आँसुओं का अर्घ्य मैं साभार ले लूँगी !

चमन में विकसते किसलय
मगर हैं दीखते सुन्दर,
विजन का मौन जर्जर ठूँठ
क्या छूता नहीं अन्तर ?

खिली कलियों मिले अलियों भरा मधुमास तुम माँगो
झड़े पत्तों भरा मैं बिखरता पतझार ले लूँगी !

नहीं यह बात, है मिलता
न मुझको स्नेह फूलों से
नहीं मालूम क्यों फिर भी—
उमड़ता प्यार शूलों से !

नये राकेश का सित मसृण रश्मि बितान तुम माँगो
प्रखर तिग्मांशु के मैं दहकते अंगार ले लूँगी !

उषा का मुसकराता मुख
तुम्हारा मुग्ध करता मन,
मुझे पर प्रेरणा देते
निशा के बरसते लोचन,

किसी नव नागता के प्रणयिनी अरमान तुम माँगो,
विरहिणी राधिका का मैं सिसकता प्यार ले लूँगी !
शरद् की पूर्णिमा से हास का वरदान तुम माँगो,
अमा से आँसुओं का अर्घ्य मैं साभार ले लूँगी !



कुमारी कुसुम

जन्म-स्थान—वाराणसी ।
जन्म तिथि — १० अगस्त १९४१ । शिक्षा—बी० ए । विशेष—कहानी और कविता लिखने में अधिकतम रुचि । लगभग दो दर्जन कहानियों और उतनी ही कविताओं का प्रकाशन । 'प्यासा पंछी' नामक एक उपन्यास प्रकाशन की प्रतीक्षा में है । वर्तमान पता—द्वारा श्री प्रकाशचन्द्र ३/४४ [illegible] वाराणसी ।

गायन बनकर आए हो !

मेरे मन के अम्बर में, श्यामल घन बनकर छाए हो !

मेरी सुधियों की पलकों पर
पीड़ा के आँसू बिखराना
मेरे उर की गहराई में
साँसों-सा यह आना-जाना

किसी सुहागिन के उन्मुक्त समर्पण से मन भाए हो !
मेरे मन के अम्बर में श्यामल घन बनकर छाए हो !

किसी थके पाँखी जीवन का
मुझको अब आभास हो रहा
दूर लग रहा जो सदय-स्थल
वही हमारे पास सो रहा,

किसी कण्ठ से मधुर प्रेम का गायन बनकर आए हो !
मेरे मन के अम्बर में श्यामल घन बनकर छाए हो !



जन्म-स्थान—चन्दौसी (मुरादाबाद), उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि—सन् १९३३। शिक्षा—सन् १९४९ में प्रयाग महिला विद्यापीठ से 'सरस्वती' १९५० में 'साहित्य-रत्न', १९५७ में एम० ए० (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय से। कार्य—१९५७ से जून १९६१ तक चन्दौसी के गर्ल्स कालिज में हिन्दी की प्राध्यापिका रहीं। अब दिल्ली के एक सरकारी स्कूल

कुमारी मधु

में हैं। रचनाएँ—'स्वप्ना' नामक काव्य-संकलन प्रेस में है और 'सागर-सीपी' नामक संग्रह की पांडुलिपि तैयार है। 'बाल गीतों' के संकलन भी प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं विशेष—१९६ से कवि-जीवन प्रारम्भ। कहानियाँ और लेख भी प्रायः लिखती हैं। वास्तविक नाम सरस्वती वार्ष्णेय। वर्तमान पता—ए-८/२७ प्रताप बाग दिल्ली ६।

प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

उस बन्धन में बँधना था कितना मधुर मुझे
जिसको तैयार किया तेरे उच्छ्वासों ने
उस कारा में घिर हृदय-कली मुस्काती थी
जिसका निर्माण किया तेरे विश्वासों ने

जब-जब भी मँझधार ने मुझे बुलाया था,
तब लहरों पर बिठला तट पर पहुँचाया क्यों ?
मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

मैं भटक रही अब तक मन की उन गलियों में
जिनमें स्वर गूँज रहा तेरी बाँसुरिया का
कैसे मैं स्वप्न भुला पाऊँगी वह निर्मम
जिनमें जादू खोया मेरी पायलिया का

जितनी नैराश्य तिमिर से डरकर भागी मैं,
उतना जीवन से करना प्यार सिखाया क्यों ?
मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

तूने तो ढूंढ लिया अपनी उस मुग्धा को
जिसके नयनों से छलका करती रस-गागर,
पर मेरा जीवन-गोकुल तो वीरान हुआ
कह दे कैसे इसमें उमड़ेगा सुख-सागर

तू सपनों की मथुरा में उत्सव नित्य मना
पर मेरे मन से अब तक निकल न पाया क्यों ?

मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों में
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

जन्म-स्थान— जीवछपुर, सहर्षा (बिहार)। जन्म-तिथि—२७ सितम्बर, १९४६। विशेष—बिहार की सर्व छोटी हुई कवयित्री। १९६१ से साहित्य रचना प्रारम्भ। साहित्य राजनीति एवं सामाजिक कार्यों के प्रति विशेष रुचि



कुमारी रामा

और उत्साह। कविताओं के अतिरिक्त कहानियाँ और निबन्ध भी लिखती हैं। प्रकाशित रचना—'सरयू कछारों की हरितों'। स्थायी पता—नागेश्वर कालोनी बाकर गंज पटना—४।

तुम्हारी याद सताती है !

तुम्हारी याद सताती है !
घाव की टीस बढ़ाती है !

आम पर बोल रही कोयल
दर्द कुछ घोल रही कोंपल
आँख से अपने तुम ओझल
कहीं छिप विरहन गाती है—
'तुम्हारी याद सताती है !'

कहीं पर बजती मादक बीन
नयन से निंदिया लेती छीन
तड़पती मन में कोमल मीन
तुम्हें छू पुरवा आती है !
घाव की टीस बढ़ाती है !

अभी मैं कहती हूँ कुछ बोल
मुझे दे चुम्बन कुछ अनमोल
प्राण से प्राण यहाँ दे मोल
उमरिया बीती जाती है !
घाव की टीस बढ़ाती है !
तुम्हारी याद सताती है !

जन्म-स्थान—बुलन्दशहर।
जन्म-तिथि—सन् १९१२।
शिक्षा—साहित्य-रत्न हिन्दी प्रभाकर, विदुषी एम ए।
विशेष—बचपन से ही पद्य में रुचि रही। एक बार पढ़ने से ही कविताएँ कण्ठस्थ हो जाती थी। प्राय: आकाश वाणी नई



कुसुमकुमारी सिनहा

दिल्ली और इधर उधर होने वाले कवि-सम्मेलनों में भाग लेती रहती हैं। आपके गीतों में जितनी पीड़ा होती है उससे कहीं अधिक आपकी वाणी में ओज होता है। स्थायी पता—२८ शिवपुरी रेलवे रोड बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश)।

सखि, उनको पाषाण न कहना!

इन चंचल नयनों से छिपकर वह मेरे मन में रहते हैं
मेरी सिसकी मेरी आहें सब चुपके-चुपके सहते हैं
तुम मेरे नयनों से छिपने को उनका अभिमान न कहना!
सखि उनको पाषाण न कहना!

वह मेरे नयनों की उच्छ्वास एक बूँद-से करुण सजल हैं
वह मेरे प्राणों के झिलमिल दीपक-से सस्नेह विकल हैं
तुम मेरे प्राणों में रहने वाले को निष्प्राण न कहना!
सखि उनको पाषाण न कहना!

वह मेरी आशा-से भोले, वह अभिलाषा-से अल्हड़ हैं
वह मेरी चाहों-से चंचल वह मेरी साधों-से दृढ़ हैं
तुम मेरे प्रति नीरवता को उनका निष्ठुर मान न कहना!
सखि उनको पाषाण न कहना!

वह मेरी पीड़ा-से मादक वह मेरी सुधि-से कोमल हैं
वह मेरे सपनों-से सुन्दर, वह मेरे मन-से निश्छल हैं
तुम मेरे संसृति के चिर पहचाने को अनजान न कहना!
सखि, उनको पाषाण न कहना!

जन्म स्थान— बदायूँ उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि— १५ जुलाई १९३९। विशेष— रचना-काल लगभग ६ वर्ष से। सबसे पहली कविता बदायूँ के एक कवि-सम्मेलन में



गिरीश रस्तोगी

पढ़ी। कविता के अतिरिक्त नृत्य अभिनय तथा कहानी आदि में रुचि। वर्तमान पता— द्वारा डॉ० वी० डी० रस्तोगी गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)।

तुमको पाकर सब-कुछ पाया !

तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है।
पाने में जितना कुछ खोया, फिर भी कोई आह नहीं है।

हँसने की वेला छोटी-सी
मधु बिखराती गाती आई
जब-जब तुमको पास न पाया
रह रहकर अँखियाँ भर आई
दिल में इतना दर्द छिपाया अब कोई भी चाह नहीं है!
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है।

टेढ़े-मेढ़े पथ पर चलकर
कितनी ही उलझन आई है
जब-जब काँटों पर पग पहुँचे
महक सुमन की भी आई है
फूलों के हो पथ से गुजरूँ ऐसी कोई चाह नहीं है!
तुमको पाकर सब-कुछ पाया अब खोने की चाह नहीं है।

नित नित की आशाएँ लेकर
कौन निराशा मन में बाँधूँ
जीवन और मरण दोनों हैं
किसको छोड़ूँ किसको साधूँ
जीने का अधिकार मिला है दुनिया की परवाह नहीं है!
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है!

जन्म-स्थान— सिउड़ी जिला वीरभूमि (बंगाल)। जन्म-तिथि—सन् १९३४। शिक्षा—पटना विश्वविद्यालय से हिन्दी में बी ए (ऑनर्स) तथा एम ए। आजकल उसी विश्वविद्यालय के हिन्दी



गीता श्रीवास्तव

'साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर शोध-कार्य में संलग्न। विशेष—सन् १९५२ से लिखना प्रारम्भ किया। वर्तमान पता—हिन्दी प्राध्यापिका गौतम बुद्ध महिला कालेज गया (बिहार)।

सुमन समझकर रौंद न देना !

पथ में शतदल बिछा रही हूँ, वांछित मन से अपने
सँभल-सँभल पग रखना प्रियतम बिखर न जाएँ सपने

ये सपने वंचित जीवन की, संचित निधियाँ मेरी
कंटकमय राहों में निर्मम, याद बिछी हैं तेरी

बहुतेरी स्वप्निल पाँखुरियाँ, व्यथा ओस से झलमल
प्रतिपल कुम्हलाने का भय है परिमलमय है शतदल

लोलुप आँखें, अलि की पाँखें गूँज रही थीं कब से
लूट न जाए मधु का संचय, मिले न उनके रव से

अमल कमल-दल अभिसिंचित हैं पावन आँसू-जल से
सुमन समझकर रौंद न देना, लगते अन्तस्तल से

जन्म स्थान — बरेली। जन्म-तिथि—२२ अक्तूबर १९२७। शिक्षा—इण्टर एम० टी सी० हिन्दी प्रभाकर, साहित्य रत्न, साहित्यालंकार। विशेष—हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार, लेखक और 'नव भारत टाइम्स' दैनिक के भूतपूर्व प्रधान सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की सुपुत्री। स्थायी पता—द्वारा श्री जौहरीमल गुप्ता, मन्दिर वाली गली गान्धी नगर, दिल्ली ३१।



चन्द्रकान्ता

क्या तेरा संसार यही है ?

कर्मों मे चकफेरी बाँधी
यहीं चतुर्दिक दुख की आँधी
जीवन देकर मिले उपेक्षा, क्या जग का व्यापार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

प्राणों में जलती हो ज्वाला
हँसती मुस्कानों की माला
नीर भरे भी नीरव प्यासे, क्या मानव का प्यार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

जहाँ अभाव स्वयं जीवन है
असफलताएँ ही यौवन है
दुख झेलें कैसे शिव, सुन्दर क्या संयम का सार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

विस्तृत नभ में तारक-माला
दिपती छिपती कर उजियाला
जन्म-मरण की मुक्ता छिपी में तव निर्दय व्यवहार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

झलक न सब को मिल पाती है
स्वप्न सृष्टि ही रच पाती है
नियति विषमता और विपर्यय क्या निर्मम उपहार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

जन्म-स्थान—झाँसी (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि— १४ जुलाई सन् १९३२। शिक्षा— बी० ए० हिन्दी प्रभाकर।



चन्द्रकान्ता वर्मा

विशेष रुचि — समाज-सेवा।
वर्तमान पता—४ डी। १६०
लाजपतनगर, नई दिल्ली १४।

पर करूँ क्या ?

मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?

यह कहाँ सम्भव कि बन्धन
लाज के मैं तोड़ डालूँ,
मैं विवश हूँ, किस तरह से
बात यह बाहर निकालूँ
दर्द हूँ दिल में दबाए
आँख में आँसू छिपाए—

इस गई मनरीति को मैं जानती हूँ पर करूँ क्या ?
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?

स्वप्न की दुनिया बसाई थी
कभी, है याद मुझको,
कल्पनाओं में सजाई थी
कभी, है याद मुझको,
पर वही तो स्वप्न मन को,
भूम से, अब छेदते हैं—

धड़कनों के गीत भी मैं जानती हूँ, पर करूँ क्या ?
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?

हम नदी के दो किनारों
की तरह से दूर हैं अब
मिलन की आशा हृदय में
पर बहुत मजबूर हैं अब

पढ़ सका है कौन अब तक
भाग्य में विधि ने लिखा जो—

मैं निठुर संसार की इस रीत को भी जानती हूँ पर करूँ क्या ?
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ पर करूँ क्या ?

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। जन्म-तिथि— २१ अप्रैल १९२४। विशेष—हिन्दी की कोकिल-कण्ठी कवयित्री और गायिका। विवाह के उपरान्त कविता की ओर प्रवृत्ति। संस्कृत के उद्भट विद्वान् और व्याख्याता स्व० चन्द्रशेखर शास्त्री के अनुज की धर्मपत्नी।



चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

इनके पति ने रीवा में 'सुधा-प्रेस' नाम से एक प्रेस और साहित्यिक पुस्तकों की दुकान खोल रखी है। प्रकाशित रचनाएं—'पराग' और 'वन्दना' (कविता-संग्रह)। अप्रकाशित रचनाएं—'नाव के गीत' (पद्य-गीतों का संग्रह)। वर्तमान पता— सुधा प्रेस रीवा (मध्य प्रदेश)।

प्रीत बन जाओ !

छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

जो कुछ सुलझी थी, आज उसे उलझा दो
जो कुछ उलझी थी, आज उसे सुलझा दो
मेरे आँसू के सावन आज सुखा दो
मैं चाह रही हूँ मुझको आज दुखा दो
नयनों के नहीं स्नेह-नीति बन जाओ !
छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

तुम स्नेह-स्वाति बन, जीवन भर तरसाओ
मेरे चित-चातक को न अधिक दरसाओ
अधरों की यदि मुसकान चुराओ जानें
इतना कर दो तो धन्य भाग मैं मानें
तुम वर्तमान के चिर अतीत बन जाओ !
छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

मेरे सम्मुख झूठा शृङ्गार नहीं है
स्वप्निल आशाओं का आधार नहीं है
मेरी वीणा के बिखरे तार सजा दो
इंगित से उसको क्षण भर आज बजा दो
गाकर तुम मेरे गीत मीत बन जाओ !
छूकर प्राणों की पीर प्रीत बन जाओ !

जन्म - स्थान — मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि— सन् १९३६ । शिक्षा—बी० ए इसके अतिरिक्त साहित्य रत्न साहित्यालंकार तथा सरस्वती। विशेष—लेखन-कार्य



चन्द्ररेखा शर्मा

सन् १९४८-४९ से ही प्रारम्भ किया। प्रकाशित रचना— 'बन्दिनी के गीत'। स्थायी पता—द्वारा डॉ० मनमोहन सिंह गांधीबाग, उपरा झाँसी (उत्तर प्रदेश)।

अरे, ये किसने बोने शूल ?

अरे ये किसने बोने शूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह किस पंछी की तान
कि जिसके स्वर-स्वर से से हास अचानक थिरक उठा जीवन ?
यह किन अधरों का गान
फूटते जिसके बेसुध रागों से, उल्लास-भरे निर्झर अनगिन ?
यह कौन अछूता सुमन
बीनने जिसका मदिर पराग, भाग आईं भ्रमरावलियाँ ?
प्राण, ये किसने बोने शूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह कैसी पागल प्यास
माँगना जिसने सीखा नहीं, न कुछ भी पाने का उल्लास ?
यह अजब अनोखी आस
खोजती खोकर खोने हेतु, निराशा में पलता विश्वास !
यह कैसी फूटी बहार,
सोमती आई जो मधुमास बन गई मन की रँगरलियाँ ?
आह ये किसने बोने शूल बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह किन प्राणों का खेल
कि जिसमें हार नहीं ना जीत, युगों का विरह क्षणों का मेल ?
यह मधु का अथक उँडेल,
कौन कह गया कान में, आज बिता दूँ करुण वेदना झेल ?'

यह कौन नया तूफ़ान,
कि जिसके भय से डर से सर्गी आज की मारी वल्लरियाँ ?
सखे, ये किसने बीने धूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह किस जीवन का तिमिर,
जो आया मेरे पास, स्नेह की ज्योति सहज ही घिर ?
ये किसके सपने बधिर,
नहीं जो सुनें पराई बात नित्य आते नयनों में तिर ?
यह कैसी ज्वाला उठी
जलाने आई है जो आज, प्यार की शत दीपावलियाँ ?
बता तो किसने बीने धूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

जन्म-स्थान—दिल्ली। जन्म-तिथि—१० मई सन् १९०९। शिक्षा—घर पर ही हुई। विशेष—आपके पिता डॉ सर मोतीसागर पंजाब-हाईकोर्ट के जस्टिस और दिल्ली-विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर थे। पति श्री ऋषभसेन जैन देहरादून



श्रीमती ऋषभसेन जैन

के भगवानदास बैंक के डायरेक्टर थे। आपके कहानी-संग्रह नीड़ की ईंट पर प मा हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की ओर से १९४१ में सेकसरिया पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। कुछ दिन तक आप दीदी की प्रधान सम्पादिका भी रही थी। वर्तमान पता—प्रीतम कमल देहरादून।

मैं न तुमको भूल पाती !

तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती !

तुम पुरुष हो है तुम्हें अधिकार यह मुझसे न बोलो
है मुझे आदेश—'सह लो पर कभी भी मुँह न खोलो
फूल बिखराती सदा मैं पर सदा ही भूल पाती !
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती !

तुम रचा सकते नया संसार नित अपना नवेला
भार पर बीते दिवस का है मुझे सहना अकेला
खोजती जब-जब सरसता मैं तभी प्रिय शूल पाती !
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती !

सब दिशाओं में निरन्तर रथ तुम्हारे चल रहे हैं
पर इधर अरमान मेरे अश्रु बनकर ढल रहे हैं,
चाहती हूँ पर न मन के हाथ गज को हूल जाती !
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती !

तुम सबल हो जब जिधर चाहा चलो प्रिय कौन रोके,
मैं हिलाऊँ उँगलियाँ भी तो मुझे यह विश्व टोके,
मैं अभागी बेल तुम-सी बाग में भी भूल पाती !
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती !

जन्म-स्थान— दिल्ली । जन्म-तिथि— २१ दिसम्बर, १९१५ । प्रकाशित रचनाएँ— 'सीकर' 'वेणुकी' 'मूकपिक' 'रेखाएँ' 'आभा' 'गोधूलि' 'अन्तरंगिणी' 'विपंची' तथा 'काकली' (कविता-संग्रह) 'उत्सर्ग' (कहानी-संग्रह) ।



तारा पाण्डे

विशेष—हिन्दी की अत्यन्त ख्याति-प्राप्त कवयित्री । संवत् १९९८ में अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला महिला सेकसरिया पुरस्कार' आपको 'आभा' नामक काव्य-संग्रह पर दिया गया । स्थायी पता— साकेत नैनीताल (उत्तर प्रदेश) ।

गीत गाऊँ मैं मधुर-सा !

आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

क्षितिज के उस पार से वह मुसकराता पास आया
मधुर मोहक रूप में उस मूर्ति ने मुझको लुभाया
कौन-सा सन्देश लेकर सजनि वह आया अवनि पर ?
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

घुल गई थी प्राण में अपमान की भीषण व्यथा
ले गया वह साथ अपने दुख भरी बीती कथा
आँख में आया सजनि वह आज भरे अश्रु बनकर !
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

कर गया अनुरोध मुझसे गीत गाऊँ मैं मधुर-सा
भूल जाऊँ जन्म का दुख मृत्यु को समझूँ अमरता
यह अमर उपदेश उसका सजनि कण-कण में गया भर !
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

स्वप्न से ही भर गया असि आज मेरा जीर्ण अंचल
वेदना की वह्नि में तप हो उठे हैं प्राण उज्ज्वल
दे गया वह सजनि मुझको जन्म का वरदान सुन्दर !
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

वे अचेतन क्यों समझते ?

वे अचेतन क्यों समझते, सजनि! मैं तो जागती-सी!

ठहर आ टुक देख मेरे जाग्रत उर की भावनाएँ
लहलहाती लालसाएँ कम-रस प्रिय कामनाएँ
श्रान्त हैं विश्रान्ति तजकर, कान्ति प्रतिपल माँगती-सी!
वे अचेतन क्यों समझते सजनि! मैं तो जागती-सी!

जल मरा सौंदर्य ही पर शलभ का अनुराग कैसा?
है प्रकाश प्रदीप जलता ही रहा वह त्याग कैसा?
आज मैं उस दीप पर अनुराग अपना वारती-सी!
वे अचेतन क्यों समझते, सजनि! मैं तो जागती-सी

वेदना क्या है? किसी सुख-स्वप्न का इतिहास होगा
आँसुओं में भी छिपा अलि! नियति का परिहास होगा
कौन उस परिहास पर निज चेतनाएँ त्यागती-सी
वे अचेतन क्यों समझते सजनि! म तो जागती-सी!

मैं वही हूँ विश्व में जिसने कभी पीड़ा न जानी
मिट गए युग-युग अमिट होती रही जिसकी कहानी
ज्योति जिसकी आज जग में जगमगाती जागती-सी
वे अचेतन क्यों समझते सजनि! मैं तो जागती-सी!

जन्म-स्थान—उदयपुर । जन्म-तिथि—१६ फरवरी १९१५ । शिक्षा—एम० ए० (नागपुर विश्वविद्यालय से सन् १९४८ में) । विवाह—१९४९ में सेठ रामकृष्ण डालमिया से । विशेष—हिन्दी-गद्य-काव्य के क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति अर्जित की । सबसे पहली गद्य रचना 'निराशा-प्रभा' 'श्याम भूमि' में प्रकाशित हुई । उसके बाद 'माधुरी' 'सुधा' और 'चाँद' में

दिनेशनन्दिनी डालमिया



रचनाएं प्रकाशित । पहले 'दिनेशनन्दिनी चोरड़िया' नाम से लिखती थी । प्रकाशित कृतियाँ—'शबनम' 'मौक्तिक माल', 'शारदीया' 'दुपहरिया के फूल' 'वंशी रव' 'उन्मन' 'स्पन्दन' 'मधुनीर' (गद्य काव्य) 'उत्ताली' 'मनुहार' 'सारंग', 'परिछाया' (कविता संग्रह) । स्थायी पता—डालमिया-निवास ६ तिलकमार्ग रोड नई दिल्ली ।

प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

नैनों में निद्रा लहराती
प्रणय-शिखा मद्धम फहराती
वाणी व्रीड़ा में छिप जाती, क्या न मेरे मुझसे बोलोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

सखियों ने शृङ्गार कराया
श्वेत पुष्प-पर्यंक सजाया
रजत थाल दीपक रखवाया प्रेम-सुधा पी कब डोलोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

बीत रहीं उजियाली रातें
मधुर मलय भोली-सी बातें
अभिलाषा उर्मिल सधातें निशिगन्धा पर कब सो लोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

अर्घ्य लिये मैं खड़ी हुई हूँ
स्वप्न अनागत भरी हुई हूँ
तव चिन्तन में पगी हुई हूँ, कब सुहाग कुंकुम घोलोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

जन्म-स्थान—सिकन्दराबाद (आन्ध्र-प्रदेश)। जन्म-तिथि—२८ अक्तूबर, सन् १९३० (दीपावली)। शिक्षा—इण्टरमीडिएट सरस्वती। निरन्तर अस्वस्थ रहने के कारण आगे शिक्षा न हो सकी। विशेष—पहले कुछ दिन विमला खण्डेलवाल नाम से भी लिखा। आपकी रचनाएँ 'विशाल भारत' 'नया समाज' 'अजन्ता' 'आलोचना' 'प्रतिभा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के रीडर डॉ० राजकिशोर पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'आन्ध्र के हिन्दी कवि' नामक ग्रन्थ में भी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुईं। कविता के अतिरिक्त नाटक-लेखन में भी रुचि है। वर्तमान पता—द्वारा प्रो० रामकुमार खण्डेलवाल उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।



दीप्ति खण्डेलवाल

बहुत तुम याद आते हो !

घटाएँ झूम जब घिरतीं बहुत तुम याद आते हो !
तृषातुर तप्त प्राणों को, अमिय से सींच जाते हो !

तुम्हारा रूप मेरे प्रिय !
इन्हीं श्यामल घटाओं-सा
सजल गरिमा लिये छवि की
तरल भीगी व्यथाओं-सा
व्यथाओं से हृदय को छू, नयन में झिलमिलाते हो !
घटाएँ झूम जब घिरतीं, बहुत तुम याद आते हो !

इन्हीं श्यामल घटाओं-सा
तुम्हारा नेह मेरे घन !
बरस घिर मिल कर जाता
नयन उर प्राण जग-जीवन
लुटाते स्रोत सौरभ के सुमन शत-शत खिलाते हो !
घटाएँ झूम जब घिरतीं बहुत तुम याद आते हो !

इन्हीं श्यामल घटाओं-से
कभी जब भूल जाते हो
भटक कर ही कदाचित् प्रिय,
कभी इस ओर आते हो
बड़े अनमोल हो निष्ठुर, प्रतीक्षा कटु कराते हो !
घटाएँ झूम जब घिरतीं बहुत तुम याद आते हो !

जन्म-स्थान—ग्राम कोट बारी बलिया, (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि—भाद्रपद शुक्ला संवत् १९८९ वि०। शिक्षा—बी० ए० (लखनऊ-विश्वविद्यालय से)। विशेष—आकाश वाणी के लखनऊ केन्द्र से सम्बद्ध। बाल्य-काल से ही लिखने का शौक रहा है। कहानियाँ कविताएँ और निबन्ध-लेखन में अधिक रुचि है। स्थायी पता—सी० १०७८ महानगर लखनऊ।

दुर्गावती सिंह



चंचल प्रेमी जान न पाया !

गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

कलिका-वधु किसलय-घूँघट में,
सपनों का संसार सजाती
तन-मन के काले छालों से
अपनी दुनिया उजड़ी पाती,
चंचल प्रेमी जान न पाया, प्यार-भरा फूलों का बन्धन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

सजल घनों ने शोर मचाकर,
कब चातक की प्यास बुझाई,
स्वाति-बिन्दु की अभिलाषा में,
सीपी की आँखें पथराईं,
घन गरजन में जान न पाया, लघु धरती का विह्वल कम्पन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

सन्ध्या पथ में कब आँचल से
अनगिन दीपक नित्य जलाती,
स्वागत करने निशा बावरी
उजले मुक्ता-माल सजाती
गगन खिलाड़ी जान न पाया रजनी-उर का मूक समर्पण !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

नित मिलने पर लहरों को भी,
कब मरघट की बात बताई,
छाती पर रहती नौका भी—
माप सकी है कब गहराई

मानी सागर देख न पाया, सरिता के अन्तस् का सावन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

चंचल मन ने पूछी है कब
दर्द भरे तन-मन की बातें
भोली आँखें जान सकीं कब,
हँसने वाले मन की घातें ,

हार-जीत में जान न पाया, मानव मानव-मन की धड़कन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

जन्म-स्थान — गेबा (मध्य
प्रदेश) । जन्म-तिथि — २४ मा
१६१७ । शिक्षा—आजकल साग
विश्वविद्यालय एम ए की छात्र
हैं । कार्य — इससे पूर्व हैदराबाद
के राजा बहादुर बंसीलाल



तारा मिश्र

बालिका विद्यालय में प्रधानाध्यापिका भी रह चुकी हैं। वर्तमान पता—द्वारा—श्री शिवराज एम ए, एल एल बी., लक्ष्मीपुरा (महिला विद्यालय के पास) सागर, (मध्य प्रदेश)।

कया रुक गई, आज भी चलते-चलते !

सभी स्वत्व मैंने समर्पित किया पर
मिला मुझको आभार भी डरते-डरते !

धरा की सृजन-वेदना जब सिमटकर
हरित बालियों में छिपी न छिपाए,
झुकी वह जमीं पर स्व-गरिमा को साधे
पकी और फूली नयन छलछलाए,

मिले पात सूखे स्व-कण सौंपने पर
न उट्ठी दुबारा सम्हलते-सँभलते !
सभी स्वत्व मैंने समर्पित किया पर,
मिला मुझको आभार भी डरते-डरते !

अँधेरा पिघलकर बना ओस-कण-सा
तृणों की पलक पर चढ़ाया गया वह
किरण की बढ़ी बाँह फिर थरथराई
पलक-आँजुरी में उठाया गया वह,

मुकोला सहारा गढ़ा एक क्षण को
कथा रुक गई आज भी चलते चलते !
सभी स्वत्व मैंने समर्पित किया पर,
मिला मुझको आभार भी चलते-चलते !

नलिनी श्याम—
जन्म-तिथि—१ अप्रैल १९३०। शिक्षा—बी ए सन् १९४८ में पटना से की। आगे पढ़ने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। विशेष—हिन्दी की ओर विशेष रुझान होने के कारण महिलाओं



नलिनी श्याम

की पत्रिका 'शरद' का प्रकाशन एवं सम्पादन किया। गृहस्थी की झंझटों में वह भी न सँभल सकी और बन्द हो गई। वर्तमान पता—द्वारा श्री एल एन सहाय मोटर यान-निरीक्षक चाईबासा (सिंहभूम) बिहार।

आज मेरे गान रोते !

चिर प्रतीक्षित प्रिय मिलन के, सिन्धु में आह्वान सोते !
आज मेरे गान रोते !

सान्ध्य-नभ की नीलिमा को
चिर मधुर-सा प्यास देकर
और रिमझिम बादलों से—
मधु का परिहास लेकर

क्षणिक मेरे जागरण में, स्वप्न के वरदान रोते !
आज मेरे गान रोते !

एक आकुल पीर में नव
बिसर विकसित प्यार के धन
खोजते हैं प्राण अहरह
खो गया जो गान उन्मन,

आज सूने नीड़ के पल, सुभग मेरे प्राण खोते !
आज मेरे गान रोते !

जन्म स्थान—दिल्ली। जन्म तिथि— १६ दिसम्बर १९२६। शिक्षा—इण्टर, प्रभाकर साहित्य रत्न। विशेष—लगभग १२ से कहानी कविता आदि लिख रही हैं। इसके अतिरिक्त प्रसाद परिषद् वाराणसी द्वारा आयोजित एक कहानी-



निर्मला माथुर

प्रतियोगिता में पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। आजकल मूर्ति तथा चित्रों के निर्माण में निरत हैं और आर्य गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल बावड़ी बाजार दिल्ली में कला-शिक्षिका भी हैं। स्थायी पता— आनन्द भैन ७/१० दरियागंज दिल्ली।

गीत किसी का, स्नेह किसी का !

मेरे होठों पर है बिखरा गीत किसी का स्नेह किसी का !

पथ जीवन का सूना-सूना
मधु हास से दूना-दूना
ओ सहचारी ! साथ न चल तू—
मेरा स्वप्न दुकूल मत छूना
मेरी आँखों में है छाई, चित्र किसी की मेह किसी का !
मेरे होठों पर है बिखरा गीत किसी का स्नेह किसी का !

मीरा मन मन्दाकिनी धवल
स्मृति का यह उज्ज्वल सिता कमल
ओ सहचारी ! मत पुकार तू—
सुधा स्वल्प है, शेष गरल
मेरी पुलकों में है कम्पित प्राण किसी के देह किसी का !
मेरे होठों पर है बिखरा गीत किसी का, स्नेह किसी का !

मिलन चाहता कंकण का सुर
पवन माँगती उन्मन नूपुर
ओ सहचारी ! नयन बिछा मत
विरह अमर है बन्धन भंगुर
मेरे नयनों में चित्रित है, नीड़ किसी का गेह किसी का !
मेरे होठों पर बिखरा है, गीत किसी का, स्नेह किसी का ।



जन्म-स्थान— नाथनगर (भागलपुर) बिहार । जन्म तिथि— जनवरी १९२६ । शिक्षा—घर पर ही हुई । अध्ययन स्वाध्याय और एकान्तवास विरासत में मिले । विशेष — वेदना की अमर गायिका बिहार की अन्यतम कवयित्री । पत्रों में कविताओं का प्रकाशन विवाह से कई वर्ष पूर्व ही हो चुका था । वैसे पहले कहानियाँ ही लिखीं । चित्र, कार्टून,

प्रकाशवती

मूर्ति और मूर्ति-शिल्प में भी पर्याप्त गति । रचनाएँ— कविता और कहानियों के अतिरिक्त नाटक और उपन्यास भी लिखे हैं । अभी अभी 'चार पत्ते' नाम से आपका एक उपन्यास प्रकाशित हुआ है । पिछले तीन वर्ष से बिहार-हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की ग्रन्थागारिका । वर्तमान पता—सम्मेलन भवन कदमकुआँ पटना ३ ।

विचलित होता हृदय !

विचलित होता हृदय उमड़ते इन आँखों के नीर से
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंजीर से ?

जो हो चुका अतीत भूल जो गिरा गाँठ से याद के
रहे किसी विधि बीत धूल-से दिन अनकहे विषाद के
जाने अनजाने आ टकरा मम प्राणों की पीर से
इस सन्ध्या में क्यों कर डाला दोनों पुलिन अधीर-से ?
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंजीर से ?

कितनी साधें बँधी गए, जब गए दृष्टि से दूर थे
फिरे भूलकर द्वार न मेरे, ऐसे क्या मजबूर थे
किस गरिमा की चाह—'मर्म बींधा जाए शहतीर से ?'
रहे देखते भी' मैं चुन दी गई लौह प्राचीर से !
विचलित होता हृदय उमड़ते इन आँखों के नीर से !

इस सूने मन्दिर में प्रतिध्वनि बन टकराते प्राण हैं
चरण-चिह्न-सी शेष नाम-धुन, लौट चुके भगवान हैं
रो रो जिसे बुलाती निष्फल गीतों के मंजीर से
मूर्ति न मिली कभी बहलाती रही एक तसवीर से
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंजीर से ?

हरदम आता ध्यान तुम्हारा शायद यह भी पाप है
मर जाने की मुक्ति नहीं है जीने का अनुताप है

जाने किस बैरी का माज फसा जीवन पर शाप है
मगन मय, तट में प्यासी साँसें डसतीं चुपचाप हैं
मैं पछाड़ खाती तरंग सी तुम सागर गम्भीर-से
क्या न कभी मथता है उर, मरुथा की व्यथा अधीर से ?
विचलित होता हृदय, उमड़ते इन आँखों के नीर से
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंजीर से ?

जन्म स्थान—नजीबाबाद (बिजनौर) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि—२८ फरवरी १९३९। शिक्षा—सन् १९५९ में बी०ए० (आगरा विश्वविद्यालय से)। १९६० में सोशल वर्क में लखनऊ-विश्वविद्यालय से एम ए। विशेष—प्रयाग महिला विद्यापीठ में बी०ए० में पढ़ते हुए ये



प्रतिमा गर्ग

श्रीमती महादेवी वर्मा के विशेष सम्पर्क में आईं। उनके प्रोत्साहन से ही लिखने में अग्रसर हुईं। आजकल 'धर्मयुग' 'हिन्दुस्तान', 'नवभारतटाइम्स' तथा 'त्रिपथगा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। वर्तमान पता—द्वारा—श्री आर० पी० गर्ग की आई ८२५ विनयनगर, नई दिल्ली।

तुम्हारी याद के बन्धन !

न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

उमड़ती आँधियाँ नभ में,
धरा का मौन अकुलाया
कोई बरसात कहता है,
किसी का दिल पिघल आया,
किसी की प्यास बन जाती किसी के नयन की शबनम !
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

धरा की माँग का काजल,
क्षितिज के भाल की लाली,
विहँसती चाह के नूपुर
महकते अधर की प्याली,
रजत किरणें सजा जातीं, निशा के हाथ के कंगन !
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

अनोखी राह की मंजिल
न कोई साथ है साथी
सजाऊँ कब तलक सपने
जलाऊँ दीप की बाती
अमा से भी अँधेरी आज, क्यों चन्दा तेरी पूनम ?
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

सजन तुम दूर हो इतने,
न जाने स्वप्न बसते हैं
निराली रीत दुनिया की
जहाँ अरमान बसते हैं
मधुरी रागिनी में बज उठी क्यों प्यार की सरगम ?
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। जन्म-तिथि—१ जनवरी सन् १९२८। प्रकाशित रचनाएँ—'अभिव्यक्ति' (कविता-संग्रह)। विशेष—बेलवेडियर प्रेस प्रयाग के अधिपति श्री मरू शिरोमणि की सुपुत्री। संगीत नृत्य और चित्रकला में रुचि। सन् १९४१ में क्रास्थवेट गर्ल्स कालिज के स्वर्ण जयन्ती समारोह में अध्यक्ष



प्रेमकुमारी गुप्ता

पद पर श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में हुए कवि-सम्मेलन में इन्होंने कविता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। अपने पति श्री प्रकाशचन्द्र गुप्ता (सहारनपुर) के साथ १९६० में लगभग १ वर्ष तक पश्चिम के लगभग २२ देशों की यात्रा। स्थायी पता—मंजुसिके मार्केट सहारनपुर।

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। जन्म-तिथि—११ जुलाई सन् १९३८। शिक्षा—१९५९ में बी. ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। एल. टी. इलाहाबाद से ही। विशेष—आजकल सिटी स्कूल इलाहाबाद में प्रधानाध्यापिका। नई कविता की कवयित्रियों में से एक।



प्रेमलता वर्मा

'नयी कविता' 'लहर' 'दक्षिण भारती' 'कल्पना' आदि पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन होता रहता है। डायरी कहानियाँ आदि भी लिखती हैं। 'बस आनन्द एक चयन' नामक एक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। स्थायी पता—१४० मोहतशिमगंज इलाहाबाद।

आज कम्पित पात-सा मन !

आ गई है फिर वही बरसात !
फड़फड़ाते हंस-युगलों की शिरीषों में
फिर वही केसर-मिली बरसात !
मद-माते दृश्य ! मदमाते युगों की बात !

भरा था कैसा नशा—
है आज तक जिसका खुमार !
हंस रही थी हृदय में कैसी रँगीली रात !
मूँदते ही नयन कैसे खिल उठे हैं
दामिनी-से याद के जलजात !
क्या—आ गई फिर से वही बरसात !

भीगते ही रह गए थे मेह की जल धार में हम
उबरते ही रह गए थे मोह पारावार में हम
बह रही हैं आज की अधखुली पंखुरियाँ न जाने क्या
बिसुध-सी आनन्द-पारावार में !

प्रेम-मुग्धा आज मैं हूम घुम रहे थे संग-संग
हृदय में है वही अब अनंग-अनबींधी तरंग
चमचमाती से भरे बस स्तब्ध हम, तुम,
मगन प्रीति फुहार में

दो दिलों को न दनी-सी घुल गई है पूरा मावस में !
आ गई फिर मेह भीनी रात !
आज कम्पित पात-सा मन, खेलता है फिर वही बरसात !

जन्म स्थान—वजीराबाद (पंजाब)। जन्म-तिथि—१० अक्तूबर सन् १९१०। निधन तिथि—११ फरवरी सन् १९३१। विशेष—हिन्दी के प्रख्यात कहानी-लेखक श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार (सम्पादक 'आज कल') की पहली पत्नी। इनकी बड़ी बहन। श्रीमती सत्यवती



स्व० पुरुषार्थवती

मल्लिक भी हिन्दी की प्रख्यात कहानी-लेखिका हैं। इतनी थोड़ी-सी आयु में आपने बड़ी ही उच्चकोटि की कविताएँ लिखी थीं। आपकी रचनाओं का प्रकाशन 'अन्तर्वेदना' नाम से हो चुका है।

इनमें कितने भाव भरे हैं ?

छिप-छिपकर इतने तारों में जो क्षिति पर उतरे हैं !
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

मुग्ध, माल में गुँथे जा चुके
डूब चुके या पार पा चुके
एक सूत्र में ग्रन्थित हो, फिर भी बिखरे बिखरे हैं !
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

छमक-छमक बातें करते हैं
ठुमक-ठुमक कर चित हरते हैं
सरस, सुशीतल हैं पर, उच्छ्वासानल-ताप-भरे हैं !
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

ढुलक कपोलों पर जब आते
फूट-फूट घन दिल दहलाते
बिरला कोई बूझे—कैसे खोटे और खरे हैं ?
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

जन्म-स्थान—गोरखपुर जन्म तिथि— १ जनवरी १९४२। शिक्षा—प्रारम्भिक शिक्षा गोरखपुर में बाद में हाई स्कूल देवरियासे १९६१ मे इण्टर। अध्यापन करते हुए



पुष्पलता श्रीवास्तव 'नीलिमा'

ही अध्ययन करके इसकी शिक्षा प्राप्त की। वर्तमान पता—द्वारा डॉ० मुक्तेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव (होम्योपैथ) मनोज पुर, देवरिया (उत्तर प्रदेश)।

करुणा से भरी मेरी कहानी !

मैं करुणतम, और करुणा से भरी मेरी कहानी !

जन्म पाया है कली बन
बढ़ चली सुन्दर भली बन
झूलती पल्लव-हिंडोले, सुख उर में भर रवानी !

सुरभि ने मन को लुभाया
हृदय में उसको बसाया
सो रही थी मस्त बनकर, झूमता था पवन मानी !

सौंप डाला लाज-सम्बल
खिल गई मैं पूर्ण उस पल
हँस रही थी मग्न होकर, विश्व पर थी विजय पानी !

गुनगुनाता भ्रमर आया
प्रेम का गुण-गान गाया
मैं सलोनी प्रणय के इस गीत को सीखी न जानी !

सो रही हूँ आज उन्मन
मिट चुका यह मधुर जीवन
कौन देखे यह सुमन, जिसमें न अब बाकी जवानी !
मैं करुणतम और करुणा से भरी मेरी कहानी !

जन्म-स्थान—दिल्ली। जन्म-तिथि—७ जनवरी सन् १९३६। शिक्षा—एम० ए० बी० एड० संगीत प्रभाकर। विशेष—हिन्दी की नई पीढ़ी के प्रमुख गीतकार श्री रमानाथ अवस्थी की धर्मपत्नी। सन् १९५१ से कविता करती



पुष्पा अवस्थी

आरम्भ की। संगीत में अधिक रुचि। आकाशवाणी के नई दिल्ली और प्रयाग-केन्द्रों पर आपके संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। वर्तमान पता—द्वारा श्री रमानाथ अवस्थी ११७ एलनगंज इलाहाबाद।



पुष्पा पुरी

जन्म-स्थान—गाँव भुमान पुरसाउपुर (पंजाब)। जन्म-तिथि—८ मार्च सन् १९३८। शिक्षा—दिल्ली-बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा में प्रथम आने पर ४ वर्ष तक छात्रवृत्ति प्राप्त करके बी० ए० (आनर्स) किया। दिल्ली विश्वविद्यालय से एम० ए० भी प्रथम श्रेणी में १९६० में किया। विशेष—आजकल 'जानकी देवी कालिज फार वमेन नई दिल्ली' में प्राध्यापिका। अनेक कविता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में पुरस्कार-विजयिनी। स्थायी पता—ए ३८ ई० टाइप ईस्ट विनय नगर, नई दिल्ली।

मुझे तुम मत ठुकराओ !

कितनी दूर अभी आई हूँ संग तुम्हारे
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

अथक उठे ये विवश प्राण भी तुम्हें देखकर
चंचल लहरों से मन की गंगा लहराई,
उमड़ पड़े सोए भावों के नीरव निर्झर—
नई धड़कनों ने अपनी भाषा समझाई

गीत प्यार के लाए मुझको पास तुम्हारे
गाने से पहले उनको तुम मत मिटवाओ !
कितनी दूर अभी आई हूँ संग तुम्हारे
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

फूलों में पलकर काँटों से परिचित हूँ मैं
सुख का राज-मुकुट दुख के सिर पर धर दूँगी
खेली हूँ मैं हर्ष-शोक की मँझधारों में—
आँसू की सीपी में मुसकानें भर दूँगी

पहचानी है मैंने पीड़ा की गहराई
सुख की माया में मुझको तुम मत उलझाओ !
कितनी दूर अभी आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

संघर्षों के बोझ थके तुम इस जीवन से
स्वर्ग धरा पर तुमने अभी नहीं देखा है

मुरझाए पतझर ही आए द्वार तुम्हारे—
तुमने यौवन का मधुमास नहीं देखा है,
एकाकी जीवन के सुन्दर स्वप्न सजाकर
झूठी निद्रा से आँखों को मत भरमाओ !
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

मन के उजले दर्पण में देखो तो प्रियतम
केवल तन का आकर्षण ही प्यार नहीं है
फूलों की मुस्कान हृदय को भा जाती है—
मुरझाना उनका जीवन की हार नहीं है,
जीवन की लम्बी राहों की नीरवता में
इन गीतों के सरस स्वरों से मत घबराओ !
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

सोने का संसार दिखाया है तुमने तो
अब अपनी पीड़ा की नगरी भी दिखला दो
मैं उसमें मुस्कानों के मोती भर दूँगी
मुझको अपनी आँसू की भाषा सिखला दो,
मैं शृङ्गार करूँगी पाकर दर्द तुम्हारा,
सुख का साथी समझ मुझे तुम मत ठुकराओ !
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

जन्म स्थान — मेरठ।
जन्म-तिथि — सन् १९२५।
विशेष — मेरठ की यश-प्राप्त कवयित्री। एक हाई स्कूल में अध्यापिका भी रही थीं। साहित्य-साधना के अतिरिक्त



स्व० पुष्पा भारती

अनेक सामाजिक कार्यों में भी योगदान दिया। कुछ कविताएँ और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में भी छपी थीं। प्रकाशित रचनाएँ — 'इनकलाब' नामक कहानी-संग्रह। १९ सितम्बर १६५६ को स्वर्गवास।

यह बात न मेरे मुख से कहलाओ !

यह बात न मेरे मुख से कहलाओ
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

कहने को तो सब-कुछ कह जाते हैं,
हो सम्भव चाहे शक्ति न करने की
सबके वश की तो बात नहीं होती,
तम की छाती पर दीपक धरने की ।
उस धारा में मत मुझको बहलाओ,
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !
यह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

सीमाएँ तो हम सबकी होती हैं,
विस्तार हुआ करता है कम-ज्यादा,
उत्ताल तरंगों का स्वामी सागर,
उस पर भी शासन करती मर्यादा,
उन सीमाओं तक मुझे न पहुँचाओ,
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !
यह बात न मेरे मुख से कहलाओ
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

अम्बर में ऐसे तारे भी तो हैं
जो कभी सबेरा देख नहीं पाते,

भू पर ऐसे दुखियारे भी तो हैं,
जो सुख बसेरा तक नहीं पाते, —
आघात न कोई ऐसा कर जाना,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ!
यह बात न मेरे मुख से कहलाओ
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ!

वह बात न मेरे मुख से कहलाओ !

यह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

कहने को तो सब-कुछ कह जाते हैं,
हो सम्भव चाहे शक्ति न करने की
सबके बस की तो बात नहीं होती,
तम की छाती पर दीपक धरने की ;
उस धारा में मत मुझको बहलाओ,
मैं बहना चाहूँ, लेकिन बह न सकूँ !
यह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

सीमाएँ तो हम सबकी होती हैं,
विस्तार हुआ करता है कम-ज्यादा,
उत्ताल तरंगों का स्वामी सागर,
उस पर भी शासन करती मर्यादा,
उन सीमाओं तक मुझे न पहुँचाओ
मैं रहना चाहूँ, लेकिन रह न सकूँ !
यह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

अम्बर में ऐसे तारे भी तो हैं
जो कभी सबेरा देख नहीं पाते,

भू पर ऐसे दुखियारे भी तो हैं,
जो सुखद बसेरा भी नहीं पाते, –

आघात न कोई ऐसा कर जाओ
मैं सहना चाहूँ लेकिन सह न सकूँ।
यह बात न मेरे मुख से कहलाओ
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ।



पुष्पा सक्सेना

जन्म स्थान—कानपुर । जन्म तिथि—१८ अक्तूबर १९३५ (दीपावली) । शिक्षा—आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए० साहित्यरत्न । विशेष—छोटी अवस्था से ही साहित्य तथा काव्य में रुचि है । पिछले ७ वर्षों से आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र तथा अन्य स्थानों पर आयोजित सम्मेलनों में भाग लेती रही हैं । एक कविता संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है । स्थायी पता—११२/१९२ स्वरूपनगर कानपुर ।

मैं स्वयं में खो गई !

गीत प्राणों में जगे पर भावना में बह गए !

एक थी मन की कसक जो साधनाओं में ढली
कल्पनाओं में पली
पन्थ था मुझको अपरिचित मैं नहीं अब तक चली
भ्रम की सँकरी गली
बढ़ गए पग किन्तु सहसा
और मन भी बढ़ गया
लोक-लीकों के सभी भ्रम एक पल में ढह गए !
गीत प्राणों में जगे पर भावना में बह गए !

वह मधुर बेला प्रतीक्षा की मधुर मनुहार थी
मैं चकित साभार थी,
कह नहीं सकती हृदय की जीत थी या हार थी,
वेदना सुकुमार थी,
मौन तो वाणी रही, पर
भेद मन का खुल गया
जो न कहना चाहती थी, वे नयन सब कह गए !
गीत प्राणों में जगे पर भावना में बह गए !

कल्पना जिसकी संजोई सामने ही आ गई
वह घड़ी भी आ गई
छवि अनोखी थी हृदय पर छा गई मन भा गई,
देखते शरमा गई
कर सकी मनुहार भी कब
मैं स्वयं में खो गई,
और अब तो प्राण मेरे चुप ठगे-से रह गए!
गीत प्राणों में जगे पर भावना में बह गए!

जन्म-स्थान—होडल (दिल्ली)। जन्म तिथि—सन् १९०६। शिक्षा—घर पर मिडिल तक। विवाह के पश्चात् स्वयं अध्ययन करके प्रथमा हिन्दी प्रभाकर, साहित्यरत्न आदि की परीक्षाएँ दीं। विशेष—राजधानी की सबसे पुरानी हिन्दी-अध्यापिका और कवयित्री। 'साहित्यरत्न' परीक्षा देने के समय प्रयाग में जाकर अध्ययन



भगवतीदेवी 'विह्वला'

किया। उन्हीं दिनों वहाँ पर महाकवि निराला, रामकुमार वर्मा और महादेवी वर्मा के सम्पर्क और प्रोत्साहन से साहित्य रचना में प्रवृत्त हुईं। कविताओं के अतिरिक्त आपने लेख और निबन्ध भी लिखे हैं। 'भावना' नामक कविता-संग्रह अभी तक अप्रकाशित है। वर्तमान पता—१४९ हवेली हैदर कुली, चाँदनी चौक दिल्ली।

है अमर मधुगान मेरे !

तुम अमर हो मैं अमर हूँ है अमर मधुगान मेरे !

नीर नभ क्षिति आग निर्मित
दीप जीवन का मनोरम
अग्नि की से ज्योति तम का
हर रहा, जलता प्रलय सम
तुम तरस क्यों गुनगुनाते भाव हैं अनजान मेरे !
है अमर मधुगान मेरे !

इस गगन की यामिनी में
जल रहे हैं दीप कितने
यह न कोई जानता—
इनमें भरा है स्नेह किसने
वे सरस हृदयों करेंगे जो बने भगवान् मेरे !
है अमर मधुगान मेरे !

दीप के आलोक से तब
पंथ का आभास होगा
आवरण को दो हटा प्रिय !
तब मुझे विश्वास होगा
फिर तुम्हारी ज्योति में ही लीन होंगे प्राण मेरे !
है अमर मधुगान मेरे !

जन्म-स्थान — दिल्ली ।
जन्म-तिथि — २० मई १९४० ।
शिक्षा — बी० ए० दिल्ली विश्वविद्यालय से । आजकल एम० ए० (हिन्दी) फाइनल में अध्ययन कर रही हैं । विशेष रुचि — चित्र-कला संगीत और बागवानी । घूमी फिरती



मणिका मोहिनी

ज़िन्दगी ही इन्हें प्रिय है । बंधाव अच्छा नहीं लगता । पहले मोहिनी 'रश्मि' नाम से लिखती थीं । कविता के साथ-साथ गद्य भी लिखा है । रचनाएँ 'भारती' 'कल्पना' 'धर्मयुग' आदि में प्रकाशित होती रहती हैं । स्थायी पता — १४७२ नाई वाड़ा दिल्ली ६ ।

हे अमर मधुगान मेरे !

तुम अमर हो मैं अमर हूँ हे अमर मधुगान मेरे !

नीर, मम क्षिति प्राण-निर्मित
दीप जीवन का मनोरम
लग्न की ले ज्योति तम को
हर रहा जलता प्रणय सम
तुम तामस क्यों गुनगुनाते भाव हे अनजान मेरे !
हे अमर मधुगान मेरे !

इस गगन की यामिनी में
जल रहे हैं दीप कितने
यह न कोई जानता—
इनमें भरा है स्नेह किसने
वे सरस इसको करेंगे जो बने भगवान् मेरे !
हे अमर मधुगान मेरे !

दीप के आलोक से तब
पंथ का आभास होगा
आवरण को दो हटा प्रिय !
तब मुझे विश्वास होगा
फिर तुम्हारी ज्योति में ही लीन होंगे प्राण मेरे !
हे अमर मधुगान मेरे !

जन्म-स्थान — दिल्ली। जन्म-तिथि—२० मई १९४०। शिक्षा—बी० ए० दिल्ली विश्वविद्यालय से। आजकल एम० ए० (हिन्दी) प्रथम वर्ष में अध्ययन कर रही हैं। विशेष रुचि—चित्र-कला संगीत और बागवानी। सुश्री विवाही



मल्लिका मोहिनी

ज़िन्दगी ही इन्हें प्रिय है। वैराग्य अच्छा नहीं लगता। पहले मोहिनी 'दीप' नाम से लिखती थीं। कविता के साथ-साथ गद्य भी लिखा है। रचनाएँ 'भारती' 'कल्पना' 'धर्मयुग' आदि में प्रकाशित होती रहती हैं। स्थायी पता — १९४२ मार्ई बाड़ा, दिल्ली ६।

केवल सपना ही सपना है !

जो बूँदें ही जीवन की परिभाषा का उपमा गई
कितना सुन्दर रहस्य लगेगा जिस दिन तुमको सागर दूँगी !

प्राणों में मादक-सी हलचल,
साँसों में मदिरा-सी चल-चल
बेबस मन में उमड़ घनेरी
आँखों में झरने-सी छल-छल,
एक रंगीली नैनों की माया को सुन्दर बना गई
मन की व्यथा सुन ले कोई इन आँखों का आभार न लूँगी ।

सुख दुःख की छूट-सुनाई में
तुम ममता क्यों लाज़माई में
केवल सपना ही सपना है
सम्बन्धों की गहराई में
मधुबन वाली कुसुमों की तरुणाई सिमटा गई
पतझर के सन्ताप हृदय में पल में सौ-सौ बार सहूँगी ।

तुमने दूरी को नाप लिया
सुख को निधियों में बाँध लिया
उमड़ाते सपनों में मन का
कोना कोना नाप न लिया
स्मृतियों की ढेर छाँह पर भोली साँस लुटा गई
अरमानों का इठलाती-सी ओराई उस पार रहूँगी ।

हिन्दी-वर्ग कवियों के प्रेम-गीत

तुम हँस लो मेरे जीवन पर !

तुम हँस लो मेरे जीवन पर, जग हँसता रूठे यौवन पर !
यह सावन मन का चला गया जो बरसा मेरे उपवन पर !

मंजरियाँ कोमल कुम्हलाईं
उड़ गए भ्रमर सब रस लेकर
पत्ते डालों पर सूख गए
कुसुम बिखरा सब धरती पर
निर्मम का वैभव लुटा पड़ा तुम देखो उसको जी भरकर !
तुम हँस लो मेरे जीवन पर !

वह पत्ता कहाँ खाली-खाली
जिससे जीवन था बरस रहा
मन का प्यासा मेरा मधुवन
जल की बूँदों को तरस रहा
गिन रहा साँस जो जीवन के, तुम हँस लो उसकी तड़पन पर !
जग हँसता रूठे यौवन पर !

सब पंछी गाकर मौन हुए,
सब पंथी थककर लौट गए
उपवन की डाली डाली पर
पतझड़ की छाया छोड़ गए
सब खोकर भी जो झूम उठा तुम हँस लो उसकी सिहरन पर !
तुम हँस लो मेरे जीवन पर !

जन्म-स्थान—नैनीताल। जन्म तिथि—११ अगस्त सन् १९४४। शिक्षा—बी० एस सी०। विशेष—हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी में भूगर्भ-विभाग के रीडर डॉ०



मधु पाण्डेय

हरीशचन्द्र पाण्डेय की पुत्री। सन् १९५९ से गीत लिखना आरम्भ किया। स्थायी पता—द्वारा डॉक्टर हरीशचन्द्र पाण्डेय रीडर भूगर्भ विभाग हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।

जन्म स्थान — बड़ौदा (गुजरात)। जन्म तिथि— १ अक्तूबर १९३१। विशेष— बचपन में ही सिर पर से पिता की छत्र-छाया उठ गई। फिर बीमार रहने लगी और अब भी वैसी ही रोगिणी है। दीर्घकालीन अस्वस्थता में ही



मधुमालती चौकसी

अध्ययन की ओर रुचि। जन्म से गुजराती होते हुए भी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा दी और आजकल साहित्य रत्न की तैयारी कर रही हैं। वर्तमान पता—शामल बेचर की पोल मांडवी रोड बड़ौदा १।

कुछ कह न पाई !

वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

कट गए हैं पंख पंछी गिर गया नभ से धरा पर
कसकते हैं घाव फिर भी कुछ नहीं लाया गिरा पर
तुम बताओ क्या मरण की वेदना वरदान बनती
या अधूरी साध निश्छल प्यार का अभिमान बनती
रागिनी घुसकर असमय में हँस गई कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

बज उठे हैं तार, कम्पित राग हँसते मुग्ध मन से
ओस गोपन भाव रखती सामने भोले नयन से
लाज का घूँघट हटाकर झाँकते प्यार सपन-से
जो छिपे थे विस्मरण के कक्ष में बिसरे रुदन से
प्राण की कोकिल सिहरकर रह गई कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

बिखरते हैं गान, शबनम सम मनुज के उर अतल से
बह उठी अट्टहास फूटे मधु निर्झर गहन तल से
क्या समझ पाए न उसके प्राण की उन धड़कनों को-
पीर में मदहोश खोई सजल मोती तड़पनों को
पीर की दुनिया बसी वह लुट गई कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई कुछ कह न पाई !

पर नशीले नयन-नभ में अश्रुओं के घन घुमड़ते
साधना की सेज पर ये रात-दिन दुख-सुख बिहँसते
कल्पनाएं मिट गईं, पर चाह भर पाई कभी ना
लुट गया सर्वस्व फिर भी साँस कह पाई कभी ना
भोर की सुकुमार कलिका झर गई, कुछ कह न पाई!
वेदना भरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई!

हाय मिट-मिटकर पतंगे भी उठे फिर भस्म से ही
प्यार की मनुहार बनकर बस गए क्या रस्म से ही
"आ अधूरी साधना की राह पर बिखरे सुमन-से"
दीप की जलती शिखा की आरती कहती भुवन से
प्रीत की कलियाँ सहमकर झड़ गईं, कुछ कह न पाई!
वेदना भरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई!

जन्म-स्थान—वाराणसी। जन्म तिथि — १७ अगस्त १९४२। शिक्षा—काशी विश्व विद्यालय से बी० ए०। सम्प्रति वहीं से एम० ए० (संस्कृत) कर रही हैं। विशेष—पहली रचना १९५६ में 'आज' के 'बाल संसद' नामक स्तम्भ में



मधुछन्दा दासगुप्ता

प्रकाशित हुई। 'आज' के द्वारा ही साहित्यिक जीवन में प्रवेश। सन् १९५९ में आकाश वाणी के लखनऊ इलाहाबाद केन्द्रों से कविता-पाठ। स्थायी पता—भारत स्मृति भवन सी० १०/११ मलदहिया वाराणसी २।

बस, केवल सपनों में आना !

भीर समय दुनिया के डर से नीची पलकें
उठ न सकेंगी कभी तुम्हारा स्वागत करने
मिलूं जो तुमसे तो मन का बादल देखेगा—
और कहीं पर जा बरसेगा उसे सुनाने

इस जालिम से बचकर रहना !
बस केवल सपनों में आना !

मन कुछ कहता मतवाला बन तुम्हें देखकर
मैं समझाती उसे प्यार से स्वयं सँभलकर
नहीं चाहती उसे रोकना यों निर्दय बन
फिर भी लेती साँस सदा मैं उसे दमन कर

इससे तो अच्छा मर जाना !
बस केवल सपनों में आना !

इस पथ पर जो गया भटक, वह लौट न पाया
उसे चाँदनी ने दावानल बन तरसाया
दुनिया हँसकर छोड़ गई उसको पीछे ही—
वह प्रेमी पर उसके मन का मीत न आया,

पत्थर बनकर सब-कुछ सहना !
बस, केवल सपनों में आना !

अधिक पास आना भी दुखदायी होता है
याद रहे यह मिलन नहीं स्थायी होता है,
जब दो दिन के बाद बिछुड़ना होता है तब-
यह मन मृत्यु-सुधा का अभिलाषी होता है

अच्छा है, तुम कभी न आना !
बस, केवल सपनों में आना !

जन्म स्थान—लखनऊ (पालन-पोषण लखीमपुर खीरी) । जन्म तिथि—१० अगस्त १९१२ । शिक्षा—एम० ए० (संस्कृत व हिन्दी) । विशेष—पूरा नाम माधवी-



मधु शुक्ला

लता शुक्ला । इनके पति श्री रामरतन शुक्ल कानपुर नगर महापालिका में स्कीम सेक्रेटरी हैं । स्थायी-निवास—कानपुर ।

प्राण ! आकर थाम लो बहियाँ !

एक युग के बाद आए तुम
और मुझको कर गए पागल !

तान चादर सो रही थी मैं
खींच चादर क्यों जगाया रे !
जागते ही जग गई पीड़ा
और मन भी हो उठा चंचल !
एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

अब न आती नींद पहले-सी
हो न पाती हूँ अचेतन हो।
प्राण रह रहकर तड़पते हैं,
कर गए हो इस कदर घायल !
एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

आग जाना ही न बाक़ी है,
दूर मंजिल राह बाकी है !
प्राण ! आकर थाम लो बहियाँ,
मधु बरसे हैं डगर मौसम !
एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

जन्म स्थान—लखनऊ (पालन-पोषण लखीमपुर खीरी)। जन्म-तिथि—१० अगस्त १९३२। शिक्षा—एम० ए० (संस्कृत व हिन्दी)। विशेष—पूरा नाम माधवी-



मधु शुक्ला

लता शुक्ला। इनके पति श्री रामरत्न शुक्ल कानपुर नगर महापालिका में संगीत-सेक्रेटरी हैं। स्थायी-निवास—कानपुर।

प्राण! प्राकर थाम लो बहियाँ!
एक युग के बाद प्राए तुम
और मुझको कर गए पागल!

तान चादर सो रही थी मैं
झीन चादर क्यों जगाया रे!
जागते ही जग गई पीड़ा
और मन भी हो उठा चंचल!
एक युग के बाद प्राए तुम,
और मुझको कर गए पागल!

अब न प्राती नींद पहले-सी
हो न पाती हूँ अचेतन हो!
प्राण रह-रहकर तड़पते हैं,
कर गए हो इस कदर घायल!
एक युग के बाद प्राए तुम,
और मुझको कर गए पागल!

जाग जाना ही न काफ़ी है,
दूर मंज़िल राह बाकी है!
प्राण! प्राकर थाम लो बहियाँ,
अश्रु करते हैं डगर धोमल!
एक युग के बाद प्राए तुम
और मुझको कर गए पागल!

जन्म स्थान—सुरेन्द्रनगर, कच्छ, गुजरात (यह स्थान पहले वढ़वाण कैम्प कहलाता था)। जन्म तिथि—१९ जनवरी १९३३। शिक्षा—बी० ए० बी० एड०।



मनमोहिनी

[विशेष—आजकल अजमेर से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'लहर' का सम्पादन करती हैं। वर्तमान पता—पो० बा० ८२ कचहरी रोड अजमेर।

रातें आँखों में बीतीं

जितना तुम्हें भुला देने को मन करता है
उतना ही यह दर्द उभर आता है जैसे!

सौ-सौ साँझ ढली रातें आँखों में बीतीं
सपनों की हर गागर रही सदा ही रीती
सोचा मैंने मौन रहूँगी कुछ न कहूँगी
पर प्राणों का गीत मुखर आता है जैसे!

ये प्रतिबन्धों की ऊँची काली दीवारें
आज प्यार की नहीं गूँजती कहीं पुकारें
फिर भी मन को बहलाती हूँ गा लेती हूँ
पर साँसों का स्वप्न बिखर जाता है जैसे!

कहीं पन्थ ही नहीं दिखाई देता मुझको
नहीं प्राण का गीत सुनाई देता मुझको
और भटकते हुए आज लगता है प्रतिपल,
सघन अँधेरा कहीं उतर आता है जैसे!

जितना तुम्हें भुला देने को मन करता है
उतना ही यह दर्द उभर आता है जैसे!

जन्म स्थान— मथुरा। जन्म-तिथि—सन् १९४१। शिक्षा—बी० ए०। एम० ए० के प्रथम वर्ष में दिल्ली विश्व विद्यालय में प्रवेश। विशेष— गद्य और पद्य दोनों ही



ममता अग्रवाल

विधाओं में प्रवृत्त। विशेष रूप से कविता और कहानी-लेखन में रुचि। श्री विद्याभूषण अग्रवाल की सुपुत्री। वर्तमान पता— २५/१९ शक्तिनगर, दिल्ली ६।

जन्म-स्थान—फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि—सन् १९०७। शिक्षा—एम ए. (संस्कृत)। प्रकाशित रचनाएँ—'नीहार' 'रश्मि' 'नीरजा' 'सान्ध्य गीत' 'दीपशिखा' 'आधुनिक कवि' 'सप्तपर्णा' 'यामा' आदि। विशेष—हिन्दी की समर्थ कवयित्री महिला विद्यापीठ प्रयाग की



महादेवी वर्मा

आचार्या साहित्यकार संसद् प्रयाग की संस्थापिका। कुछ समय तक आप 'चाँद' की भी सम्पादिका रही थी। अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा मंगला प्रसाद पारितोषिक और 'साहित्य-वाचस्पति' उपाधि से सम्मानित। सन् १९५६ में पद्मभूषण से विभूषित। स्थायी पता—साहित्यकार संसद्, इलाहाबाद।

मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ !

मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ
                    स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

जगमगाती हुई वर्तिका देखकर
भय यही है तिमिर घिर न आए यहाँ
शून्य भरकर पथिक के मधुर राग में
हर घड़ी रागिनी को बसाए यहाँ,
एक मंज़िल समझकर जिसे रुक गए
नित नये पन्थ का वह सुमन बन गई,
फिर नई राह पर प्राण आकुल हुए
और उलझन सुलझकर नई हो गई

हर नई राह का लक्ष्य मैं पा सकूँ,
                    आत्म-विश्वास इतना भरो आज तुम !
मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ,
                    स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

मोतियों से न रीती रहे आँख यह
रागिनी कण्ठ में खो न जाए कहीं
भय मुझे है तिमिर की घनी छाँह में
ज्योति धुँधली स्वयं हो न जाए कहीं,
जिन्दगी में लिखी है परिधि मौत की
डगमगाता हुआ हर कदम बस रहा,

एक पल की मनुज की हँसी को यहाँ
डबडबाता हुआ हर नयन हँस रहा,
चाँदनी-सा मधुर हास बिखरा सकूँ
प्राण ! उच्छ्वास इतना भरो आज तुम
मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ
स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम

फूल कुछ झर रहे हैं धरा पर अरे
नव कली का न घूँघट हटाओ अभी,
हँस सकें साथ ही मुसकरा झूमकर
डाल के फूल यों मुसकराओ अभी
आवरण रश्मि का फूल पर डाल दो
मद बसी के नयन मुसकरा तो सकें,
हो गए राग का ही सजग कुछ घड़ी
मुक्त मन से भ्रमर गुनगुना तो सकें
मैं गरल पी सकूँ गीत गा-गा यहाँ
जीभ पर बूँद मधु की धरो आज तुम !
मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ
स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

जन्म-स्थान— औरंगाबाद (आन्ध्र प्रदेश)। जन्म तिथि— ४ जून १९३४। शिक्षा— एम ए० (हिन्दी)। विशेष— गीत कहानी शब्द-चित्र तथा छोटे-छोटे रेडियो-नाटक लिखने में विशेष रुचि। विवाह से



मालती जोशी

पूर्व 'मालती दिघे' नाम से लिखती थीं। वर्तमान पता— द्वारा श्री सोमनाथ जोशी असिस्टेंट इंजीनियर पुनर्वास चम्बल कॉलोनी भानपुरा द्वारा झालावाड़ रोड (पश्चिम रेलवे)।

धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा !

धूप छाँह है प्यार तुम्हारा,
कभी हँसाए, कभी रुलाए, हाय न भाए !

कभी-कभी नन्दन-कुसुमों से
भर जाती है मेरी झोली,
कभी राह की धूल निगोड़ी
कर जाती है क्रूर ठिठोली
इसीलिए तो सिसक सिसककर कहती हूँ मैं—
बैरी है या मीत हमारा
गले लगाए, या ठुकराए, बाज न आए !
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा
कभी हँसाए कभी रुलाए, हाय न भाए !

मुखरित हो जाता सपने में
कभी-कभी तो सूनापन भी
और कभी तो भरे जगत में
पास न रहता अपना मन भी
इसीलिए तो सिसक-सिसककर कहती हूँ मैं—
मौज कहूँ या इसे किनारा
कभी डुबाए, पार लगाए, पास बुलाए !
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा
कभी हँसाए कभी रुलाए हाय न भाए !

कभी कल्पना के बागों में
बँध जाते हैं क्षण मनमाने
कभी नयन के यमुना-जल में
बह जाते हैं घर पहचाने
इसीलिए तो तड़प-तड़पकर कहती हूँ मैं—
है कैसा अनमोल सहारा
दीप बुझाए, स्वप्न सजाए नींद न आए!
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा
कभी हँसाए, कभी रुलाए हाथ न आए!

जन्म-स्थान— बहराइच (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि— १ जुलाई १९३९। शिक्षा— एम० ए० (हिन्दी)। प्रकाशित रचना— 'मणिमा' (कविता संग्रह)। अप्रकाशित रचना—

मालती श्रीवास्तव



'परागनी' (उपन्यास)। स्थायी पता—द्वारा डॉ० ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव कानूनगो पुरा बहराइच (उत्तर प्रदेश)।

मेरी लाज रखना !

तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे
इस कुमारी माँग की पर लाज रखना !

काँपकर ही रह गया तन-मन व्यथा का
तुम कभी भी पीर की चूनर न लाए,
सान्त्वना की सप्तरंगी ओढ़नी की—
लालसा ही रह गई मन में छिपाए

तुम गगन में ही हँसो मधु गीत मेरे
जो छिपी है पीर उसकी लाज रखना !
तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे
इस कुमारी माँग की पर लाज रखना !

तुम गगन के जलधरों से खेल खेलो
तुम तड़पती विद्युत का उपहार ले लो
देख लूँगी मैं नयन भर दूर से ही—
स्वर्ण किरणों के बड़े उपहार ले लो

रूप के पीछे पड़े शृंगार मेरे
मैं तुम्हारी छाँह मेरी लाज रखना !
तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे,
इस कुमारी माँग की पर लाज रखना !

युग-युगों की साधना के स्वर सँजोए
प्राण आकुल थे तनिक बोले न बोले,
रागिनी मन की गगन तो गा रही हो—
छीन कोई ले न पथ में भाव भोले
पवन रथ पर गा रहे संगीत मेरे
मैं तुम्हारी बीण मेरी लाज रखना!
तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे
इस कुँवारी माँग की पर लाज रखना!

जन्म - स्थान — हरदा (मध्य प्रदेश)। जन्म-तिथि— ४ मई १९११। शिक्षा—एम० ए० (अंग्रेजी)। प्रकाशित रचनाएं— 'तुम बड़ी पागल हो' (कहानी संग्रह) 'आमी' (उपन्यास)। विशेष—हिन्दी



मालती सिरसीकर

की तरुण पीढ़ी की कहानी लेखिकाओं में अग्रणी। प्रख्यात प्रयोगवादी कवयित्रियों में से एक। विवाह से पहले 'मालती परुलकर' नाम से लिखती थीं। वर्तमान पता—ई० ११ मोती बाग नं० १ नई दिल्ली।

पहचानते हैं प्राण तुम्हें।

पहचानते हैं प्राण तुम्हें पर ये नयन नहीं।

हुई बावरी बहुत बार मगर मिली न खबर,
किस दिशा से आते हैं स्वर किस इंगित पर
बहते हैं नयनों से निर्झर अस्फुट झर झर।
छली है क्यों तान तुम्हारी प्राणों के पंछी को
बहकाता क्यों श्याम तुम्हारा अधरों की वंशी को
रोम-रोम खोजकर, पवन-गगन को टोककर
हार गई मैं हार गए पग पर यह मगन नहीं।
पहचानते हैं प्राण तुम्हें पर ये नयन नहीं।

ढलता दिन है ढलती जाती है, हर आने वाली रात
पर ढली नहीं टिकी रही, अचल सती-सी साथ
धुँ-धुँ में मग मग में भरकर अवसादी उन्माद।
यौवन झर जायेगा झरतो ज्यों पतझर की पाँत
किन्तु प्यार तुम्हारा सदा रहेगा मृत्यु-पार भी साथ
था बस आशीष का कि पी गई न विष मीरा-सा
कान्हा बिन किसी में रही जा पल भी मगन नहीं!
पहचानते हैं प्राण तुम्हें पर ये नयन नहीं!

जन्म-स्थान— मनस्यापुर, मेजा प्रयाग। जन्म-तिथि— अगस्त १९२९। शिक्षा— पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी प्रभाकर और अंग्रेजी में बी० ए०। प्रयाग-हिन्दी-साहित्य सम्मेलन से 'साहित्य रत्न'। अप्रकाशित रचनाएँ— 'कणिका'



मोहिनी गौतम

(कविता संग्रह) इसके अतिरिक्त एक कहानी-संग्रह भी। विशेष—दिल्ली कालिज दिल्ली के हिन्दी-अध्यापक डॉ० मन मोहन गौतम की धर्मपत्नी। स्थायी पता—कठौती मेजा रोड इलाहाबाद।

कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

मुसकान तुम्हारे अन्तर को पल भर भी उजला कर पाया ?
कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

ऊषा की अरुणाई से वह सन्ध्या तक तुझ पर मँडराया
हिम की अँधियारी रजनी में भौंरा कब तुममें बँध पाया ?
तुम कुहर म्लान हो अकुलाईं उड़ गया धनी पर कब आया
तुम सम्पुट खोले खड़ी रहीं, लेकर अर्पित मन दरसाया !
कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

तुम बनी प्रतीक्षा की बाती, दीपक बन सिंचित नेह जला
पल भर को भी पतंग बनकर, वह निष्ठुर कब आया। पगला
तुमने खुद ही घुट-घुटकर तो, उसको स्वच्छन्द बना पाया
अब सूख चुका, रस सूख चुका, क्या कभी भूलकर भी आया ?
कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

जन्म-स्थान—उज्जैन
जन्म तिथि—सन् १९३६।
शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)।
विशेष—हिन्दी की नई पीढ़ी के विशिष्ट गीतकार श्री वीरेन्द्र मिश्र की छोटी बहन। इनके पिता श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र भी अच्छे कवि हैं। 'आधुनिक काव्य का विकास' पर एम०



रजनी मिश्र

ए० परीक्षा के लिए प्रस्तुत किया गया विशिष्ट प्रबन्ध अभूतपूर्व है। छोटी अवस्था से ही कविता में रुचि जो बड़े भाई से प्रभावित होकर कालान्तर में पल्लवित और परिष्कृत हुई। वर्तमान पता—चौंडे का बाजार, लश्कर (ग्वालियर)।

मन के मीत न आए !

बाट देखते हारीं अँखियाँ मन के मीत न आए !
मन के मीत न आए !

हुई भोर आशा की बेंदी ने ऊषा का भाल सजाया
अँगड़ाई ले जागी उमंग भावों ने नव पर्व मनाया
अरमानों की अमराई में मन की कोयल गाए !
मन के मीत न आए !

भारी मन बोझिल पलकों में राह देखते समय बिताया
अनगिन दिये बिसारे मन का, कितनी बार नहीं समझाया
सपन-भरे नयनों में मेरे आँसू ही भर आए !
मन के मीत न आए !

चली पुरबिया निकला चन्दा एक-एक कर चले सितारे
लगन न छूटी, आस न टूटी मैं अपने विश्वास सहारे
मेरे मन्दिर में तेरा ही स्नेह-प्यार मुसकाए !
मन के मीत न आए !

जन्म-स्थान—जबलपुर। जन्म-तिथि—१२ दिसम्बर १९१२। विवाह—२८ जून १९२५ को सहारनपुर में। शिक्षा—काव्यतीर्थ परीक्षा सन् १९२८ में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। विशेष—कविता लिखना इन्होंने सन् १९१९ से शुरू किया और



रत्नकुमारी काव्यतीर्थ

अपने पिता सेठ गोविन्ददास के नाटकों के गीतों को मिलाकर लगभग २० कविताएँ लिखी हैं। प्रकाशित पुस्तकें—'अंकुर' (कविता-संग्रह) श्री नर्मदा प्रसाद खरे की विस्तृत भूमिका सहित। स्थायी पता—राजा गोकुलदास का महल जबलपुर।

रे मन ! आँसू पी ले !

निभृत नीद से जाग निरन्तर नयन नीर से गीले !
रे मन ! आँसू पी ले !

कंचन शैया पर सोया था सुख से रे अनजान !
किस निर्दय अँगुली ने छेड़ी सिसकी बीन पर तान !
निकले राग रसीले !
रे मन ! आँसू पी ले !

चीक चकित-सा उड़-उड़ मत छू रे बादल के कूल !
उच्छवासों की आँधी चलती पथ न जाना भूल !
रुक जा हाय ! हठीले !
रे मन ! आँसू ! पी ले !

आतुर आशा खोल झाँकती, सुख-सुषमा के द्वार !
बन्दी का जीवन रे भोले ! हो जावेगा भार !
हो निराश ही जी ले !
रे मन ! आँसू पी ले !



जन्म स्थान—ग्राम नग बेरिया (हरदोई) उत्तर प्रदेश। जन्म तिथि—२१ मई सन् १९२७। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी तथा राजनीति) तथा एल एम० बी० (लखनऊ विश्वविद्यालय से)। प्रारम्भिक शिक्षा बी० ए० तक महिला कालिज लखनऊ में प्राप्त की। प्रकाशित रचना—'मधुर फेन' (कविता संग्रह)। विशेष—हिन्दी की नई पीढ़ी की कवयित्रियों में अग्रगण्य। आपकी रचनाएँ आकाश वाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित होती रहती हैं। 'आलोचना' 'कल्पना' 'निकषा' 'संकेत' 'सप्तसिन्धु' 'हिन्दुस्तान' 'धर्मयुग' तथा 'नया समाज' आदि पत्र-पत्रिकाओं में सम्मान रचनाओं का प्रकाशन। आजकल महिला विद्यालय लखनऊ में हिन्दी की प्राध्यापिका। वर्तमान पता—सिंह भाग, हुसैनगंज पार्क, लखनऊ।

रमा सिंह

मेरे पास कुछ उत्तर नहीं !

साँझ आई चुप हुए धरती-गगन
नयन में गोधूलि के बादल उठे
बोझ से पलकें झुकीं नम हो गईं
साँझ ने पूछा उदासी किसलिए ?
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?

रात आई, कालिमा घिरती गई
सघन तम में द्वार मन के खुल गए
चाह की चिनगारियाँ हँसने लगीं
रात ने पूछा, चमन यह किसलिए ?
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?

नींद आई, चेतना सब मौन है
देह थककर सो गई पर प्राण को
स्वप्न की जादूभरी गलियाँ मिलीं
मौन ने पूछा भुलावे किसलिए ?
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?
प्रश्न तो बिखरे यहाँ हर ओर हैं
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं !

जन्म-स्थान—जोधपुर। जन्म तिथि—सन् १९२७। शिक्षा—मैट्रिक के बाद एम० ए० तक प्राइवेट पढ़ा। राजस्थान विश्वविद्यालय से सन् १९५५ में 'राजस्थान के राजघरानों द्वारा हिन्दी की सेवाएँ' विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। विशेष—विवाह से पूर्व 'राजकुमारी बिम



राजकुमारी कौल

पुरी' नाम से लिखती थीं। आजकल जयपुर के महारानी कालिज में हैं। कविता के अतिरिक्त सितार और बाडमिन आदि में विशेष रुचि। प्रकाशित रचनाएँ—'भावादीप' (कविता संग्रह) 'स्मृतियों की झाँकी' (कहानी-संग्रह)। वर्तमान पता—४ विवेकानन्द मार्ग सी स्कीम जयपुर।

प्राण तुमको दे रही हूँ।
प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

व्योम की इस क्षितिज-रेखा—
से भटक विश्वास सम्भ्रम
डगमगी मैं घो निशा में
भर पलक में स्वप्न का भ्रम
क्यों न मेरे ज्वलित अधरों—
को बुझाती मधु-धारा
मन मुझे तुमने दिया मैं मान तुमको दे रही हूँ!
प्राण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

तुम कहो तो आज सार—
दुखित जग का ताप हर लूँ,
और जगती की व्यथा से
आज अपने नयन भर लूँ
प्राण का निःश्वास पहला
साँस के अन्तिम क्षणों में
मेघ तुमने दे दिए, मैं गान तुमको दे रही हूँ!
प्राण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

मोतियों का हार है या
भूमि पर चिनगारियाँ हैं

प्रिय तुम्हारी राह में
अभिषेक की तैयारियाँ हैं
किन्तु निद्रा के सजे हैं
द्वार बन्दनवार सपने
अश्रु तुमने दे दिए, मैं ध्यान तुमको दे रही हूँ।
प्रण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

प्रकृति की सीमन्त में—
सिन्दूर किसने भर दिया है,
और मैं सो दूर थी—
मजबूर किसने कर दिया है?
आज मुझको विजय भी
मिलती पराजय के स्वरों में
प्रीत तुमने दी कि मैं पहचान तुमको दे रही हूँ।
प्रण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

आज मैं ही तो सिखाती
दीप को ले पीर जलना
सीखता है शलभ मुझसे
ही मरे, चुपचाप जलना
आज मेरी राह में तो
हार को भी हारना है
दे दिए पाषाण, मैं भगवान् तुमको दे रही हूँ।
प्रण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

मानती हूँ फिर गई हूँ—
तिमिर से मैं हूँ अकेली

इन उमड़ती बदलियों की
प्यास है मेरी सहेली
किन्तु दीपक नील नभ के—
दे रहे खामोश मुझको
मान मुझे तुमने दिया अभिमान तुमको दे रही हूँ।
प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

याद में खो दिन निकलता
रात आँखों में गुमा सी
तुम हठीले हो मगर सो
आज मैं भी हूँ निराली
अंक में भर प्रणय परिमल
ले हृदय में एक माला
शाप तुमने दे दिया, वरदान तुमको दे रही हूँ।
प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ।

जन्म-स्थान—जबलपुर। जन्म तिथि— सन् १९२०। अपने छात्र-जीवन से ही ये कविता लिखने और भाषण देने की ओर उन्मुख थीं। सन् १६ में हुई पति की आकस्मिक मृत्यु के बाद आजकल अपनी एक-मात्र पुत्री के साथ रह रही हैं। विशेष—आप प्रसिद्ध मजदूर नेता स्व० हरिहरनाथ शास्त्री



राजकुमारी श्रीवास्तव

की पत्नी श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव की बड़ी बहन हैं। आपकी रचनाएँ 'आजकल' 'हिन्दुस्तान' 'सुधा' तथा 'माधुरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। स्थायी पता—द्वारा कुमारी कीर्ति विद्यार्थी ए० डी० ओ० मण्डला (मध्य प्रदेश)।

मेरे प्रियतम साकार अमर !

मेरे जीवन का सार अमर, मेरा सुन्दर संसार अमर !

मैंने भी गाए गीत कभी,
मैंने भी पाई प्रीत कभी
जो आज स्वप्न भी बन न सका
वह जीवन था संगीत कभी
उर की जय-माला पल भर में बनती प्राणों की हार अमर !

मन के तारों पर सुध-बुध खो
मैंने जो गीत बजाया था
हाँ स्वयं स्वर्ग भी मोहित हो
फिर इस धरती पर आया था,
वह स्वर्ग गया वीणा टूटी, पर उसकी मृदु झंकार अमर !

यह भेद बता दे ओ निर्मम
मुझको तसपाकर क्या पाया ?
तूने मुझसे छल से छीनी
केवल उनकी नश्वर काया,
मेरे अन्तर के आसन पर मेरे प्रियतम साकार अमर !

मत पूछो उसने क्या खोया,
जिसका सर्वस्व समर्पित है

जिसके प्राणों का अणु-अणु भी
प्रिय के चरणों पर अर्पित है,
सोना हो जाता मन जाला जब जीवन ही उपहार अमर !

जग दीन उसे कहता करे
जिसका मन किंचित् दीन नहीं
उसकी स्मृतियों से आलोकित,
अन्तर मेरा छवि-हीन नहीं
नश्वरता को जीवन देकर चमका देता है प्यार अमर !

मेरी लघुता से जो पाते,
अपनी महिमा का आश्वासन
वे दुर्बल मन कब कर पाए,
मेरे गौरव का तेज सहन
उनके प्रहार मे तिरस्कार, बनते मेरा उपकार अमर !

जग मेरी गरिमा क्या जाने,
क्या मेरा वैभव पहचाने ?
जिसके अंचल में चिन्तामणि,
वह क्या झोंकों से भय माने ?
तूफ़ान पराजित हों जिससे मेरा प्रकाश आधार अमर !

पथ में वह पथिक भटकता है
जिसने निज केन्द्र नहीं जाना
यदि भटका तो भी खो न सका,
जिसने मंजिल को पहचाना,
दुख मेरी मंजिल का साथी, मेरे मन का शृङ्गार अमर !
मेरे जीवन का सार अमर मेरा सुन्दर संसार अमर !

जन्म स्थान—पामरा। जन्म-तिथि— १४ जुलाई १९१४। शिक्षा—एम० ए०। आजकल लखनऊ विश्वविद्यालय में समाज शास्त्र विषय पर अनुसन्धान कर रही हैं। विशेष—इनके पति श्री देवीदीन त्रिवेदी लखनऊ में शिक्षा उप-संचालक हैं। इनकी रचनाएँ सन् १९३२ से ही 'आर्य महिला'



राजराजेश्वरी त्रिवेदी 'नलिनी'

'माधुरी' 'चाँद' 'विश्वमित्र' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। प्रकाशित रचनाएँ—'कुंकुम'। एक संग्रह और भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। आजकल भी इनके गीत आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित होते रहते हैं। स्थायी पता—६ माल एवेन्यू लखनऊ।

कब किसकी साध हुई पूरी !

फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को
जीवन की धुंधली दर्दीली सपनों की शेष निशानी को

मेरा अतीत खो गया हाय
युग के चंचल अभिसारों में
वे स्वप्न सलोने टूट गए,
विनिमय की मधु मनुहारों में
मेरे प्राणों के गीतों की
बिखरी हैं आकुल पंखुड़ियाँ
विस्मृति के चरणों में बेसुध
मूर्छित कवि की कवितावलियाँ
यह सुनने को उत्कंठित रहा युग-युग की कथा पुरानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !

साँसों के तिनका-तृण पर यह
आशा का सुन्दर महल खड़ा
है इसका पता ठिकाना क्या
कब बना और फिर कब बिगड़ा
सपनों का इस दुनिया में
फिर कब किसका उर-सुमन खिला,
कब किसकी साध हुई पूरी
किसका अनुराग फला फूला

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

मैं मौन चकित-सी निरख रही कब से जग की मनमानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !

पलकों में उमड़ रहा सावन
है गरज रहा भादों उर में,
मैं कैसे गाऊँ गीत मधुर
अवरुद्ध कण्ठ टूटे स्वर में
क्यों मेरी मौन विवशता से
सखि ! आज जगत् को प्रीत हुई
क्यों मेरी मौन अर्चना भी
अब उसको असह्य प्रतीत हुई,

फिर आज हठीला जगा रहा, सोई-सी याद पुरानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !
जीवन की पंचमी दर्दीसी, सपनों की दीप निशानी को !

कब किसकी साध हुई पूरी !

फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को
जीवन की धुंधली दर्दीली सपनों की शेष निशानी को

मेरा अतीत खो गया हाय
युग के चंचल अभिसारों में,
वे स्वप्न सलोने टूट गए,
विनिमय की मृदु मनुहारों में
मेरे प्राणों के गीतों की
बिखरी हैं आकुल पंखुड़ियाँ,
विस्मृति के चरणों में बेसुध
मूर्छित कवि की कवितावलियाँ

यह सुनने को उत्कंठ मना युग-युग की कथा पुरानी को
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को

साँसों के निर्बल-कण पर यह
आशों का सुन्दर महल खड़ा
है इसका पता ठिकाना क्या,
कब बना और फिर कब बिगड़ा
समर्पण का इस दुनिया में
किस कब किसका उर-सुमन खिला
कब किसकी साध हुई पूरी
किसका अनुराग फला-फूला,

मैं मौन चकित-सी निरख रही, जग से जग की मनमानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !

पलकों में उमड़ रहा सावन
है गरज रहा भादों उर में
मैं कैसे गाऊँ गीत मधुर
गद्गद कण्ठ टूटे स्वर में,
क्यों मेरी मौन विवशता से
सखि ! आज जगत् को प्रीत हुई
क्यों मेरी मौन अर्चना भी
अब उसको समझ प्रतीत हुई,

फिर आज हठीला बना रहा, साई-सी याद पुरानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !
जीवन की पंचसी दर्दीली, सपनों की धूप निशानी को !

जन्म स्थान—ग्राम कन्मापुर (कानपुर)। जन्म-तिथि—बसन्त पंचमी सन् १९०९। निधन-तिथि—२४ जून सन् १९४९। विशेष — आपकी रचनाओं में वीर रस और भक्ति रस के साथ-साथ वेदना की झलक रहती थी। आपको अ० भा० महिला-कवि-सम्मेलन



स्व० रामरानी चौहान

प्रयाग में पहले-पहल कविता पाठ करने पर स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। आपके पिता राणा भूपसिंह जी कुवँर 'भूप' स्वयं भी प्रतिष्ठित कवि थे। इनकी बड़ी बहन रामकुमारी चौहान भी हिन्दी की प्रतिष्ठित कवयित्री हैं। 'झलक' नामक आपका कविता-संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका।

न पूरी हुई आज तक चाह !

हृदय-सागर में उठती नित्य तरंग भाव भरी उद्दाम
उसीमें आशा का जल-यान आ रहा है मेरा अविराम

कटी वर्षों-सी घड़ियाँ कठिन दिवस भी युग-से हुए व्यतीत
आज भी अरमानों के साथ गा रही आँसू दुख के गीत

समझती थी पागल है विश्व नहीं अब तुमसे थी पहचान
किन्तु मैं सचमुच पगली हुई, देव ! अब हुआ तुम्हारा भान

दिखाई दिये न अदेखे रहे न जी भर तुम्हें विलोका चाह
रही मन में मन की अभिलाष न पूरी हुई आज तक चाह

तुम्हारी पद-पूजा के लिए अनोखे चुन रक्खे थे फूल
सोचती थी मन में विधि-वाम न आने देगा होंगे अनुकूल

अग्रसर होना चाहा किन्तु किया माया ने प्रबल विरोध
अचानक चुभक उठे यह प्राण भूल सब अपने मन का बोध

हृदय-मंदिर में तब से नाथ तुम्हारी प्रतिमा है आसीन
उपेक्षा करती पूजन और साधना में रहती है लीन

जन्म-स्थान—अमीन नगर (मुजफ्फरनगर) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि—अक्तूबर १९०७। निधन तिथि—११ नवम्बर १९४१। विशेष—हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार और 'नया जीवन' मासिक के सम्पादक श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की धर्मपत्नी। विवाह से पूर्व



स्व० रामकली 'प्रभा'

यद्यपि इनका अक्षर-ज्ञान पूरी वर्णमाला तक भी न पहुँचा था परन्तु फिर भी श्री प्रभाकर जी के सम्पर्क-साहचर्य से बाद में वे कहानियाँ लेख व कविताएँ बड़ी सफलता से लिखने लगी थी। उनका जीवन व्यक्तित्व-निर्माण की साधना का एक श्रेष्ठ उदाहरण था।

समझूँगी इसको भी प्यार !

अन्धकारमय घनी निशा है बैठी हूँ सरिता के कूल !
चरणों में अर्पण हित छोड़ रही मानस के फूल !
जब चरणों में यह पहुँचेगी पहुँचेंगे मेरे भी शूल !
देख इन्हें स्मर मुझको लेना, जाना जीवन धन फिर भूल !

मेरी स्मृति में नष्ट न करना सरिता-संगम-सुख हे प्राण !
हृदयांचल में ले स्मृति तेरी होती हूँ द्रुत अन्तर्धान !
अन्तिम भेंट समझकर प्यारे, फूलों को करना स्वीकार !
अथवा पग से ठुकरा देना, समझूँगी इसको भी प्यार !

रामकुमारी चौहान



जन्म स्थान—सीसामऊ (कानपुर)। जन्म तिथि—फाल्गुन कृष्णा ६ सम्वत् १९६१। विशेष—इनके पिता तथा माता से इनमें काव्य प्रतिभा प्रस्फुटित हुई। इनका विवाह सन् १९१४ में झाँसी के प्रसिद्ध राष्ट्र-सेवी कुँवर रत्नसिंह बी० ए० एल-एल० बी० एडवोकेट के साथ हुआ। सन् १९२९ में पति का दुःखद वियोग हो गया। वेदना-पूर्ण कविता लिखने में किसी समय आप महादेवी वर्मा के समकक्ष मानी जाती थीं। आपके 'निःश्वास' नामक काव्य-संग्रह पर सम्वत् १९९२ वि० में सम्मेलन का 'सेकसरिया पुरस्कार' दिया गया था। अनेक अप्रकाशित रचनाएँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। स्थायी पता—महारानी लक्ष्मी बाई का मन्दिर, झाँसी (उत्तर प्रदेश)।

गीत कोई गा रहा है !

क्षीण टूटे तार उर के, क्यों बजाता जा रहा है ?
गीत कोई गा रहा है ?

सुप्त जीवन-स्वप्न मेरा दीप जगमग जल रहे हैं
मौन मन के क्षीण तारे विश्व-वैभव चूम रहे हैं
रुद्ध उनके तार मन के मौन हो गुनगुना रहा है !
गीत कोई गा रहा है !

मुग्ध मादक मोहिनी में, विश्व बेसुध सो रहा है
शान्ति, सन्ध्या का मिलन तम-कालिमा को धो रहा है
आज करुणा के उदधि में ज्वार-सा कुछ आ रहा है !
गीत कोई गा रहा है !

सरस स्वर लहरी शून्य की पथिका के स्वर सजाती
शिथिल कोई भावना की सुप्त पीड़ा को जगाती
शून्य मरुथल-मध्य मधु का कौन रस बरसा रहा है !
गीत कोई गा रहा है !

शून्य तट पर शून्यता की मौन लहरों में समाया
विकल बीहड़ विषम वेला में पथिक यह कौन आया
कौन उर के क्षीण पथ पर बिछुड़ चलता जा रहा है ?
गीत कोई गा रहा है ?

गायक यहाँ न छेड़ो तान !

अभी-अभी तो सोया है मम शैशव का अवसान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

इठलाई-सी सकुचाई-सी
सुख-दुख रंजित कलियाँ
बिखरी-सी मुरझाई-सी
स्वप्निल नभ-तारावलियाँ
विलस रहे उर के प्रमाद में प्राणों के चिर गान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

सोने दे हँसने दे मुझको !
स्वप्न मग्न के अभिनय में
गाने दे उर के तारों पर
मिलने दे उस लय में
जहाँ कूजती क्षण भर भी तो हृदय विजय की तान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

भर लेने दे जीवन को—
रग-रग में वह उन्माद
भुला सके जो निर्दय को—
कटु मधुर निराली याद
पा लेने दो इसे यहाँ उर के बदले उर दान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

कम्पित उर के मधु प्रकाश में
जग के इन पाशों को
ढूँढ रहा इस प्यासा शशि में
छिपे हुए प्यासों को
यहाँ प्रीति का पन्थ मिलाता, फिर बिछुड़े दो प्राण !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

जन्म-स्थान—ग्राम बेलार, जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि—सन् १९११। निधन तिथि—सन् १९३५। विशेष—आपकी शिक्षा लखनऊ के गढ़ी नामक मुहल्ले में (जहाँ उनकी ननिहाल थी) हुई थी और सन् १९२९ में आपका विवाह श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' के साथ हो गया था।



स्व० रामेश्वरी देवी 'चकोरी'

श्री अरुण जी स्वयं भी बड़े अच्छे लेखक और कवि हैं। चकोरी जी उनके सहयोग से कविता के क्षेत्र में अग्रसर हुईं और थोड़े-से ही समय में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। प्रकाशित रचनाएँ—'किंजल्क' 'मकरन्द' (काव्य संग्रह) 'धूप छाँह' (कहानी-संग्रह)।

भग्न हृदय के किस कोने में !

क्या है छिपा, पीर क्या सुख है मिलता जो तुमको रोने में ?
भग्न हृदय के किस कोने में ?

क्यों तुम पथ में श्रान्त-क्लान्त-सी
बैठी हो सखि ! व्यथित भ्रान्त-सी
दीर्घ उच्छ्वासों द्वारा तुम
किसे बुलाती हो अशान्त-सी ?
यह जीवन-पथ सकल अगम है, शान्ति नहीं किंचित् रोने में ?
भग्न हृदय के किस कोने में ?

अपना हास्य सहर्ष लुटाना
वैभव-सुख को दिया न जाना
सजनि ! अन्त में दीना-हीना
हो पथ में आँसू बरसाना
कोई सहृदय द्रवित न होगा है असारता इस रोने में ?
भग्न हृदय के किस कोने में ?

हो समाधि रत साधु व्यक्ति-सी
प्रिय, किस योगी की विरक्ति-सी
तन्द्रा में विलीन बैठी हो
मूर्तिमान आराध्य भक्ति-सी
मुक्ति-मार्ग क्या कभी सुलभ है, चिर-निद्रा में ही सोने में,
भग्न हृदय के किस कोने में,

आशा के प्रदीप धुँधले-से
कान्ति-हीन सम्पूर्ण जले-से
सब-के-सब निर्वाण पा चुके
उन्हें जगाओ अब न गले से
सोओ, अब सब नष्ट हो चुका, शान्ति मिले सखि ! यदि सोने में !
भग्न हृदय के किस कोने में ?

जन्म-स्थान—गाज़ियाबाद (मेरठ), उत्तर प्रदेश। जन्म तिथि—१५ जुलाई, १९२१। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय से। बी० एड० (दिल्ली)। विशेष—हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार और कहानी लेखक श्री महावीर अधिकारी

रामेश्वरी शर्मा



की पत्नी। प्रकाशित रचनाएँ—'काली छाया' (कहानी-संग्रह)। आजकल मेरी इर्विन हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्रधान हिन्दी अध्यापिका हैं। वर्तमान पता—द्वारा श्री महावीर अधिकारी सम्पादक 'नवभारत टाइम्स' पो० बा० २११ बम्बई—१।

दूर मेरा मीत है!

चाँदनी बिखरी धरा पर
चाँद हँसता है गगन पर
ढल रही है रात सारी पर मधुरी प्रीत है!
दूर मेरा मीत है!

कल्पना की अर्चना में
भावना तल्लीन है
हूक उठती है हृदय में पर न कोई गीत है।
दूर मेरा मीत है!

एक 'छाया' है नयन में
नीर भी भरपूर है
मिलन भी है विरह भी है, क्या निराली रीत है!
दूर मेरा मीत है!

समर्पण का अमिट अभिसार तो दो!

मिलन की रागिनी गाए, न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो!

बजी जब राग-भीनी प्राण-बंसी
जगीं जब मसृण किरणें स्वर्ण-अंशी
कि पग-नूपुर रँगीले बने चंचल
बजे चंचल उषा के मधुर छम छम
प्रणय की जय न देना तो न देना,
समर्पण का अमिट अभिसार तो दो!

मिलन की रागिनी गाए, न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो!

लहर में डूब जो सरिता-किनारा
कि सूखे कुछ तृणों का ले सहारा
थका चुपचाप सो जाता निमिष भर
न पथ-दर्शक, न पंथ विराम कोई
न फूलों की कभी शिर छाँह पाई,
खिज़ाँ की रंगमयी बहार तो दो!

मिलन की रागिनी गाए न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो!

जन्म-स्थान— दिल्ली ।
जन्म-तिथि— सन् १९२९ ।
प्रकाशित रचना— 'तूलिका' ।
विशेष—हिन्दी की तरुण पीढ़ी के कवि श्री रामानन्द 'दोषी' (सम्पादक 'कादम्बिनी') की



रेखा रामानन्द

सहधर्मिणी । हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं । वर्तमान पता—१०१७ रमेश नगर, नई दिल्ली—१५ ।

एक ध्वनि है जो न आती पास अपने
एक प्रतिध्वनि, जो न पीछा छोड़ती है
ज़िन्दगी नाता जगत् से जागरण से
राम जाने तोड़ती या जोड़ती है
बहकते हैं स्वर, बहकती हैं सदाएँ,
यह हठीले बैन को क्या हो गया है ?
उमड़ता सावन उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

मुसकराएँ हम चमन सब झूम जाए,
जोहती हैं बाट आने की बहारें
आज सुधि शायद तुम्हें आई इधर की
द्वार दस्तक दे रहीं हल्की फुहारें,
सहमता उपवन सहमती हैं हवाएँ,
इस हठी उपरैन को क्या हो गया है ?
उमड़ता सावन उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

कैसा प्यार तुम्हारा !

कैसा प्यार तुम्हारा यह मैं समझ न पाई ?
क्यों यह खेले खेल प्रणय का समझ न पाई ?

यह शत-शत जीवन का बन्धन
यह शत अभिलाषा का दर्शन;
शत-शत जीवन का नवल प्यार,
है शत जीवन का नव खुमार
कैसा प्यार तुम्हारा यह मैं समझ न पाई ?
क्यों यह खेले खेल प्रणय का समझ न पाई ?

कहाँ गये वे वचन तुम्हारे,
फिर आने की आशा हारे ?
राह निहारूँ बैठी अपलक
नेह सँजोऊँ बोलो कब तक ?
कैसा प्यार तुम्हारा यह मैं समझ न पाई ?
क्या यह खेले खेल प्रणय का समझ न पाई ?

हमारे प्रियतम प्राणाधार !

दिखाऊँ किसको आकर आज, हृदय की अन्तर्ज्वाला नाथ
थमे जाते हैं तन मन प्राण पक्षियाँ दौड़ रही हैं साथ
सँभालोगे कब आकर प्यार ?
बता दो प्रियतम प्राणाधार !

निरख प्रति दम अन्तर में प्राण न जाने होता क्या उत्पात
सँभाले नहीं सँभलता हाय हृदय का यह भीषण परिताप
उतारोगे क्या या यह भार ?
कभी हे प्रियतम प्राणाधार !

हृदय की विषम वेदना आज हृदय ही में मैं कर लूँ बन्द
चाहती किन्तु शब्द बन हाय निकल पड़ती क्यों यह स्वच्छन्द
हाय रोकूँ कैसे यह ज्वार ?
कहो कुछ प्रियतम प्राणाधार !

हाय भीतर-बाहर सब ओर चल रहा है यह झंझावात
चाहता बुझना जीवन-दीप न सह पाएगा अब आघात
तुम्हीं अब पहुँचा दो उस पार ।
देवता प्राणों के आधार !

जन्म-स्थान— कोरीघाट होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)। जन्म तिथि—१२ नवम्बर १९१२। शिक्षा—हाई स्कूल हिन्दी विशारद। विशेष—सन् १९४५ से कविता प्रारम्भ

विजयकान्ता श्रीवास्तव



की। कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं और अनेक कविताएँ बहुत-सी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। स्थायी पता—शान्ति निकेतन ६१ बेरीताल जबलपुर।

मुझको तुम न सताओ

ऐसी जली हृदय की होली, राख हुए अरमान
सुख ने मोड़ लिया मुख अपना, शाप बने वरदान

मैंने गाया फाग आग की लपट उठी दीवानी
मैंने फेंका रंग नयन से बहा उमड़कर पानी

हर्ष, हुलास, हास की होली, राग रंग की धारा
किन्तु व्यथ अब मेरे मन का डूब गया ध्रुव तारा

मन में व्यथा, व्यथा में छाई पाहुन की परछाईं
जिस छलिए ने आकर मेरी यह दुनिया भरमाई

ओ पावस के मादक झोंको, मेरे पास न आओ
प्रिय मन्दिर सूना है, आकर मुझको तुम न सताओ

टूट गया वह मादक सपना भग्न हुए अरमान
देकर मुझे गया है तिल-तिल जलने का वरदान

जन्म-स्थान—ग्राम कन्नौदा जिला सीतापुर (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि—सन् १९३४। शिक्षा—लखनऊ विश्वविद्यालय से इतिहास विषय लेकर प्रथम श्रेणी में एम० ए० की उपाधि प्राप्त की। फिर उस्मानिया विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० किया। कार्य—कुछ समय तक लखनऊ विश्वविद्यालय में ही अध्यापन



विद्या मिश्र

किया। बाद में गान्धी राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय नांदेड़ (महाराष्ट्र) में अध्यापिका रहीं। आजकल धर बंसीलाल बहुद्देशीय बालिका विद्यालय हैदराबाद में प्रधान अध्यापिका हैं। विशेष—पी-एच० डी० की उपाधि के लिए अनुसन्धान में रत हैं। स्थायी पता—२१-४-२४१ चारमहल हैदराबाद (आन्ध्र)।

जान सकोगे क्या ?

मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

मेरे हृदय-सिन्धु में भी जो समा न सका
जिसको मेरा नयन-नीर भी बहा न सका
आहों का मन्थन न जिसे बाँध सका
प्राणों का क्रन्दन न जिसे साँध सका
उस मेरी अनन्त पीड़ा को पहचान सकोगे क्या ?
मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जो नभ के वक्षस्थल पर तारे बनकर बिखरी
जो पुष्पों के आँचल पर शबनम बनकर निखरी
जो कोयल के स्वर की मधुमय पीर बनी
जो चातक के उर की उन्मादक टीस बनी
उसकी सीमा का कर अनुमान सकोगे क्या ?
मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जिस पीड़ा के तरु को हृतल में पाला-पोसा
आशाओं की बलि दे प्राणों के रस से सींचा
जिसके होने से मेरे जीवन का दुख दूना है
जिसको खो देने से मेरा जीवन ही सूना है
उसके प्रति मेरी ममता को जान सकोगे क्या ?
मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जन्म-स्थान—अमरावती। जन्म तिथि — १६ जून सन् १९१५। शिक्षा—बी० ए० बी० एड०। विवरण—विवाह के पूर्व विद्याध्ययन के दिनों में जब आगरा कालिज में पढ़ती थीं तो 'कुमुदिनी जोशी' के नाम से लिखती थीं। बी० ए० भी आगरा विश्वविद्यालय से



विद्या वसन्त मानेकर

किया। आजकल धुलिया के कार्वे कन्या विद्यालय में मुख्याध्यापिका हैं। बी० एड विवाहोपरान्त १९२६ में किया। बचपन में कुछ नाटक तथा कहानियाँ भी लिखीं। वर्तमान पता—द्वारा डॉ० वसन्त केशव मानेकर ३ बी गली धुलिया (महाराष्ट्र)।

गान लेकर क्या करूंगी।

श्राप ही दो तुम मुझे, मैं दान लेकर क्या करूंगी ?
रागिनी ही खो गई जब गान लेकर क्या करूंगी ?

आज स्वर्गिक रूप चाहे
छाँह बन भू पर उतर ले
और रवि की तप्त ज्वाला,
शर्मियों का रूप धर ले
पर न मेरी हार को वह
अब अधिक यों हास सकेगी
बुझ गई जो आग उसको
राख कब तक अल सकेगी

मृत्यु ही दो तुम मुझे मैं प्राण लेकर क्या करूंगी ?
श्राप ही दो तुम मुझे, मैं दान लेकर क्या करूंगी ?

भावना की पुण्य गंगा
आज दोनों पार बहती
डूब लूं चाहे उतर लूं
मुक्ति ही हर बार रहती
फिर भला जग से मुझे क्या
दे न दे मुझको अमरता
दे रही है आज मुझको
गरल की कटुता प्रबलता

ध्येय ही जब मिट चुका तो ध्यान लेकर क्या करूंगी ?
श्राप ही दो तुम मुझे मैं दान देकर क्या करूंगी ?
रागिनी ही खो गई जब गान लेकर क्या करूंगी ?

जन्म-स्थान— फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि— २८ अप्रैल १९२५। प्रकाशित रचनाएँ— 'जीवन-तरणि (कविता-संग्रह)। विशेष— इनके इस कविता-संग्रह की प्रशंसा सर्व श्री सनेही नाथ रामप्रसाद मरोड़ा वृन्दावन लाल वर्मा भगवतीचरण वर्मा



विद्या सक्सेना

तथा सोहनलाल द्विवेदी आदि हिन्दी के जाने-माने साहित्यकारों एवं कवियों ने की है। सुश्री सुभद्राकुमारी चौहान और महादेवी वर्मा से विशेष रूप से प्रभावित। स्थायी पता— १०७। ११० जवाहरनगर, कानपुर।

याद मेरी भूल जाना !

भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

मिलन के स्वप्निल प्रमोदवन-
में अचानक फँस गई थी,
मैं प्रणय के उन सुकोमल
बन्धनों में कस गई थी

आज जीवन में मुझे है वह अटल बन्धन छुड़ाना !
भूल पाओ तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

आज दृग में अश्रु कैसे
प्राण ! यह कैसी उदासी
याद है क्या विश्व-पथ पर
मिल गए थे दो प्रवासी

और हम-तुम गा उठे थे दो स्वरों से एक गाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

माँग तुमने ही सजाई थी
न प्रथम सुहाग भरकर,
मुसकराये थे दृगों में
तुम प्रणय का राग भरकर

आज भी उन ही करों से माँग को होगा सजाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

देखना तुमसे न छू पाए,
वह प्रणय-आलोक मेरा
है तुम्हींको चिर समर्पित
कल्पना का लोक मेरा

निभ सके तो अन्त तक मेरी अमानत को निभाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

दूर दृग से हो नहीं, मैं
दूर तुमसे जा रही हूँ
मैं तुम्हारे प्राण में
प्रतिबिम्ब अपना पा रही हूँ

चिर मिलन का मार्ग है यह, मृत्यु तो जग का बहाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

जन्म-स्थान— हसनपुर, (मुरादाबाद) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि— १६ जुलाई सन् १९१४। प्रकाशित रचनाएँ— 'अंकुरिता' 'माँ' 'सुहागिन' 'पुनर्मिलन' 'भारती' (कविता-संग्रह)। 'फ्रेम बिना तस्वीर' (नाटक)। विशेष—हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और अनन्य



विद्यावती 'कोकिल'

साधिका। आपकी रचनाओं की सर्वश्री माखनलाल चतुर्वेदी हजारीप्रसाद द्विवेदी डॉ धीरेन्द्र वर्मा तथा दिनकर आदि अनेक ख्यातिप्राप्त कवियों और आलोचकों ने भूरि भूरि प्रशंसा की है। वर्तमान पता—श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी।

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है।

तेरे इंगित हों अब मेरे तन कर्म की धारा,
तेरी इच्छा ही पग-गति का मेरी बनी इशारा,
अब मेरे बन्धन-बन्धन की ग्रन्थि खुल गई है!
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है!

अन्तरतम के तल से मया किसी ने मुझे पुकारा,
वस्तु-वस्तु में देख लिया वह मैंने रूप तुम्हारा
मुझको मेरा कर्म, ज्ञान औ भक्ति मिल गई है!
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है।

दुनिया ने बस पाकर मुझको, दिखा नहीं पथ पाते,
रुक-रुककर मेरे अन्तर में उलटे फिर जमाते,
मुझको मेरी परम अचंचल शक्ति मिल गई है!
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है!

परम शान्ति का यहाँ एक साम्राज्य बिछ गया है,
तेरी पूर्ण विजय पर अब विश्वास जम गया है,
मुझे अमर बनकर मेरी अनुरक्ति मिल गई है!
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है!

अमिट प्रेम की लहर निरन्तर बहती छिन-छिन है
मैं न जानती, मैं हूँ, तुम हो, या जग जीवन है!
जीवन-ज्ञात मिल गए, सारी मुक्ति मिल गई है!
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है!

मेरा तो सखि अंग अंग डूबा तुम भी डूबो हे
देश और देशान्तर डूबो डूबो जन-जन हे
आओ देखो यहाँ तुम्हारी तृप्ति मिल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

जन्म-स्थान— देवबन्द (सहारनपुर) उत्तर प्रदेश। जन्म तिथि — सम्वत् १९७१ विक्रमी। विशेष—पारिवारिक संस्कारवश शैक्षणिक संस्थाओं में उच्च शिक्षा तो प्राप्त नहीं कर पाईं पर जीवन-दर्शन और अनुभव में बहुत-सी डिग्रियाँ



विद्यावती कौशल

प्राप्त कीं। संगीत में विशेष रुचि है। मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान से आपके पति श्री कौशलप्रसाद जैन 'रजत पट' नामक एक सिने पत्र सम्पादित कर रहे हैं। स्थायी पता— 'रजत पट' कार्यालय महू कैंट (मध्य प्रदेश)।

मुसकान देने ही चली हूँ !

देव, तुमको आज मैं मधु गान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

मधुभरे सपने सजाए, कल्पना के इन क्षणों में
एक दिन साकार होंगे स्वर्णमय ये उन पलों में
आज तो प्रिय मान लो पहचान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

देव जीवन है समर्पण तो खुशी के राग गाएँ
विश्व में उल्लास भर दें औ नई दुनिया बसाएँ
काम लो कर आज जीवन-दान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

श्रान्त होंगे अशान्त होंगे भ्रान्त होंगे क्या न मग में
पर शिथिलता आ सकेगी एक पल को भी न पग में
लक्ष्य पाने का सबल अनुमान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

विद्यावती मालविका



जन्म स्थान— बिलाई (मध्य प्रदेश)। जन्म-तिथि— १४ अप्रैल सन् १९१० । शिक्षा—एम ए साहित्यरत्न। प्रकाशित रचनाएँ— 'श्रद्धा के फूल', 'पूर्णिमा' 'अर्चना' 'कामना' 'नारी हृदय', 'बौद्ध कला-कृतियाँ' 'भारतीय बौद्ध महिलाएँ' आदि । विशेष— इनमें से अन्तिम उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। 'अर्चना' पर मध्य प्रदेश सरकार ने प्रथम पुरस्कार प्रदान किया था । आपकी रचनाएँ हिन्दी के सभी प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । वर्तमान पता — बैरक नं० ४ मार्तण्ड कम्पाउण्ड, रीवा (मध्य प्रदेश)।

विरह-गीत ही गाया !

मन के विकल भाव ने आखिर, विरह-गीत ही गाया !

पल भर रुक जा नभ के बादल ! रुँधती मेरी बोली
आज आँसुओं में है मैंने अपनी प्रीति सँजो ली
तेरी पाँखों के संग मेरी साध चलेगी भोली
पहुँचाना सन्देश सलोने ! भरे आश की झोली
तेरी ही गति में तो मैंने है अनुराग बँधाया !
मन के विकल भाव ने आखिर, विरह गीत ही गाया !

सप्त रेणु में नहीं कहीं भी दूर्वा-दल की आशा
तेरी छाया में खो जाती ! रह न मन यह प्यासा,
समझ अरे अपेत नयन के जिसमें मौन निराशा
आँसू से भीगी पलकों में छिपी कौन-सी भाषा
प्राणों का सन्देश यही है एक साँस दुहराया !
मन के विकल भाव ने आखिर, विरह-गीत ही गाया !

इन आँखों में सदा रहेगा प्रिय का रूप सलोना
एक साज में सिमट रहा है मन का कोना-कोना
मोह स्वप्न की ममता में ही क्या पाना, क्या खोना,
नहीं हार या जीत अरे ! जब कोई अपना हो ना
कह देना दो भोम विकल से, 'तूने प्रिय पथ पाया !'
मन के विकल भाव ने आखिर विरह-गीत ही गाया !

जन्म-स्थान—गौर(पुखरायां) कानपुर। जन्म तिथि—सन् १९१८। शिक्षा—घर पर ही। विवाह के कुछ समय बाद ही वैधव्य। विशेष—पितृ-वन की भाँति ससुराल के सब लोग भी विद्या-व्यसनी। कविता लिखना १९१४ से प्रारम्भ। पहली कविता १९४७ में काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'चेतना' में प्रकाशित हुई। अभी तक लगभग दो हजार



विद्यावती मिश्र

कविताएँ प्रकाशित। कविताओं के अतिरिक्त सामयिक रचनाएँ, संगीत रूपक, अवधी रचनाएँ, बालकों के लिए पद्य कथाएँ भी लिखीं। प्रकाशित रचनाएँ—'उर्वाणि' 'प्रतीक्षा' 'श्रद्धा' 'मुक्ति' 'कठोपनिषद् (पद्यानुवाद)। 'प्रतीक्षा तथा 'मुक्ति' उत्तर प्रदेश-सरकार द्वारा पुरस्कृत। वर्तमान पता—द्वारा श्री शिवशंकर मिश्र २१ राजेन्द्रनगर लखनऊ।

प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

इस जग का कण-कण बदले पर,
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !
पूजा का उत्साह न बदले !

मन्दिर हुई यहीं पर मेरे,
अन्तर के भावों की भाषा
इसे स्वाति-सा समझ, तृषा को
तुष्टि समझता चातक प्यासा

जीवन का कण-कण बदले पर,
इस का पुण्य प्रवाह न बदले !
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

यह अर्चन के फूल सुकोमल
अक्षत, शुचि चन्दन अभिनन्दन
श्वासों की रोली आँसू की
अञ्जलि, प्राणों का आमन्त्रण

मन्दिर का कण-कण बदले पर,
मेरे प्रभु की चाह न बदले !
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

वहाँ पहुँचने से प्रिय मुझको
प्रतिदिन चलने की तैयारी
और मधुर आशा आएगी
एक दिवस मेरी भी बारी

मधुर मिलन का क्षण-क्षण बदले,
किन्तु विरह की आह न बदले !
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

जन्म स्थान—कानपुर (उत्तर प्रदेश) जन्म तिथि—सन् १९१४। निधन-तिथि—२४ मई १९६१ (दिल्ली में)। शिक्षा—साहित्यरत्न। विशेष—'तेज' दैनिक (उर्दू) के भूतपूर्व सम्पादक और दिल्ली राज्य के

स्व० विद्यावती शर्मा



वर्तमान जन-सम्पर्क अधिकारी श्री रामलाल वर्मा की धर्मपत्नी। दिल्ली की प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्री। आप अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की सदस्या भी रही थीं।

आज जीवन-प्राण आए !

हो रहा मम उर तरंगित आज फिर मधु गान गाए !
आज जीवन प्राण आए !

जुड़ गए जो तार टूटे
बज उठी फिर मूक वीणा
मिट गए सन्ताप हिय के
साधना कर मित नवीना

मिल गए दो उर वियोगी नेह का वरदान पाए !
आज जीवन-प्राण आए !

दूर कर घन कालिमा को
लालिमा छाई गगन में
हो रहा अनुराग अनुभव—
आज कितना शुभ मिलन में

नृत्य करते मोर भू पर व्योम में घनश्याम छाए !
आज जीवन प्राण आए !

टिमटिमाते दीप की लौ
जगमगाई स्नेह पाकर
मुग्ध हो आए शलभ फिर
प्यार की आशा लगाकर

जो विकल थे भाव उर में, आज फिर वे खिलखिलाए !
आज जीवन प्राण आए !

बन गई अभिसारिका-सी
खिल उठीं आशा-लताएँ
पवन बह-बह प्रेम-निधि से
ले रहा अगणित बलाएँ

मधुप ने मंजुल स्वरों में राग फिर नूतन सुनाए !
आज जीवन प्राण आए !

जन्म-स्थान—आरा (बिहार)। जन्म-तिथि—सन् १९०३। शिक्षा—घर पर ही। विशेष—डुमरांव स्टेट के निवासी स्व० मुन्शी लक्ष्मीप्रसाद के द्वितीय पुत्र श्री मदनमुकुन्द से विवाह। आपका परिवार अब भी 'मुन्तखिब स्टेट' कहलाता है। पटना विश्वविद्यालय के 'बोर्ड आफ स्टडीज' की सदस्या मनोनीत

विमला देवी 'रमा'



होने वाली बिहार में सर्व प्रथम महिला। आपकी लिखी हुई कई पुस्तकें 'पटना विश्वविद्यालय' में पाठ्य-पुस्तक रह चुकी हैं। काशी-महिला-मण्डल की ओर से 'साहित्य चन्द्रिका' उपाधि से विभूषित। वर्तमान पता—७० नं बस्ती कीटगंज इलाहाबाद—३।

प्रिय घोरे से तू माना !

ठहर-ठहर कर करुण वेदना, ठण्डी आहें भरती है,
किसका कौन कहाँ पर बसता किसको खोजा करती है

निर्मोही झरने से झरकर विरह नीर नित झरता है,
सबको पीड़ा को वह भहरह निज मञ्चल में भरता है,

किसकी छवि को हिय में रखकर, फूला नहीं समाता है
किसका स्मरण मात्र व्याकुल कर पागल हाय बनाता है,

सिवा देखने के वह प्रतिमा, और न मैं कुछ कर पाई,
साथ लिये लज्जा को अपने मैं अबोध घर से आई,

यहाँ देखकर दृश्य निराले मैं अपने को भूल गई,
प्रीति प्रतीति पुनीत देखकर, मानस-कलियाँ फूल गईं,

भूल है देव तुम्हारा पूजन सविधि न मैंने कर जाना !
किन्तु विनय अन्तर में मेरे प्रिय घोरे से तू माना !

जन्म-स्थान—रामपुर (मध्य प्रदेश)। जन्म-तिथि—१ सितम्बर १९३६। शिक्षा—साहित्यरत्न नागपुर विश्वविद्यालय से एम॰ ए॰ (हिन्दी)। आगरा विश्व विद्यालय से 'रामचरित मानस का लोकतात्विक अध्ययन' विषय पर शोध-कार्य कर रही हैं। विशेष—सन् १९५९ से ६१ तक बड़ौत और कस्मस



विमला राजेन्द्र

नगर के विश्वविद्यालयों में प्राध्यापिका रहीं। सन् १९६१ में बिहार के लोकप्रिय कवि श्री राजेन्द्रकिशोर से विवाह हो जाने के उपरान्त जयप्रकाश महिला कालिज छपरा में प्राध्यापिका हैं। रचनाएं—'श्रो प्रियम्बर (कविता-संग्रह) प्रेस में है। स्थायी पता—राजेन्द्र भवन ममेमपुर, छपरा (बिहार)।

मौन तोड़ो पिया !

छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

अभी तक जो कहा
जैसे अनकहा रह गया
फूटकर आवेग—
मन में अनबहा रह गया
द्वार खोलो पिया आने दो हवा घर में !
छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

बहुत पीड़ा-सुख सँजोया
तृषा पीती रही
आह इस सुख की अधिकता
अब न जाती सही
मौन तोड़ो पिया बहने दो तृषा घर में !
छन्द खोलो पिया बोलो अर्थ के स्वर में !

हमें कितने पर्व
उठ-उठकर बुलाते रहे
हम निरर्थक वीतरागी
मन मनाते रहे
आओ डूबें पिया, दोनों कामना-सर में !
छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

जन्म-स्थान—गोंडा (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि—सन् १९३०। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी) साहित्यरत्न तर स्वती साहित्य सुधाकर। विवाह—सन् १९४८ में एक प्रसिद्ध इंजीनियर के साथ

विमला श्रीवास्तव



किन्तु सन् १९५० में उनकी असामयिक मृत्यु। विशेष—आजकल सेकसरिया गर्ल्स इण्टर कालिज गोंडा में प्राध्यापिका हैं। वर्तमान पता—के एस हास्पिटल बमनटवा गोंडा उत्तर प्रदेश।

सपना कब साकार हुआ रे!

किसी एक दिन मन उपवन की कलिका सुरभित साँस से
झूम उठा था कोना-कोना स्नेह-सुरभि विश्वास से
मस्त हृदय की हुई सारिका मधु ऋतु की मनुहार से—
आशा के पवि फूल उठ झूमे कवि के मन के भाव से
किन्तु सुमन जब चननगा हुए दूर तुरत मधुमास हुआ रे!
सपना कब साकार हुआ रे!

एक दिवस मन की धरती पर आई थी बरसात भी
घिरी उमड़ क्षण भर सपना बन मिटा तपन का पाश भी
फूट उठी गीतों की कोमल भाषा मन का भार भी—
मोती बनकर बरस रही थी नभ से मन की बात भी
किन्तु सुख बहते नैनों से पावस का सिंगार मिटा रे!
सपना कब साकार हुआ रे!

एक दिवस मिल गई हृदय को अचल हिमाचल-सी दृढ़ता
नभ-सा था विस्तार मिल गया धरती-जैसी स्थिरता
भागा दम्भ सिमटे अपना लक्ष्य स्वयं मन गढ़ता—
लगा कि साधना में जीवन सदा रहेगा सधता
किन्तु चलना ने झकझोरा दूर तुरत विश्वास हुआ रे!
सपना कब साकार हुआ रे!

जन्म-स्थान—मुरादाबाद। जन्म-तिथि—संवत् १९५६ वि०। निधन-तिथि—२६ नवम्बर १९५५। शिक्षा—साहित्य रत्न हिन्दी-प्रभाकर। विशेष—कानपुर में विवाह के कुछ साल बाद ही वैधव्य-दुःख भोगना पड़ा। तदुपरान्त कुछ काल तक कानपुर में सनातन धर्म कन्या विद्यालय में प्रधानाध्यापिका रहीं। साहित्यिक कार्य—सं० १९९१ वि० में 'मीरा पदावली' का सम्पादन किया जो हिन्दी भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ। अप्रकाशित रचनाएं—'किंकिणी' (काव्य संग्रह) और 'दुखिया दुलहिन' (नाटक)।

स्व० विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु'



सूनेपन में तुम आए !

आशा के भग्न भवन में,
प्राणों का दीप जलाए !
उत्सुक हो स्वागत-पथ पर
बैठी थी ध्यान लगाए !
उठती तरंग-माला में
शरदिन्दु-किरण फँसती थी !
हिलती मिलती इठलाती
पगली सरिता हँसती थी !
वे नील गगन में तारे,
मुक्ता का तार पिरोते !
मेरी सूनी कुटिया में
आँसों से झरते सोते !
स्नेह-सिन्धु उफनाता
जर्जर है तरणी मेरी !
क्या कभी लगेगी तट पर
अब छाई रात अँधेरी !
प्रियतम क्या भूल सकूँगी
सूनेपन में तुम आए !
सुरभित पराग को लेकर
कलियों के दल बिखराए !

जन्म-स्थान—लखनऊ। जन्म-तिथि—१९४१। शिक्षा—बदायूँ से हाई स्कूल करने के उपरान्त शेष शिक्षा लखनऊ में। १९६० में लखनऊ-विश्वविद्यालय से दर्शन-शास्त्र में एम० ए० किया है। आजकल रिसर्च में व्यस्त हैं। विशेष—

वीणा मिश्र



अपनी माता श्रीमती तारा मिश्र से प्रभावित और प्रेरित। चित्र कला और शिल्प कला में भी रुचि। स्वभाव से एकान्त-प्रिय। कान्यकुब्ज कालिज लखनऊ में जीव-विज्ञान के प्राध्यापक श्री शिवाराम मिश्र की पुत्री। स्थायी-पता—४ भीम रोड लखनऊ।

प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

मौन ही अभिव्यक्ति मेरी
मूक मेरी भावनाएँ
अचल निस्पन्दित हुई हैं
हृदय की सब कल्पनाएँ
रुँध गया है कण्ठ कैसे गीत मैं तुमको सुनाऊँ ?
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

कुछ अनोखी उलझन
मन का प्रिय आक्रान्त-सी है
नयन जल में डूबते-से
शब्द आ पाते नहीं हैं
किस तरह कैसे तुम्हें मैं हृदय की भाषा सुनाऊँ ?
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

प्रबल झंझावात मधुतम
दीप की लौ काँप जाती
सिर पटकती लहर फिर भी
कूल से कुछ कह न पाती
प्रिय तुम्हें मैं आज कैसे बात मन की यह सुनाऊँ ?
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

जन्म स्थान—लखनऊ। जन्म-तिथि—१६३८। शिक्षा—इण्टर साहित्य रत्न। विशेष—दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सह सम्पादक श्री शान्ति त्रिवेदी की धर्मपत्नी। लखनऊ (मनीलाल) और प्रयाग में क्रमश प्रसिद्ध



वीणा त्रिवेदी

साहित्यकार श्री सुमित्रानन्दन पन्त तथा श्रीमती महादेवी वर्मा के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। स्थायी पता—द्वारा श्री ... भरतपुर (राजस्थान)।

आज भेजती तुमको पाती !

ओ मेरे तन-मन के साथी !
आज भेजती तुमको पाती
तुमको काश भुला मैं पाती
मैं भी मनजाने को जाती !

दूर गए तुम आस दे गए
पीर भरी दो साँस दे गए
मुसकानों की राह बताकर
मंजिल का विश्वास दे गए
'आऊँगा कल' यह कह करके
मीठी-मीठी प्यास दे गए
बीते दिन औ' बीती रैना
बाट निहारत थक गए नैना

सावन आया सजन न आए
कैसे मुझको रिमझिम भाती ?
ओ मेरे तन-मन के साथी !
ओ मेरे जीवन की बाती !

जब आई गीतों की बेला
रोए मन का मीत अकेला
कूल-कूल पर नौका पूछे
किसने बेला यह अलबेला

पाँव थके, पर पन्थ न बीते
मेरी बोझिल पलक थक गई
झीना आँचल रोक न पाया
जीवन की सब साध मिट गई!

मत भटकाओ अब आ जाओ
पीड़ा मुझसे सही न जाती!
ओ मेरे तन-मन के साथी!
आज भेजती तुमको पाती!

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। जन्म तिथि—सन् १९१२। शिक्षा—गुरुकुलीय। अब एम० ए० करने का विचार है। विशेष—हिन्दी के ख्यातिप्राप्त कवि और साहित्यकार डॉ० धर्मवीर भारती की बहन। एक उपन्यास 'नींद का फूल'



वीरा

अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है। कहानियाँ तथा भी कविताएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। पूरा नाम वीरबाला है पर लिखती वीरा नाम से ही हैं। वर्तमान पता—द्वारा डॉ० धर्मेन्द्रकुमार ९१४४ धर्मपुरा दिल्ली।

मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

गर्मी की हल्की सन्ध्या यों—
झाँक गई मेरे आँगन में
भरी केवड़े की कुछ बूँदें
किसी नवोढ़ा के तन-मन में
लहर गई सतरंगी चूनर ज्यों तन्वी के मृदुल गात पर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

मेरे हाथ रची मेंहदी उधर
बगिया में बौराया फागुन
मेरे कान बजी वंशी धुन
घर आया मनचाहा पाहुन
एक पुलक प्राणों में चितवन एक नयन में मधुर-मधुरतर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

कोई सुन्दर स्वप्न सुनहले—
आँचल में चन्दा बन आया
कोई भटका गीत उनींदा
मेरी साँसों में टकराया
छिटक गई हो जैसे जूही मन प्राणों में महक-महक कर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

मेरा चंचल गीत किलकता
घर आँगन देहरी-दरवाजे
दीप जलाती साँझ उतरती
प्राणों में शहनाई बाजे
अमराई में बिखर गए री फूल सरीखे सरस-सरस स्वर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

मैं छन्दों की रानी हूँ !

मैं छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

आज पपीहे की बोली में प्यार भरा संगीत है
सावन बनी बरसने आई मेरे मन की प्रीत है,
जब कि बादलों में भी सौ-सौ शहनाई के राग हैं
कैसे कह दूँ हार उसे जो मेरे मन की जीत है
मैं मतवाली बूँद गगन की मादक राग मल्हार तुम !
मैं छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

तुम आए आ गईं बहारें पतझर में मधुमास खिला
आए तुम्हारे पथ पर पल-पल मेरे मन का दीप जला
प्रहर प्रहर बन गए प्रतीक्षा के युग अब तक तुम न मिले
शब्द शब्द हो गया तुम्हारा गायन जो भी स्वर निकला
मैं चिर प्यास प्रगति की मेरी मंजिल के आधार तुम !
मैं छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

राह सँवारेगी धरती चूमेगी हारे-थके कदम
चलते-चलते भार तिमिर का कभी कहीं तो होगा कम
सच मानो उस अन्धकार में तुम जिस दिन मुसका दोगे
मुसका देगा चाँद गगन का रात सुना देगी शबनम
आए हो तो लौट न जाना आकर मेरे द्वार तुम !
छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

राग मनाएँगे दीवाली, मेरे आँगन चाँद-सितारे
उड़ चलेंगे गीत-गगन में हम आशा के पंख पसारे
मानों स्वर्ग निछावर होंगे छोटी-सी कुटिया पर मेरी
नित्य नीड़ पर मेरे आकर फेरी दंग साँझ-सकार

तोड़ न देना मेरी आँखों का सपना सुकुमार तुम !
मैं स्वप्नों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

जन्म-स्थान— दिल्ली ।
जन्म-तिथि—मार्च १९२२ ।
शिक्षा—दिल्ली में ही हिन्दी-प्रभाकर, साहित्य रत्न, बी. ए. ।
विशेष—सन् १९४० में हिन्दी के प्रमुख गीतकार और कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर से विवाह । बचपन से ही तुकबन्दी



शकुन्त माथुर

करने और गाने लिखने का शौक था । कुछ प्रारम्भिक रचनाएँ 'अर्जुन' में प्रकाशित हुई थीं । 'नई कविता' की कवयित्रियों में अग्रणी । रचनाएँ—'चाँदनी चूनर' । स्थायी पता—५२/५१ देशबन्धु गुप्ता रोड करोल बाग नई दिल्ली-५ ।

डर लगता है !

मधु से भरे हुए मणि घट को खाली करते डर लगता है !
जिसमें सारा सिन्धु समाया
मेरे छोटे जीवन भर का
दूने बरतन में उँडेलत
एक बूँद भी छिटक न जाए
कहीं बीच में टूट न जाए
छूने भर से जी कँपता है !
मधु से भरे हुए मणि-घट को खाली करते डर लगता है !
इस धरणी की प्यासी आँखें
लगीं इसीकी ओर एकटक
आई जग में सुधा कहाँ से
जग का भी तो काम पड़ा है
प्राण बिना मिट्टी-सा यह तन
भार उठाऊँ इसका कैसे
छोड़ नहीं पाती फिर भी तो
जरा उठाते जी हिलता है !
मधु से भरे हुए मणि-घट को खाली करते डर लगता है !
तन गरमाया, लू-लपटों से
धीरे-धीरे जला जा रहा
अभी बहुत बाकी जलने को
घट में मेरे पड़ी दरारें
साहस भाग दूर भगता है !
मधु से भरे हुए मणि घट को खाली करते डर लगता है !

जन्म-स्थान—ग्राम बिल-हरी (जबलपुर)। जन्म-तिथि-दीपावली सन् १९११। शिक्षा—बचपन में ही पिता का वियोग हो जाने के कारण अधिकांश शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। विवाह—सन् १९३१ में हिन्दी के मधुर गीतकार श्री नर्मदाप्रसाद खरे के साथ विवाह हुआ। अभी तक कोई कविता संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ किन्तु



शकुन्तला खरे

'हिन्दी काव्य की कोकिलाएँ' तथा 'हिन्दी काव्य-गगन की तारिकाएँ' नामक पुस्तकों में विस्तार से चर्चा हुई है। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'कवि और काव्य' में भी आपके कवित्व को सराहा है। स्थायी पता—द्वारा श्री नर्मदा प्रसाद खरे लोक चेतना प्रकाशन जबलपुर (म० प्र०)।

मैं तो उन पर बलिहार गई !

वेणी में तारक-फूल गूंथ
निशि ने मेरा शृङ्गार किया
राका-शशि ने घन घीस-फूल
छवि का मोहक संसार दिया
ऊषा उनकी पद-लाली से हँस मेरी माँग सँवार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

बिन माँगे प्यार-दुलार दिया
सम्मान और सत्कार दिया
रह गई मुक्ति करबद्ध खड़ी
मैंने बन्धन स्वीकार किया
वे हार-हारकर जीत गए मैं जीत जीतकर हार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

उनकी छाया में पली सदा
उनके पीछे ही चली सदा,
उनके ही जीवन-मन्दिर में
मैं मोम-दीप-सी जली सदा,
मैं उनको पा जग भूल गई अपने को स्वयं बिसार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

कब चाहा प्यार-दुलार मिले
फूलों का मृदु मल-हार मिले
पूजा-अर्चन ही ध्येय रहा
बस पूजा का अधिकार मिले,
उनके श्री चरणों पर हँसकर मैं तन-मन सब-कुछ वार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

जन्म-स्थान— काशी। जन्म-तिथि—१ जुलाई १९२९ शिक्षा—हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से एम० ए०। विशेष—हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार तथा कहानी-लेखक श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' की पत्नी। आज-कल आप लेडी श्रीराम कालिज

शकुन्तला शर्मा



फॉर विमेन नई दिल्ली में हिन्दी प्राध्यापिका हैं। प्रकाशित रचनाएँ— 'अंजलि' (कविता संग्रह) 'चाँद सो गया' (कहानी संग्रह) 'आधुनिक काव्य में सौन्दर्य भावना' (समीक्षा)। वर्तमान पता—लेडी श्रीराम कालिज फॉर विमेन लाजपत नगर, नई दिल्ली।

कौन वह पुकार गई ?
अँधियारे अँगना में दिवरा-सा वार गई !
कौन वह पुकार गई ?

सूखे दो तिनकों में गुम-सुम-सा बैठा है
पाँखों में कपि भूख जीवन से रूठा है
नीड़ विटप ठूँठा है
ऐसे मन-सुगना को फुगना-सा मार गई !
कौन वह पुकार गई ?

पत्तों की फुनगी पर सिहरन अँधियारे की
टहनी पर सुगबुग है पंछी बनवारे की
पंखों मनहारे की
सबकी मनबीती भिनसार को गुहार गई !
कौन वह पुकार गई ?

आँगनों की छातों पर आँसू का झूमा है
हाठों के दोसे पर प्राण बहुत झूमा है
पंखों में झूमा है
साँसों की खिड़की झट प्यार से सँवार गई !
कौन वह पुकार गई !

बेला के गजरे से सागर भी तोड़ा था
तट की चट्टानों ने फूल-फूल तोड़ा था
गति ने मुख मोड़ा था
रेत की गलबाँही दे चुप चुप दुलार गई!
कौन वह पुकार गई!

सपनों के मचवे पर भावों के धारे पर
आशा के बिरवे पर प्यार के टिकारे पर
भोर के निहारे पर
रूप, रस औ' गन्ध के फुहारे फुहार गई!
कौन वह पुकार गई?

रह रहकर गिरते हैं जाल उदासी के
दुख से धुँधियाए-से भाप की उसासी में
फाँस से साँसों में
अम्बर के मटियाले बादल सँवार गई!
कौन वह पुकार गई?

ऐसी फुनफुनगी को पाना भर जीवन है
बैठे जिस डाली पर उसमें ही कम्पन है
गीतों का नर्तन है
मुट्ठी में बाँधो तो पारे-सी पार गई!
अँधियारे अँगना में दियरा-सा बार गई!
कौन वह पुकार गई?

जन्म-स्थान— झालरा पाटन (राजस्थान)। जन्म-तिथि—२४ जून १९२१। शिक्षा—साहित्यरत्न एम० ए० (राजस्थान-विश्वविद्यालय से)। प्रकाशित रचनाएं — 'उन्मुक्ति' (पद्य-काव्य) 'सती सीता और मानस ज्योति' (काव्य रेखाएँ)। विशेष—द्विवेदी-काल



शकुन्तलाकुमारी 'रे

साहित्यिक स्व० गिरिधर शर्मा नवरत्न की सुपुत्री। अपने अध्ययनशील पिता की छत्र छाया में आपने संस्कृत-साहित्य का भी पारायण किया है। मातृभाषा गुजराती होने के कारण गुजराती में भी लिखती हैं। वर्तमान पता— नवरत्न सरस्वती भवन' झालरा पाटन (राजस्थान)।

इतनी कृपा कर दो !

पा तुम्हारा स्नेह अविचल
जायँ धुल सब पाप-पंकिल
विमल अपना ध्यान दे, भव-ताप सब हर लो !
इतनी कृपा कर दो !

दो मुझे पद रेणु पावन
हो उठे यह धन्य जीवन
पद-नमित मम विनत सिर पर निज चरण धर दो !
इतनी कृपा कर दो !

पा तुम्हें हो प्राण निर्भय
चरण में हो चेतना लय
भव-थकित मेरे सुतनु को निज शरण में लो !
इतनी कृपा कर दो !



जन्म-स्थान — जबलपुर
जन्म तिथि—सन् १९१४। विशेष—प्रख्यात मजदूर-नेता स्व० हरिहरनाथ शास्त्री की धर्म-पत्नी। स्व० सुभद्राकुमारी चौहान और अपनी बड़ी बहन राजकुमारी श्रीवास्तव के द्वारा साहित्यिक और राजनीतिक भावनाओं का प्रस्फुटन। १० वर्ष की आयु में 'सावित्री सत्यवान' नामक छोटा सा काव्य

शकुन्तला श्रीवास्तव

लिखा। प्रकाशित पुस्तकें—'रज कण' नामक कविता-संग्रह और 'बालसुधा' बालोपयोगी कविताएं। अभी तक लगभग ३ कहानियां १५ लेख और लगभग २० कविताएं लिखी हैं। 'माधुरी' 'सुधा' 'चाँद' 'प्रेमा' 'सरस्वती' 'समाज' 'जनता' और 'भारतम' आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। स्थायी पता—११।१६४ ग्वाल टोली कानपुर।

कितना लम्बा पथ जीवन का !

चलते-चलते पैर थक गए, पर न रुका क्रम इसका !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

यह बढ़ने को कहता प्रतिपल
किन्तु नष्ट हो चुका सकल बल
मधु नयन से झरते अविरल
अग्नि-परीक्षा का है आदी करता कष्ट सहन का।
कितना लम्बा पथ जीवन का !

क्या जीवन भर होगा चलना
उफ विधि की यह कैसी छलना
इच्छा रहित सर्वदा जलना
तार क्षीण ज्योति से दिखलाते हैं मार्ग विपिन का।
कितना लम्बा पथ जीवन का !

किन्तु घटा नभ में घिर आई
कुछ भी देता नहीं दिखाई
चारों ओर अंधेरी छाई
प्रश्न उपस्थित है सम्मुख अब जीवन और मरण का !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

प्राण विवश रह रह घबराते
हिमकर अंशु उधर मुंह बाते
कटक पग में चुभ-चुभ जाते

मन आहत है छिन्न-भिन्न है अग शिथिल इस तन का !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

लौट पड़ूँ, पर पथ है बाकी,
संगी-साथी न है एकाकी,
है निशीथिनी हाय अमा की
कहीं नहीं अवलम्ब दिखाई पड़ता मुझको तिनका !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

किस मतलब से मानव आया ?
क्यों इस पथ पर कदम बढ़ाया ?
अपना साहस सकल गँवाया।
आवाहन किस भाँति करूँ लेकर अधीर मन उनका।
कितना लम्बा पथ जीवन का !

प्राची में जब आए दिनकर
उठ होऊँ चलने में तत्पर
रुक न कहीं भी जाऊँ थककर
पहुँच अन्त तक सदुपयोग कर डालूँ अन्तिम क्षण का !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

जन्म-स्थान—कोटा (राजस्थान)। जन्म-तिथि—१५ दिसम्बर, १९१५। शिक्षा—एम॰ ए॰ (हिन्दी) नागपुर विश्वविद्यालय से। पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा (प्रयाग विश्वविद्यालय से) प्रकाशित रचनाएँ—'दीप' 'मुक्ति के स्वर' 'चाँद इतना हँसा' (कविता-संग्रह)। इनके अतिरिक्त



शकुन्तला सिरोठिया

लगभग ३० बालोपयोगी तथा प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। विशेष—सन् १९३८ से अध्यापन-कार्य में निरत हैं। पिछले ९ वर्ष से राजकीय शिशु प्रशिक्षण महाविद्यालय इलाहाबाद में कला की अध्यापिका हैं। वर्तमान पता—१८ बी॰ बाई का बाग इलाहाबाद।

मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

घनी जब अँधेरी गगन मेघ छाते
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

उदासी लिये चाँदनी मौन आती
घिरी मेघ से रात भी छटपटाती
दुखी हो पपीहा पिया का बुलाते ।
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

सिहरती उमंगों भरी वायु आती
किसी की मधुर सुधि भरी गुनगुनाती
जहाँ धूलि-कण पुष्प बन मुसकराते !
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

घुमड़ती घटाएँ अँधेरा डराता
कहीं का पथिक पन्थ भी भूल जाता
किसी के नयन मधु बरसात लाते ।
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

रजत सुनहरी ऊर्मियाँ भी पहनकर
नदी चल पड़ी विघ्न सारे सहन कर
उमड़कर किनारे उसे बस लाते ।
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

जन्म-स्थान—कप (पश्चिमी पाकिस्तान)। जन्म-तिथि—१५ अगस्त १९४१। शिक्षा—मैट्रिक हिन्दी प्रभाकर। विनोद—कविताएँ, गीत लिखने



शान्ता त्यागी

और गाने में विशेष अभिरुचि। पुस्तकें खरीदने और पढ़ने का भी शौक है। स्थायी पता—२६१७ नारंग नगर दिल्ली ६।

मौन तोड़ो इस तरह मत चुप रहो
और मैं कितना सहूँ यह तो कहो
याचना मेरी मरुस्थल हो गई
चेतना की धार बनकर तुम बहो

तुम न पिघलो तो अधूरा अर्घ्य लेकर क्या करूँ ?
कर रही अर्पित तुम्हारे द्वार पर लो ज़िन्दगी !
देवता ! अब तो करो स्वीकार मेरी आरती
अर्चना के दीप की लौ काँपकर बुझने लगी !

जन्म-स्थान—भागलपुर। जन्म तिथि—१८ नवम्बर सन् १९२१। शिक्षा—एम ए० (मनोविज्ञान)। विवाह—सन् १९४१ में डॉ० नर्मदेश्वर प्रसाद से विवाह। रचनाएँ—



शान्ता सिन्हा

'छायानागर सूने' (कविता संग्रह) प्रकाशित। 'सिम्फनी' (कहानी-संग्रह) प्रेस में। वर्तमान पता—द्वारा डॉ० नर्मदेश्वरप्रसाद रोड नं० ६ को राजेन्द्रनगर पटना।

हार एक अनेक में !

मगन पवन डोले मन के बाजूबन्द खोले
ओ बन्धु रे !
इन्द्र धनु छाँव में, नैया को बाँध दे !

चाँद झनझना उठा
उन्मन है गगन-गगन
गुनगुना रही नदी
दीप जले नयन-नयन

जय-जयवन्ती स्वप्न-सखे मृग-कल्पना आलाप से
इन्द्र-धनु छाँव में नैया का बाँध दे !

ऊँघता क्षितिज धाम
स्वप्न आँक रही पहाड़ियाँ
बावरा अहेरी चाँद
टेर रहा परछाइयाँ

यमुना निकुञ्ज छाँव भटका हिरण बाँध दे
इन्द्र धनु छाँव में, नैया का बाँध दे !

तलहटी में सूर्य लिये
डोल रही प्राणमन-वन
कब आयगा अतिथि प्रिय
मरण होगा श्याम जन्म ?

तमस रक्त-सिंधु-पार मुक्ति-द्वार खोल दे!
इन्द्र-धनु छाँव में नया को बाँध दे!

द्वार एक अनेक में
नैन एक दृष्टि अनेक
युग-युग की प्यास लिये
नीड़ एक स्वप्न अनेक

भर दे मुझे एक स्वर अंग अंग तार बाँध दे
इन्द्र-धनु छाँव में नया को बाँध द!

जन्म-स्थान—ग्राम रामपुर (जौनपुर) उत्तर प्रदेश। जन्म तिथि—१० जुलाई १९२२। शिक्षा—घर पर ही। उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकीं। विषय—बचपन से ही घर में शिक्षा का वातावरण मौजूद था। उसका लाभ इन्हें भी मिला। ब्रजभाषा पद्यों



शान्ता सिनहा

और खड़ी बोली में अनेक कविताएँ लिखी हैं। 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी' पर बहुत से गीत लिखे हैं। जिन्हें शीघ्र ही पुस्तकाकार प्रकाशित किया जायगा। वर्तमान पता—द्वारा श्री ब्रजराज सिनहा, बर्न्स स्टैण्डर्ड (इण्डिया) जी० टी० रोड धनबाद।

भला मुझसे दूर कब थे ?
साधना भी स्वय ही मैं स्वयं ही वरदान हूँ मैं !

भक्ति भी हूँ भावना भी
सिद्धि भी हूँ साधना भी
अर्चना भी वन्दना भी स्वय ही भगवान् हूँ मैं !

यह अटल विश्वास हूँ मैं
और प्रणयोच्छ्वास हूँ मैं
देवता हूँ किन्तु मैं ही स्वय ही पाषाण हूँ मैं !

पुष्प हूँ उपहार की मैं
भाव हूँ मनुहार की मैं
वेदना हूँ चिर निरन्तर व्यथित उर का गान हूँ मैं।

झूमती हूँ आप ही में
खोजती हूँ आप ही मैं
और पाकर आप ही में एक बेसुध प्राण हूँ मैं।

सदय थे तुम क्रूर कब थे ?
भला मुझसे दूर कब थे ?
देव थो थे हम न दूषित स्वय म रतिमान हूँ मैं !
साधना भी स्वयं ही मैं स्वय ही वरदान हूँ मैं !

जन्म-स्थान—बरेली (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि—२१ जुलाई सन् १९२०। शिक्षा—परम पति श्री विश्वम्भरनाथ अग्रवाल एम० ए० साहित्य विशारद के सहयोग से गृहस्थ जीवन में भी साहित्य रत्न तथा एम०ए० की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। साहित्यिक कार्य—आपके लेख आदि भी [illegible]



शान्ति अग्रवाल

'हिन्दुस्तान' और दैनिक 'प्रताप' आदि पत्रों में छपते रहे हैं। 'बाल भारती' तथा सिनेमा में भी आप कविताएं लिखती रही हैं। प्रकाशित पुस्तकें—'स्वर्णकणा-प्रयाग' 'बालगीता' (बालोपयोगी कविताओं के संग्रह) 'गौरव पथ' (लेखों का संग्रह)। स्थायी पता—३९ / २ सिविल लाइन्स बरेली।

डगर मिल गई !

तुम मिले प्यार की साधना खो गई
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

भावना के विहग आज उन्मुक्त हो
कल्पना के परों को पसारे हुए
चल पड़े नील नभ में चहकते हुए
उड़ धरा से गगन के किनारे छुए
कामना कौन-सी दीप खोई हुई—
चेतना यह युगों की मगर मिल गई !
तुम मिले प्यार की साधना खो गई
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

सिन्धु से भी विशद व्योम से भी विमल
नीर से भी तरल आज मेरा हृदय
वायु से भी सजग कुसुम से भी सुभग
इन्दु से भी धवल आज मेरा हृदय
प्यार खोया किसी एक का प्रेरणा—
विश्व के प्रेम की तो मगर मिल गई !
तुम मिले प्यार की साधना खो गई
तुम गए भावना को डगर मिल गई !

प्राण ने एक ही साँस में पी लिया
विश्व के प्रेम से भर हृदय का चषक

छा गई चेतना छो अहम् की व्यथा—
रंग जब मिट गई युग-युगों की कसक
था अधर तक गिरा नीर का पात्र था
पर अचानक सुधा की गगर मिल गई!
तुम मिले प्यार की साधना खो गई
तुम गए भावना की डगर मिल गई!

हट गया आवरण मोह-माया जनित
ब्रह्म से जीव की भिन्नता मिट गई
यों युगों से भटकते हुए जीव का—
लक्ष्य पूरा हुआ खिन्नता मिट गई
लोक-परलोक की कामना लुट गई
ज्योति जगमग अलौकिक अमर मिल गई।
तुम मिले प्यार की साधना खो गई
तुम गए भावना की डगर मिल गई!

जन्म-स्थान—मैनपी (राजस्थान)। जन्म-तिथि—सन् १९२९। शिक्षा—एम० ए० (अर्थशास्त्र) लखनऊ-विश्व विद्यालय से। विशेष—हिन्दी की सफल गीतकर्त्री और लेखिका। आपकी 'रेखा' नामक काव्य कृति पर हिन्दी-साहित्य सम्मेलन द्वारा सेकसरिया-पुरस्कार दिया जा चुका है। प्रकाशित रचनाएँ—'निष्कृति'



शान्ति मेहरोत्रा

मरीचिका 'रेखा' 'बिदा' 'पथ ध्वनि' 'पंच प्रदीप' तथा 'वाङ्मय'। प्रेस में—'सुरखाब के पर' (हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ) 'खुला आकाश' 'मेरे पंख' (कहानियाँ हास्य-व्यंग्य कविताएँ मधु कथाएँ)। इधर कहानियाँ और हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ ही विशेष रूप से लिखी हैं। वर्तमान पता—आकाशवाणी केन्द्र इलाहाबाद

आराध्य न अब साकार बनो !

प्रतिमा में और पुजारी में थोड़ा अन्तर अनिवार्य सदा
नीरव नयनों में अधरों में, थोड़ा अन्तर अनिवार्य सदा
कुछ अन्तर तो होना ही है, अभिव्यक्ति और अनुभव में भी
फिर सत्य कल्पना में भी तो थोड़ा अन्तर अनिवार्य सदा
मैं सीमित हूँ तुमको असीम रखने में हो अभिमान मुझे,
संसार बसा सकने वाले, बस स्वयं न तुम संसार बनो !
आराध्य न अब साकार बनो !

हाँ कभी पूर्णता पाई है दुख सुखमय जग में सीमित ने
मिट्टी की प्रतिमा मानव का मन्दिर कब कर पाई महान्
भावों के स्वप्निल रंगों से, मैं रूप सदा भर लिया करूँ
तुमको जो-जो करना चाहूँ बस पूज-पूज कर लिया करूँ
अनुमान सत्य से होता है वैसे भी ज्यादा सुन्दर
मैं तुम्हें सजाऊँ पलक में तुम मेरे हो शृंगार बनो !
आराध्य न अब साकार बनो !

वासन्ती कोयल कहती है—मुझको मेरा मधुमय यौवन
मधुवन की कलियाँ कहती हैं—मुझको मेरा यौवन यौवन
यौवन कहता—'मैं शैशव की कोमल माया से मुक्त नहीं
भावों में आकर कहा, हम कविता का आमन्त्रण यौवन
आमन्त्रण की इन घड़ियों में पल-पल तुम्हारे बस स्वतन्त्र
फिर मेरी श्वासों के बन्दी बस मेरे कारागार बनो !
आराध्य न अब साकार बनो !

जन्म स्थान — दिल्ली
जन्म तिथि—२ मार्च
१९२२। शिक्षा—इन्द्रप्रस्थ हा
स्कूल दिल्ली और क्रिश्चियन
कालेज इन्दौर में। बाद में हिन्दी
प्रभाकर' किया। विशेष—१
वर्ष की अवस्था से ही जब
आप हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन



शान्ति सिहल

प्रयाग की 'प्रथमा परीक्षा की तैयारी में तत्पर थी काव्य साधना प्रारम्भ की। प्रकाशित रचनाएं — बिखरे प्रसून' (१९४७) उर्मिमाला (१९४९) तथा 'मधुमय' (१९५०)। स्थायी पता—२४ दरियागंज अंसारी रोड दिल्ली।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम गीत

जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए !

जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

जब न तुमसे स्नेह के दो कण मिले
व्यथा कहने के लिए दो क्षण मिले
जब तुम्हीन की सतत अवहेलना
विश्व का सम्मान लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

एक आशा एक ही अरमान था
बस तुम्हीं पर हृदय का अभिमान था
पर न जब तुम हो हम अपना मगर
व्यर्थ यह अभिमान लेकर क्या करूँ
जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

दूँ तुम्हें बस नमन अपनी निशा
दूँ तुम्हें अपनी मगन बन निशा
जो स्वरित होकर न कुछ भी कह सके
मैं भला वे गान लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

पुष्पतम क्षण है।

मानिनी सब-कुछ निछावर चरण पर तेरे—
वरण कर पुष्पतम क्षण है!

खोल दे निज नयन-गात्म
युग-युगों से स्निग्ध उर-सम
वेदना बन आज यमुना—
एक सुधि की साँस से गम

रागिनी सुर-लय निछावर भजन पर तेरे—
ध्वनन कर पुष्पतम क्षण है!
वरण कर पुष्पतम क्षण है!

आज बन्दी-सा बना है
धड़कनों की आह का स्वर
अधर का संगीत खोया—
कहरती-सी है लहर;

मादिनी मन प्राण नूपुर झनन पर तेरे—
विरण कर पुष्पतम क्षण है।
वरण कर पुष्पतम क्षण है!

आज स्वप्निल-सा पुरातन
एक अभिनव मधुर नूतन

विगत-आगत सब लिये—
थिरकन भरे तेरे मुककण
रागिनी मृदु नेह अर्पित मिलन पर तेरे—
सुमन कर पुण्यतम क्षण है।
मानिनी, सब-कुछ निछावर चरण पर मेरे—
वरण कर पुण्यतम क्षण है।

जन्म स्थान— अजमेर (राजस्थान)। जन्म तिथि—११ नवम्बर सन् १९२५। एम० ए० (हिन्दी)। विशेष—अपने पिता श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय से अधिक प्रभावित। कविता के क्षेत्र में



शारदा गुप्ता

आने का श्रेय भी इनके पारिवारिक साहित्यिक वातावरण को है। अभी तक प्रायः प्रेम-गीत ही लिखे हैं और वे भी विशेषतः विरह-प्रधान ही। वर्तमान पता—कन्या भवन कबीर मार्ग बनी पार्क जयपुर (राजस्थान)।

द्वार तुम मेरे आओगे!

जब से सुना द्वार मेरे आओगे
नई-नई नित वन्दनवार बँधाता हूँ।

प्राण तुम्हारे स्वागत में द्वार ठहरा
अँगना देखा सारा सदन उजारा है
कोमल हैं प्रिय चरण तुम्हारे इसीलिए
पंखुरियों से मारग पथ सजाया है
जब से सुना सदन तक तुम भी आओगे
धीर धरती मंगल सपन जगाती है।
जब से सुना द्वार तुम मेरे आओगे
नई-नई नित वन्दनवार बँधाता हूँ।

वीराना-सा जीवन सदन था मीत
साथी कोई भी ना मेरा साथ रहा है
मनभावन सपनों पर सहम था जाग
ऐसा कोई भी ना मेरा गान रहा है
जब से सुना गान तुम मेरे गाओगे
नये-नये नित छन्द बनाकर लाती हूँ।
जब से सुना द्वार तुम मेरे आओगे
नई-नई नित वन्दनवार बँधाता हूँ

इन नयनों में नव सपन का नशा है
गगरी में आह्लाद हृदय में मुस्काना

कैसे काटूँ पंख कल्पना के सुन्दर,
मन की सोन-चिरैया देखो मुस्काती
जब से सुना प्राण पर मेरे छाओगे
नये-नये नित मादक सपन सजाती हूँ।
जब से सुना द्वार तुम मेरे आओगे
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ।

चौराहे पर खड़ी हुई हूँ सोच यही
पता नहीं तुम किस पथ पर होकर आओ
मैं दीवानी बनी तुम्हारी जग कहता
साँवरिया इस पागलपन को दुलराओ
जब से सुना अजाना पथ अपनाओगे
डगर डगर पर दीपक रोज जलाती हूँ।
जब से सुना द्वार पर मेरे आओगे
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ।

जन्म-स्थान — बिहार शरीफ (पटना)। जन्म तिथि — १७ सितम्बर १९१९। शिक्षा — बी० ए० (पंजाब से)। एम० ए० पटना-विश्वविद्यालय से १९४१ में। प्रकाशित रचनाएँ — 'सीपू की टोपी' कहानी-संग्रह (१९४९) 'जीवन का सत्य' (दूसरा कहानी-संग्रह अभी अप्रकाशित)। 'स्मृति शेष'



शारदा वेदालंकार

कविता-संग्रह भी अप्रकाशित। १९५५ में पटना विश्वविद्यालय से 'हिन्दी साहित्य का विकास (सन् १८०० से १८५६) शीर्षक शोध प्रबन्ध पर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त। यह प्रबन्ध शीघ्र ही बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से प्रकाशित होगा। स्थायी पता — प्रधानाचार्या सुन्दरवती महिला महाविद्यालय भागलपुर (बिहार)।

तुम मुझको पहचान न पाए!

संचय कर सरसिज पराग को
पंखुड़ियों के अरुण राग को
अलि अब तक भी जान न पाए
तुम मुझको पहचान न पाए!

दीप शिखा से जग आलोकित
स्नेह-दीप से मन अनुप्राणित
दीप प्रभा को देख न पाए
तुम मुझको पहचान न पाए!

दिवा-रात्रि का अद्भुत संयम
हो पाया जब उनका संगम
रहते अपनी व्यथा छिपाए
तुम मुझको पहचान न पाए!

विश्वासों पर मौन समर्पण
आस लगाए जीवन के क्षण
मेरे मन की थाह न पाए
तुम मुझको पहचान न पाए!

जन्म स्थान— बिजौली जिला अलीगढ़। जन्म-तिथि— १ सितम्बर १९२९। शिक्षा— मैट्रिक पूर्वी बोर्ड (१९४३)। विद्याविनोदिनी प्रयाग महिला विद्यापीठ (१९५१) तथा टी० सी० राजकीय होम्स विद्यालय आगरा (१९५३-५४)। विशेष—



शीला

सन् १९४८ से लिखने में रुचि। नवभारत 'हिन्दुस्तान' और अन्य दैनिक पत्रों में रचनाएँ प्रकाशित। प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार श्री ... पाठक से सन् १९५९ में विवाह हुआ था किन्तु अब सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। स्थायी पता—बिजौली जिला अलीगढ़।

मेरी आँखों से देखो तुम !

मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

दीप-शिखा पर मतवाले हो जाते मस्त पतंग
निष्ठुर होकर दीप जलाता कोमल-कोमल अंग
अपने अंग जलाकर जब वे इधर उधर उड़ते हैं—
तब आमन्त्रण देता दीपक अपनी बाँह पसार !
मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

विह्वल होकर फूल हृदय के देता है पट खोल
प्रेम-याचना करते भौंरे मीठा-मीठा बोल
कुछ दिन तक चलता रहता है गुप-चुप प्रेमालाप
उड़ जाते नीरस फूलों से भौंरे पंख पसार !
मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

चातक स्वाति-बूँद पाने को अपनी चोंच उठाए
तरुण तपस्वी सा बैठा रहता है ध्यान लगाए
किन्तु नीर के बदले उसको जब मिलते हैं पत्थर—
तब स्वभाग्य को कोसा करता रह जाता मन मार !
मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

जन्म-स्थान— कानपुर।
जन्म-तिथि—१४ जून १९४१।
विशेष—कानपुर नगर महापालिका के असिस्टेण्ट स्टेनोग्राफर (सिटी सुपरिंटेण्ट) श्री यमुनाप्रसाद अग्निहोत्री की पुत्री। शिक्षा—बी० ए०। स्थायी पता—१० विद्यार्थी रोड कानपुर।



शोभा अग्निहोत्री

और तुम जाने कहाँ हो ?

चाँद तो घर आ गया है और तुम जाने कहाँ हो ?
एक दीपक ने दसों दीपक जलाए,
एक दूरी से विहग घर लौट आए
मैं स्वयं को एक मेला लग रही हूँ—
आँख में सुकुमार सपने डबडबाए
प्राण यह घबरा गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?
चाँद तो घर आ गया है और तुम जाने कहाँ हो ?

रात रानी गंध के स्वर फूँकती है
प्राण में उन्मन पिकी-सी कूकती है
क्या कहूँ मैंने हृदय पाया अजब है—
जिन्दगी हर बार यों ही चूकती है
मधु मुझे महसा गया है और तुम जाने कहाँ हो ?
चाँद तो घर आ गया है और तुम जाने कहाँ हो ?

कण्ठ में संगीत बैठा बुदबुदाता
होंठ पर आता न पीछे लौट जाता
पायलों में एक कम्पन-सा विषय है
आरती में दीप रह रह झिलमिलाता
रूप रस बरसा गया है और तुम जाने कहाँ हो ?
गया है और तुम जाने कहाँ हो ?

जन्म स्थान— रुड़की (सहारनपुर)। जन्म तिथि— ११ अगस्त सन् १९२७। शिक्षा—सन् १९५१ में आगरा विश्वविद्यालय से भूगोल विषय में एम० ए० और उसके बाद सन् १९५५ में एल० टी०



शीला गुप्ता

परीक्षा उत्तीर्ण की। विशेष— भूगोल-जैसे शुष्क विषय की अध्यापिका होते हुए भी काव्य रचना में तत्पर हैं। वर्तमान पता—भूगोल प्रवक्ता, के० बी० एम० महिला विद्यालय सहारनपुर।

जाने क्या बात हुई ?

मौन हो गए तुम जाने क्या बात हुई ?

मेरा एक चरित्र निगाहें लाखों हैं
भिन्न-भिन्न कोणों से दुनिया भाँक रही
अपनी मन-मरजी के काम परदों को—
उठा उठाकर लघु छिद्रों से झाँक रही

कोई कहता है मैं घन-मेंधियारी हूँ
कोई कहता सूरज पर बलिहारी हूँ
कोई कहता अभी नहीं मैं सोई हूँ
कोई कहता रात रात भर रोई हूँ

मैंने तुमसे पूछा—'राय तुम्हारी क्या ?
मौन हो गए तुम जाने क्या बात हुई ?

सारा जीवन गढ़ी एक ही मूरत थी
लेकर पहुँची लेकिन जब बाजारों में
सोन चाँदी संगमरमर की दूकानें—
व्यंग लगीं करने कुछ मुखर इशारों में

एक लगी पूछने—'कहो कितने पैसे ?
हँसी दूसरी मिट्टी के पैसे कैसे ?'
तुम चुपके से बोले—'इन्हें तमीज नहीं
मन्दिर की मूरत बाजारू चीज नहीं !'

मैंने सोचा, 'तुम्हें मुफ्त दे दूँ मूरत'
तभी गा गए तुम जाने क्या बात हुई ?

धूप चमन में रूप बाँटन आई जब
मैं फूलों की छाँव-तले चुप पड़ी रही
मेरी गन्ध बहकती थी मन्दिर में—
मैं चुप बोली नहीं द्वार पर खड़ी रहा
भीड़ समझती रही भिखारिन कोई है—
कोई आँख न मेरी खातिर रोई है
मैंने अपने मन को यों समझाया है—
आज देवता ने स्वयं तुम्हें बुलाया है
लेकिन पद रज छूकर नज़र उठाई जब
देव सो गए तुम जाने क्या बात हुई ?



जन्म-स्थान—इलाहाबाद। जन्म तिथि—१२ नवम्बर '१९३७। शिक्षा—बी० ए०। एम० ए० में अध्ययन कर रही हैं। विशेष—प्रख्यात तरुण साहित्यकार श्री रमेश वर्मा की धर्मपत्नी। अपने पति के लेखन में सहयोग देने के अतिरिक्त इन्होंने अनेक बालोपयोगी तथा प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकें भी लिखी हैं जिनमें से कई भारत सरकार के शिक्षा

शुभा वर्मा

मंत्रालय और उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत भी हो चुकी हैं। प्रमुख कृतियाँ—'चीनी लोक कथाएँ' 'इंग्लैण्ड की लोक-कथाएँ' 'अमेरिका की लोक कथाएँ' 'यूरोप की लोक कथाएँ' 'आयरलैण्ड की लोक-कथाएँ' 'जिस देश में गंगा बहती है' 'पता गरपभर पयठ'। स्थायी पता—जे ८ कृष्णनगर दिल्ली ३१।

याद करती हूँ तुम्हें !

याद करती हूँ तुम्हें बस एक ही राग ।

जब किरन की डोर से प्राची उतरकर
अवनि-तल पर मोतियों का थाल भर भर
सहज सकुचाती सँभलती मन्द गति से—
नाप लेती है धरा आकाश गह्वर
ढूँढ़ती हूँ मैं तभी आगत विगत में
व्यथित हो तुमसे मिले अनुभूति के कण !
याद करती हूँ तुम्हें बस एक ही राग ।

तुम न मिलते जब नियति के भाव लोल
विगत-आगत जब परस्पर एक होते
मूक हो सपना में भूलकर ही
है नहीं मानव कभी क्या बैठ रोता ?
मैं अपरिचित-सी कहीं इस धनना में
प्राप्त कर लेती तुम्हारी व्यथा के कण !
याद करती हूँ तुम्हें बस एक ही राग ।

दूर हो पथ से बहुत यह जानती हूँ
मिल न पाऊँ मैं कदाचित् मानती हूँ
भूलकर भी तुम न पहचानो मुझे पर
याद रखना मैं तुम्हें पहचानती हूँ
ढूँढ़ लूँगी तुम जहाँ भी जा छिपोगे
बस हृदय की एक आशा एक ही राग !
याद करती हूँ तुम्हें बस एक ही राग ।

जन्म स्थान—कानपुर। जन्म तिथि—५ जुलाई सन् १९४३। शिक्षा—बी० एस सी परीक्षा उत्तीर्ण। विशेष—विज्ञान की छात्रा होते हुए भी कविता की ओर विशेष रुचि। पूरा नाम श्वेतबाला श्रीवास्तव।



श्वेत बाला

पहली कविता 'आज' में प्रकाशित। 'आज' के साहित्य-सम्पादक श्री मोहनलाल गुप्त से विशेष प्रोत्साहन मिला। पिता श्री अम्बिकाप्रसाद श्रीवास्तव एक कुशल इंजीनियर हैं। स्थायी पता—२१/७५ कबीर चौरा वाराणसी।

मोर बन आए हो!

सुनती हूँ दूर कहीं कोयल की कूक ?
डोलता है तन मन उठती है हूक ?
सुधियों की नौका पे गीत के वितान तान
मदमाती घड़ियों में पीर बन आए हो!
डूबती तरी के तुम मीर बन आए हो!

महर उठा मन पिया! महकाते पौधम सा
घहर उठा प्राण हिया बस गाते बादल-सा
तड़प उठी बिजली है नाचता है मन मयूर
चातक के प्राण प्रिय मोर बन आए हो!
डूबती तरी के तुम मोर बन आए हो!

स्वागत में देख मेरा नेह-दीप जल गया
चाँद मुस्कराया सन्ध्या का मान गल गया
खिली कली नन्दन की गमा-गमा नाच उठा–
मन के निकुञ्ज में समीर बन आए हो!
डूबती तरी के तुम तीर बन आए हो!

जन्म स्थान— मेरठ। जन्म तिथि— १० जुलाई १९२१। शिक्षा— मैट्रिक हिन्दी-प्रभाकर साहित्य विशारद। विशेष—सन् १९१८ में विवाह के उपरान्त अपने पति श्री उमेश चतुर्वेदी के सहयोग में साहित्य-निर्माण की ओर अग्रसर हुई। प्रकाशित-रचनाएँ—'वीर सेनानी' (उपन्यास) सन् १९५ से ५५ तक



शसकुमारी चतुर्वेदी

राजस्थान विश्वविद्यालय की हाई स्कूल कक्षाओं में पाठ्य पुस्तक रहा। आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र से वार्ता कविता नाटक आदि प्रसारित होते रहते हैं। स्थायी पता— द्वारा श्री उमेश चतुर्वेदी एच ७१० मालवीयनगर जयपुर।

प्रेममय अभिसार भूली !

प्रेम के आवेश में मैं प्रेम का उपहार भूली !
मधुर स्मृति-सुख-स्वप्न भूली प्रेममय अभिसार भूली !

आह उस मधुमास की मधु से भरी चिर मदिर रात
हृदय-हारी मुग्धकारी सुधा-स्रवक मधुर बात
आह उस शशि-रश्मियों की चपल मचल मुखर घात
एकदा ही प्रेम की तल्लीनता में प्यार भूली !
प्रेम के आवेश में मैं प्रेम का उपहार भूली !

प्रेम की मृदु कल्पनाओं में भरा संसार क्या है ?
रे ! मुझे कोई बता दे क्षितिज के उस पार क्या है ?
प्रेम है यदि, तो बताओ प्रेम का शुचि सार क्या है ?
हृदय-वीणा को बजाते प्रीति के मृदु तार भूली !
मधुर स्मृति-सुख-स्वप्न भूली प्रेममय अभिसार भूली !

जन्म स्थान— इन्दौर (मध्य प्रदेश)। जन्म-तिथि— मार्च सन् १९२२। शिक्षा— काशी विश्वविद्यालय से बी० ए० बाद में नागपुर-विश्वविद्यालय से एम० ए किया। विशेष—इनके पूर्वज उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। पिता श्री मथुरा प्रसाद पाण्डेय इनके जन्म से



शशबाला

पहले ही इन्दौर में आकर बस गए थे। २० वर्ष की आयु से ही काव्य रचना प्रारम्भ। आजकल गवर्नमेण्ट ट्रेनिंग कालिज हैदराबाद में हिन्दी की अध्यापिका हैं। प्रथम काव्य संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। स्थायी पता—१४-७-२११ बेगम बाजार, हैदराबाद (आन्ध्र)।

गीत अपने गा रही हूँ !

मैं तुम्हारे ही स्वरों में गीत अपने गा रही हूँ !
औ' तुम्हारे स्नेह से ही यह प्रदीप जला रही हूँ !

फिर रही थी यामिनी
आसावरी का वेदना ले
आ गए तुम सजग दीपक-
राग की नव चेतना ले
मैं तुम्हारी ज्योति से आलोक अपना पा रही हूँ !
मैं तुम्हारे ही स्वरों में गीत अपने गा रही हूँ !

बँध गए निरुपाय जलधर
क्षीण विद्युत-बन्धनों में
भर उठे आमोद के स्वर
जीर्ण जीवन स्पन्दनों में
मैं तुम्हारी मूर्च्छना में लीन होती जा रही हूँ !
औ' तुम्हारे स्नेह से ही यह प्रदीप जला रही हूँ !

आज कुसुमित हो उठी है
कंटकित मरुभूमि सारी
सजल झुकते आ रहे हैं
ये जलद अम्बर-विहारी
मैं तुम्हारी चेतना सर्वत्र बिखरी पा रही हूँ !
मैं तुम्हारे ही स्वरों में गीत अपने गा रही हूँ !

जन्म-स्थान— मेरठ। जन्म तिथि— १ सितम्बर सन् १९२७। शिक्षा— आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए०। काशी विश्वविद्यालय से हिन्दी उपन्यासों में नारी विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करके पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। विशेष— बचपन



शैल रस्तोगी

से ही कहानी कविता नाटक निबन्ध लिखने की ओर अभिरुचि रही है। आजकल मेरठ के रघुनाथ गर्ल्स कालिज में हिन्दी की प्राध्यापिका हैं। प्रकाशित रचना— 'पराग' (कविता-संग्रह)। स्थायी पता— ११० मोरीपाड़ा मेरठ।

हिन्दी कवयित्रियों में प्रेम-गीत

तुम न आए पर।

निरखती ही रही मैं बाट आली तुम न आए पर।

दृगों की शून्यता यह—
भर न पाई नींद रानी भी
तुम्हारी छाँह छू अपनी—
रहीं स्मृतियाँ बिरानी भी
दीया जलती रही निशि भर शलभ-सी तुम न आए पर।

मधुरता पथ पर फैला—
क्षमा का मौन आराधन
गगन के नील आँगन में—
चमकते स्वर्ग के कुछ कण
यहाँ छलती रही मुझको निराशा तुम न आए पर।

तुम्हारा चिह्न चरणों के—
बिछे पाथेय बन मुझ तक
बिखर उन पर गई पलकें—
पखारे आँसुओं से पद
दिशाएँ प्राण में भरती रहीं तम तुम न आए पर।

रहा लग आज मुझको—
विश्व-सारा एक सपना-सा,
गया बुझ आह मेरा स्नेह-दीपक
स्नेह का प्यासा
व्यथा पलती रही मन में सदन में तुम न आए पर!
निरखती ही रही मैं बाट आली तुम न आए पर।



स्नेहमयी चौधरी

जन्म स्थान— मोरावाँ (उन्नाव)। जन्म तिथि—९ मई १९३५। शिक्षा—आगरा-विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० (१९५५ में)। विशेष—कविता और कहानी-लेखन में अधिक रुचि है। प्रारम्भ से ही घर का वातावरण साहित्यिक था। सन् १९५९ में हिन्दी की नयी कविता के चुने हुए कवियों में से एक श्री अजितकुमार से विवाह अर्थात् हिन्दी की प्रख्यात कव-यित्री श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा की पुत्रवधू बनीं। पिछले कुछ वर्षों में अनेक कविताएँ और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। 'गुलाब के रंग' नामक कहानी-संग्रह प्रका-शन तब पर है। वर्तमान पता—की ब्लॉक ७१७ सरोजिनी नगर नई दिल्ली—३।

मन मेरे, उनकी बात कहो !

उनकी छवि की तुलना में
सब रंग-रूप हैं फीके
तृप्त हो गई हैं नयनी
करुणा में जल का पान
उनकी लहर-लहर पर गिरकर उनके संग बहो !
मन मेरे उनकी बात कहो !

उनकी तरल चपल गतिविधियाँ
दुनिया भर से न्यारी
उनकी मधुर मदिर बातें
कितनी हैं मुझको प्यारी
उनकी छाया बनकर प्रतिपल उनके पास रहो !
मन मेरे उनकी बात कहो !

उनकी सहज निकटता का सुख
जीवन की थाती है
पर यदि कोई घड़ी प्रिय की—
बिछुड़न की आती है
तो भीतर-भीतर उनसे दूरी का ताप सहो !
मन मेरे उनकी बात कहो !

जन्म-स्थान—ग्राम पुरानी सराय जिला भागलपुर (बिहार)। जन्म-तिथि—२ जून १९१६। शिक्षा—बी ए। विशेष—राजकीय महिला शिल्प-कला विद्यालय मुन्दीचक मे प्रधानाचार्या। काव्य-जीवन



स्नेहलता प्रसाद

के प्रारम्भ से ही सगान मे रुचि। पहले-पहल ११ वर्ष की अवस्था मे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के एक अधिवेशन मे कविता-पाठ। स्थायी पता—द्वारा श्री सूर्य नारायणप्रसाद वकील मुन्दीचक भागलपुर।

भूल गए क्यों निर्मम मेरे ?

इस सावन की बूँद धरा पर
घहराए हैं घन नभ पर !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

नयनों के मिलन की आशा
व्याकुल मल्हार की है भाषा
इसे स्वर पहुँचा दूँ तुम तक
जग-बन्धन के अनुपम पर !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

चंचल जग की क्या माया है
छलती अपनी ही छाया है
सपनों के भ्रम में भूलूँ
होगा प्यार में रहूँ अमर !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

आओ देख जुदा मैं मन का
अर्पित कर निज स्वर्णिम धन का
भूल निशा-सपनों में जाऊँ
आ हँस मैं रोता क्या न सबेरे !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

जन्म-स्थान—लखनऊ। जन्म तिथि—सन् १९१२। शिक्षा—बी॰ ए॰ एल॰ टी॰। कार्य—महिला हिन्दी विद्यापीठ लखनऊ में अध्यापन। प्रकाशन—'रजनीगन्धा' (कविता संग्रह) १९५१। सम्पादन—



स्नेहलता 'स्नेह'

'वर्तिका' मासिक (फरवरी १९५३ से मार्च १९५७ तक लगभग चार वर्ष)। आजकल 'कर्मलोक' साप्ताहिक का सम्पादन कर रही हैं। स्थायी पता—बताशे वाली गली लखनऊ।

तुम मिलोगे ही कभी !

तुम मिलोगे ही कभी सुधि की डगर में
मैं तुम्हारी याद को अपना बना लूँ !
तुम मिटा दोगे कभी मन की घुटन को
मैं तुम्हारी ज्योति को अपना बना लूँ !

सुबह-सी मुस्कान चन्दन-सा हृदय धन
ओस-सा पावन नयन का नीर ढाला
सुमन को सौरभ भ्रमर को गूँज देकर
स्वयं को छलती रही पी मदिर हाला

तुम सजा दोगे कभी बिस्तर सपन को
मैं तुम्हारी नींद का अपना बना लूँ !
तुम मिलोगे ही कभी सुधि की डगर में
मैं तुम्हारी याद को अपना बना लूँ !

मैं अकिंचन-सी किनार पर खड़ी हूँ
और उफनाता जलधि ललकारता है
साथ देने को लहर बेरस खड़ा है
और तट का धैर्य भी हुँकारता है

तुम मिलोगे हो कभी स्नेहिल लहर में
मैं विकल मँझधार का अपना बना लूँ !
तुम मिटा दोगे कभी मन की घुटन को
मैं तुम्हारी ज्योति को अपना बना लूँ !

रात लम्बी है मगर तारों भरी है
हर दिशा का दीप पलकों ने जलाया
साँस थोड़ी है मगर आशा बड़ी है
ज़िन्दगी ने मौत पर पहरा लगाया
तुम मिलोगे ही कभी पिछले पहर में
मैं सिसकती माँग शबनम से सजा लूँ।
तुम मिलोगे ही कभी सुधि की डगर में
मैं तुम्हारी याद को अपना बना लूँ।
तुम मिटा दोगे कभी मन की घुटन को
मैं तुम्हारी ज्योति को अपना बना लूँ।

जन्म-स्थान — लखनऊ। जन्म तिथि — जून १९१९। शिक्षा — एम॰ ए॰ (अंग्रेजी तथा संस्कृत-साहित्य में लखनऊ-विश्वविद्यालय से)। प्रकाशित रचनाएं — कौड़ियों का मोल (सन् १९२६) 'रेशम के महल' (१९५१) दोनों कहानी-संग्रह। 'मरुस्थल का पानी' (१९६१ में प्रकाशित कविता संग्रह)। विशेष — नारी शिक्षा निकेतन इण्टर कालिज लखनऊ की प्रधानाचार्या। स्थायी पता — राज भवन टेलीफोन एक्सचेंज रोड लखनऊ।

स्वरूपकुमारी बख्शी



रूप एक मीनार है!

केश यह घने-घने
दृग में सने-सने
भुज, हमे घनमन
यह नहीं मृदु रात है
रिमझिमी बरसात है
यह सब जंजीर कामी रूप एक मीनार है!

नयन यह डरे-डरे
मधुघूमे भरे भरे
मस्त-से परे-परे
मत समझ यह जाम है
या नशीली शाम है
नयन उनके हैं झरोखे, देह कारागार है!

फिर सुरा हँसे-हँसे
पग हर धसे-धसे
हम रहें छले छले
हम बहक जायें कभी
हम छलक जायें कभी,
जिन्दगी ऐसी गुफा है भूल जिसका द्वार है!

मस्त हो पिये पिये
एक पल जिय जिये

रंग-सा लिए लिये
बह चली सिहर-सिहर
उमड़ रही लहर-लहर
जिन्दगी का दूसरा तट अपना न पार है।

उड़ चली कहाँ-कहाँ
एक पल रुका नहीं
मंजिलें बुला रहीं
दूर कितनी राह है
आज क्या परवाह है
क्यों मनुज बन्दी, खुला जब विश्व का विस्तार है।
रूप एक मीनार है।

जन्म-स्थान— अम्बाला छावनी। जन्म-तिथि—१ जनवरी १९३८। शिक्षा—एम० ए० (संस्कृत) सन् १९६१ में पंजाब युनिवर्सिटी से। साहित्यरत्न (१९५६)। दिल्ली विश्वविद्यालय में जर्मन



संयुक्ता

डिप्लोमा' कोर्स का अध्ययन। पी एच० डी० की उम्मीदवार। विशेष—विषयों से अधिक पढ़ने का व्यसन। कुछ कविताएँ 'सरिता' में प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान पता—१०९ सी वर्किंग गर्ल्स होस्टल कर्ज़न रोड नई दिल्ली।

अब तो नाव लहर में आई !

क्या देखूँ विस्तार जलधि का
क्या मापूँ उसकी गहराई ?
अब तो नाव लहर में आई !

रह रहकर मन अकुलाता है
परिचित तट छूटा जाता है
एक अपरिचित का पाम-मग
जीवन-गान हुआ आता है
इक धीमे-से स्वर ने युग की
संचित सब सुध-बुध बिसराई !
अब तो नाव लहर में आई !

मैं जल की अवगाह न जानूँ
कैसी तेरी राह न जानूँ
मैं वर्षा-आतप की मारी
कहाँ मिलेगी छाँह न जानूँ ?
जाने किस तट वह वंशी-वट,
तूने वंशी जहाँ बजाई !
अब तो नाव लहर में आई !

छूट सभी सहारे पीछे
उजियारे अँधियारे पीछे
इसीलिए हूँ सबसे आगे
दो पग चलूँ तुम्हारे पीछे
फिर उस क्षण से पाँव पखारू
जो मैं जीवन में भर लाई।
जग का ताप अधर में आई।

जन्म स्थान—लुधियाना (पंजाब)। जन्म तिथि—१८ अप्रैल सन् १९११। शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर इण्टरमीडिएट। विशेष—हिन्दी के विख्यात उपन्यासकार, कहानीकार और नाटककार श्री पृथ्वीनाथ शर्मा की धर्मपत्नी। सबसे पहली कविता सन् १९११ में लिखी जो उन दिनों 'वीर' के विदुषी अंक में प्रकाशित हुई। तदनन्तर



सत्यवती शर्मा

आपकी रचनाएं 'सरस्वती', 'विशाल भारत', 'सरस्वती' तथा 'नया समाज' आदि पत्र पत्रिकाओं में सम्मान प्रकाशित हुईं। कविता-संग्रह 'प्रथम सुमन' नाम से सन् १९६६ में प्रकाशित हुआ। कहानियाँ उनके पति श्री पृथ्वीनाथ शर्मा के कहानी-संग्रह 'विकार चक्र' में संकलित हैं। वर्तमान पता—६ बी माडल टाउन पटियाला (पंजाब)।

प्यास बढ़ती क्यों हृदय की !

आज क्यों नभ खेल रचता ?
वेदना का ले निमन्त्रण वे उठीं पीली घटाएँ
रज-कणों के आवरण में थरथरातीं सब दिशाएँ
विश्व-वीणा के स्वरों में कौन भैरव-राग भरता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

भावनाओं के सपन-से घिर चले फिर श्याम बादल
मधुर स्मृति-सी कौंध जाती दामिनी की रेख चंचल
मन मथित इस विरस उर में मेह क्यों सहसा बरसता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

स्नेह की दो बूँद पाकर, प्यास बढ़ती क्यों हृदय की ?
ज्वलित होतीं क्यों शिखाएँ वात बहती जब मलय की,
झूमने जब घन लगे मैं ओट से क्यों चन्द्र हँसता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

चीरकर उर बादलों का क्यों हँसे मदमस्त तारे ?
चाह की उर में लिए जब भटकते जुगनू बिचारे
मृदुल उर की साधना का कौन यह उपहास करता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

दुग्धतम ये खेल रचकर आज नभ किसको रिझाए ?
सुप्त हैं सारी व्यथाएँ क्यों वृथा उनको जगाए ?
माँप क्या यह नभ सकेगा सिन्धु के उर की विकलता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

जन्म स्थान— दिल्ली। जन्म तिथि—७ जून १९१४। शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर एम० ए० (हिन्दी), दिल्ली विश्वविद्यालय से। आजकल दिल्ली के केन्द्रीय शिक्षण



सन्तोष अग्रवाल

संस्थान में बी एड० की छात्रा। विशेष—कविता के अतिरिक्त कहानी लेख निबन्ध और आलोचना आदि लिखने में भी विशेष रुचि रखती हैं। स्थायी पता— २४१४ कूचीवालान बाज़ार सीताराम दिल्ली ६।

हास्य भी तो रूठ जाता !

रूठते हैं प्राण प्रियतम
है धरा के श्वास में तम
पर न जाने क्यों विवश है—
आज मुझमें दीप का मन
इस अधर-से जगत् में स्नेह भी तो टूट जाता !
हास्य भी तो रूठ जाता !

दे दिया मुझको नियति ने
कठिन चिन्तन का सहारा
प्रथम दर्शन में न जाने
भर दिया क्या गरल प्यारा
मधुर के शृङ्गार में यह सरस भी तो छूट जाता !
हास्य भी तो रूठ जाता !

मैं दुखी थी शाप लेकर
व्यथित थी मैं हास्य खोकर
क्यों सभा तुममें मुझे दी—
आज फिर यों प्राण ठोकर
कल्पनों के झूमने का पथ भी तो रूठ जाता !
हास्य भी तो रूठ जाता !

जन्म-स्थान—नई दिल्ली। जन्म तिथि— १५ दिसम्बर १९३४। शिक्षा—प्रभाकर व साहित्य-रत्न। प्रकाशित कविताएं — 'रस-कलश' (कविता संग्रह) 'रूप और छाया' (उपन्यास) सन् १९५६ में प्रकाशित। विशेष—गीत



सन्तोष भानुपुरी

कहानी और स्फुट रचनाएं 'दैनिक समाचार' 'नवभारत टाइम्स' 'विश्व-दर्शन' 'धर्मयुग' और 'कविता' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। स्थायी पता—९ ए। २१ वैस्ट एक्सटेंशन एरिया करौलबाग नई दिल्ली।

तुमसे मीठी याद तुम्हारी !

मुझको यह मालूम नहीं था—
मिलन-पथ भी ला सकता है आँसू की जल-धार ज़िन्दगी !

इतना मुझे रुलाया तूने, बीता बचपन भरी जवानी
बन्द हो गए सरगम के स्वर, सूख गया आँखों का पानी
मुझे कभी मालूम नहीं था—
मधुरिम प्यार कभी ला सकता आहों भरी कगार ज़िन्दगी !

नींद चुरा ली क्यों पलकों को भटका रहे आवारा सपने
मैं एकाकी तुम निर्मोही, कैसे बचन तोड़ते अपने
मुझको यह मालूम नहीं था—
तूफ़ानों में बिक सकती है किश्ती की मासूम ज़िन्दगी !

सुख की सेज बन गई शूलों सौंप रही हूँ दुख की क्यारी
सच मानो या मत तुम मानो तुमसे मीठी याद तुम्हारी
मुझको यह मालूम नहीं था—
भूल जवानी भी बन सकती भीषण पारावार ज़िन्दगी !
मिलन-पथ भी ला सकता है आँसू की जल-धार ज़िन्दगी ।

जन्म-स्थान — जौनपुर। जन्म-तिथि — २ जुलाई सन् १६४०। शिक्षा-प्रारम्भ से ही दिल्ली-निवासिनी रहीं और दिल्ली-विश्वविद्यालय से ही सन् १९६१ में एम० ए० किया। विशेष—साहित्य में प्रारम्भ से

सन्तोष सक्सेना



ही रुचि रही है और आजकल तेलुगु कहानियों का हिन्दी अनुवाद करने में व्यस्त हैं। कविता के अतिरिक्त निबन्ध लेखन में भी रुचि है। वर्तमान पता- १२१ सदभाग मंज झांसी (उत्तर प्रदेश)।

अभी से मन घबराया !

साँझ हुई धरती पर घिर आया अँधियारा
अभी यामिनी शेष अभी से मन घबराया !

ओठों से मुसका गई चन्दा से किरनें
मन बुझ गया दिलों से भी छिन गई रोशनी
आँखों से उल्लास गया—सूना घर आँगन
एक उदासी मन की घेरे जग का कन-कन
दूर कहीं खोए नयनों का चित्र बनाता
बादल का दल सिमट क्षितिज के काले कोने
आँसू से बिखरे तारों की असली छाया
जमी रही माया नगरी की स्वर्णिम काया
सह युगों तक प्राण विकल उन्माद पीर को
अभी अनोखा शेष—मूक उर क्यों भर आया ?
अभी यामिनी शेष अभी से मन घबराया !

उनको जाती राह को अन्तर कहीं न मिलता
स्मित सुमना के दल सौरभ नहीं बिखरता
बिछुड़ गए जो उनकी सुधि में खोने वाले
दुखी हृदय को छल जाते मुसकान वाले
बैरिन पीड़ा के पहरे में बन्दी अपने
राज मचलते प्राणों पर आँसू की मोहरें

पूजा के फूलों पर षट्पदों का गिरना
आने पास तुमको उनका झूम उमड़ना
हर क्षण पागल हो पुकारते मेरे स्पन्दन
अभी जिन्दगी शेष अभी गाया क्या गाया ?
अभी यामिनी शेष अभी से मन घबराया !

जन्म स्थान— दिल्ली ।
२४ अप्रैल सन् १९३२ ।
शिक्षा—आगरा विश्व-विद्यालय
से एम० ए० (हिन्दी) करने के
उपरान्त उसी विश्वविद्यालय



सरला गुप्ता

से हिन्दी-साहित्य में डाक्टरेट ।
विशेष — प्राध्यापिका हिन्दी
विभाग रघुनाथ गर्ल्स कालिज
मेरठ । स्थायी पता—प्रह्लाद
वाटिका ५११ सिविल लाइन्स
मेरठ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

जीवन भरी गुञ्जार दो !

मैं दर्द लेकर क्या करूँ बस तुम मुझे झंकार दो –
जीवन भरी गुञ्जार दो !

दो दीप-जैसी भावना जिसमें प्रणय मैं हो मगन
पाकर तुम्हारा प्यार मैं फिर आत्म विस्मृत हो मगन
नित पास रहकर भी मुझे तुम दूर का उपहार दो
जीवन भरी गुञ्जार दो !

बचपन को प्राण का वह पीर तो मिलती नहीं है
पीर जो मुझको सके वह रागिनी मिलती नहीं है
जो प्राण का स्वर गा सके उस राग का भंडार दो –
जीवन भरी गुञ्जार दो !

भावना लेकर मिलन की दासता है प्राण जगत
चाहना की भावना में प्यार का संसार निरत
मिट रहा है दीप उसको ज्योति का संसार दो
जीवन भरी गुञ्जार दो !

दान की तो प्रेम का पाकर जिसे कुछ पड़ गये मैं
बचपन निज राह भी मैं पीर का भी सह गये मैं
कुछ नहीं तो दान में आँसू भरा हो हार दो –
जीवन भरी गुञ्जार दो !



जन्म स्थान — गोटे गाँव (नरसिंहपुर) मध्य प्रदेश। जन्म तिथि — सन् १९२५। शिक्षा — मैट्रिक हिन्दी विशारद। विशेष — बाल जीवन से ही इन्हें गर्ग श्री स्व० गंगा विष्णु पाण्डेय स्व० माताटीन शुक्ल माखनलाल चतुर्वेदी रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' आदि उच्चकोटि के साहित्य-मनीषियों

सरला तिवारी

का निर्देश मिलता रहा है। अब आप मीरा महादेवी और सूर की ओर से प्रभावित हैं। नागपुर के आकाश वाणी केन्द्र से इनके गीत और कविताएँ प्रसारित होती रहती हैं। सम्प्रति आप हितकारिणी कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला में अध्यापन-कार्य करती हैं। स्थायी पता-१९२ पारसगंज जबलपुर।

मैं उनकी ही होली!

जिनके चरणों में नत यह जीवन
मैं उनकी ही होली!

जिनकी प्रीति पगी साँसों में आभा सी छवि अनुपम
जिनकी एक किरण अति उज्ज्वल मिटा रही जीवन-तम
जिनको अपनी उर का कम्पन
मैं उनकी ही होली!

रोम रोम में लहराता है जिनका प्यार सजीला
जिनके सुधि-कण युग-युग से भर, भीना यौवन गीला
जिनके सपने जीवन का धन
मैं उनकी ही होली!

रस भरी बरसात मिलन की उमड़ घुमड़ रह जाती
उन्मन भीग भीग मैं प्रतिपल फिर भी भीग न पाती
मेघों में जिनकी छवि चितवन
मैं उनकी ही होली!

जन्म-स्थान— जौनपुर। जन्म-तिथि—१२ मार्च १९२६। शिक्षा—बी० ए० बी० एड० (१९५२)। विशेष— १६ १७ वर्ष की अवस्था में इनकी पहली कविता प्रस्फुटित हुई थी। वेदना की गायिका महादेवी वर्मा से आप विशेष प्रभावित हैं। इनकी अधिकांश रचनाएँ भी नारी-जीवन की पीड़ा से ओत-



सरला भारती

प्रोत हैं। साहित्यिक जीवन में आपको श्रीमती विद्यावती 'कोकिल' से विशेष प्रोत्साहन मिला है। आजकल गोरखपुर में अध्यापन रत हैं और विश्व विद्यालय की विमेन हॉस्टेल की अधिकारी हैं। स्थायी पता— श्री राय कृष्णचन्द्र मैनेजर बैंक ऑफ इण्डिया बैंक रोड गोरखपुर।

मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

मुझे रीत जग की निभाना न आया !
स्वयं को जगत् से मिलाना न आया !

निठुरता ने कितने मिटाए हैं जीवन
कहीं मिट गए तन कहीं लुट गए मन
मुझे पर न भाई निठुरता जगत् की
स्वयं मिट गई पर मिटाना न आया !
मुझे रीत जग की निभाना न आया

मुझे छू न पाए जगत् के कपट छल
सदा वेदनामय रहे मेरे पल
जगत् जो भी समझे, मिटे सारा जीवन
मुझे बात मन की छिपाना न आया !
मुझे रीत जग की निभाना न आया !

छलों से भरे इस जगत में भी पल भर
कपट अग्नि में सब सहन नित्य जलकर
मिली चोट पग-पग सदा, किन्तु मुझको
कभी भी तो अपना बनाना न आया !
मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

मगर दृढ़ चरण तो जगत् क्या करेगा
वहाँ तक प्रसन् सत्य से ही सकेगा
सहूँगी सभी दुख डगर में तुम्हारी
मगर बात देकर भुलाना न आया।
मुझे रीत जग की निभाना न आया।

जन्म स्थान—फ़ैज़ाबाद ।
जन्म-तिथि—३ मार्च १९२६ ।
शिक्षा—लखनऊ-विश्वविद्यालय से बी० ए० प्रयाग-संगीत समिति से संगीत तथा गायन की परीक्षा दे रही हैं ।
विशेष—आकाश वाणी लख



सरला श्रीवास्तव

नऊ के संगीत और नाटक विभाग में सन् १९४९ से भाग लेती रही हैं। आजकल कमला गर्ल्स कालिज, लखनऊ में अध्यापिका हैं। स्थायी पता—द्वारा—श्री बी एम भट्टा पास नवाब कोठी के सामने नरही लखनऊ।

वह न मिला !

जीवन भर उसको ढूँढ थकी
एक टीस मिली पर वह न मिला !
आँसू बरसाए इधर उधर
कुछ शान्ति मिली पर वह न मिला !

रोते रोते मैं हार थकी आँख भी लाल गुलाब हुई
बरसात थकी फिर विरह-जगी रातों की नींद खराब हुई
स्म व्यथित प्रेम की छाया में देने को टीस अमर दे दी
जब टीस मिटाना चाहा तो
सम्मान किया पर वह न मिला !
जीवन भर उसको ढूँढ थकी
एक टीस मिली पर वह न मिला !

सपने भी क्या क्या सोचा था मन में कल्पित रूप महल बना
पर आँधी-पानी में उसको तुम बहा गए जो कुछ था बना
दिन रात बनाए स्वप्न महल
केवल मिलन की आशा में
जब मिलना चाहा तुमसे तो
पद चिह्न मिले पर पद न मिला
आँसू बरसाए इधर उधर
कुछ शान्ति मिली, पर वह न मिला ।

हिन्दी कवयित्रियों के प्रेम-गान

हर प्यार यहाँ बदनाम रहा, गुमराह यहाँ हर प्रीति रही
सर्वस्व लुटाकर मर जाना बस इस जग की यह रीति रही
क्या क्षीण शरीर सिंगार करे क्या जाए प्रियतम की नगरी

अब प्यार के बदले हर पग पर
नैराश्य मिला, पर वह न मिला !
जीवन भर उसको ढूँढ थकी
एक टीस मिली पर वह न मिला !
आँसू बरसाए इधर-उधर
कुछ शान्ति मिली पर वह न मिला !

जन्म-स्थान—मेरठ (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि—१९१५। शिक्षा—एम ए० बी टी०। विशेष—आपके पति श्री जे० एम० चौधरी डी० ए० वी कालिज देहरादून में रसायन-शास्त्र के प्रोफेसर हैं और आप स्वयं कानवेन्ट आफ जीसस एण्ड मेरी



सरस्वती चौधरी

स्कूल देहरादून में अध्यापिका हैं। गीत थोड़े ही लिखे हैं। कहानी और लेखों की ओर अधिक झुकाव है। कुछ रचनाएँ 'सरिता' 'धर्मयुग' और 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित हुई हैं। स्थायी पता—१८ माउन्ट नर्स रोड देहरादून।

ज़िन्दगी फिर साथ लाओ !

कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार आओ !

ज़िन्दगी से दूर हैं पर चरण बढ़ते जा रहे हैं
मौन आँखें रो रहीं पर गीत बनते जा रहे हैं
है वही मंज़िल पुरानी राह तो बदली हुई है
क्या हुआ जो पथ भुलाया हर नज़र समझी हुई है
कौन जाने किस जगह तुम ज़िन्दगी फिर साथ लाओ !
कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार आओ !

मैं शिथिल विश्वास इस पथ आज फिर से थम रहो है
मैं बुझी-सी ध्वनि हुई हूँ रात बनकर गल रही हूँ
पूछते निर्वाण के क्यों दीप बुझकर जल रहे हैं—
आज ये क्यों प्रश्न उनसे चरण धोने चल रहे हैं
कौन जाने साँझ को तुम, प्रीत का इक गीत गाओ !
कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार आओ !

प्रिय तुम्हारे गीत थे जो बन गए उपहास भरा
प्राण, मेरी कल्पना हो मैं गई मधुमास मरा
मिल रहा आह्वान मुझको प्रब मधुरे गान लेकर—
पग निरंतर बढ़ रहे पर मौत को मुसकान देकर
कौन जाने अन्त में तुम अश्रु को दो बूँद लाओ !
कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार आओ !

जन्म-स्थान—मथुरा का एक गाँव। जन्म-तिथि—सन् १९२१। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी) करके १९५१ में रघुनाथ गर्ल्स कालिज मेरठ में अध्यापन कार्य। १९५४ में अजमेर के सावित्री गर्ल्स कालिज की अध्यक्षा। आजकल मथुरा के किशोरीरमण गर्ल्स कालिज की प्रधानाचार्या। जयपुर तथा लखनऊ के आकाश वाणी-केन्द्रों



सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

पर आयोजित 'स्वर बेला' तथा रसवन्ती कार्यक्रमों में भाग लिया। रेडियो से गीत भी प्रसारित होते रहते हैं। बच्चों के लिए कुछ लोरियाँ प्रभातियाँ और गीत भी लिखे हैं। 'साधना' नाम से एक कविता-संकलन भी प्रेस में जा रहा है। स्थायी पता—किशोरी रमण गर्ल्स डिग्री कालिज मथुरा।

अपने द्वार मुझे आने दो !

रे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो !

कभी न मुझको 'प्रेयसि' कहकर
तुमने अपने पास बुलाया
पाती भी निष्ठुर कब भेजी
नित्य प्रतीक्षा में तरसाया

मेरी याद न तुमको आई अपनी याद मुझे आने दो !
मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो !

जब-जब याद तुम्हारी आई
नैना बरस बरस बदली
हँसी सुबह की बदल गई है
स्वर्ण सुहाती सन्ध्या बदली

मेरी पीड़ा मिली न तुमको अपनी पीर मुझे पाने दो !
मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो !

तुमने कहा, 'न आना मुझ तक'
सुनकर प्राण विकल थे कितने
हुआ मुझे आभास उसी क्षण
तुम प्राणों को प्रिय थे कितने,

तुम नैनों में रम न पाकर मुझे जरा-सा रम जाने दो।
मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो !

जन्म-स्थान— मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि— २५ दिसम्बर १९२६। शिक्षा— प्रयाग महिला विद्यापीठ से मैट्रिक करने के उपरान्त विशारद किया। विशेष— प्रयाग महिला विद्यापीठ के छात्रावास में रहने के कारण श्रीमती महादेवी वर्मा की छत्रछाया में काव्य की ओर विशेष रुचि हो गई।



सावित्री जायसवाल

विवाह के बाद परिस्थितिवश कुछ वर्ष तक इस क्षेत्र से अलग रहीं। इनकी रचनाएँ 'ग्राम सुधा' में प्रकाशित हुआ करती थीं। आजकल 'नैतिक' तथा 'युवक' में प्रकाशित होती रहती हैं। स्थायी पता—द्वारा श्री नरोत्तमदास जायसवाल वकील नारायण मन्दिर स्टेशन रोड उन्नाव। (उत्तर प्रदेश)।

मुझे मिले थे प्रियतम रात !

कितना सुन्दर आज प्रभात, मुझे मिले थे प्रियतम रात !

पात ही प्रिय का सन्देश
आया फिर आनन्द अशेष
पूजन के हित चली थाल ले
पुलक रहे थे सखि, मम गात !
कितना सुन्दर आज प्रभात !

जब ले छुकी चरण की धूल
हँसे कुसुम शाखा पर भूल
चँवर डुलाती मन्द पवन थी
झूम रहे थे सब तरु-पात !
मुझे मिले थे प्रियतम रात !

चरणोदक पाने को सत्वर
लहरें लड़ने लगीं परस्पर
ज्वार लगा उठने सागर में
सखि प्रिय हैं ऐसे अभिजात !
कितना सुन्दर आज प्रभात !

गोले चरण समीर सुहाती
वारिद बना उमे बरसाती

बुझ जाता सब प्यास धरा को
यों मेरे प्रिय! सबके साथ!
मुझे मिले थे प्रियतम राम

उस दिन हम बैठे थे तट पर
व्रत छूट गया तब पनघट पर
स्नेह-सुधा से आप्लावित हो
बीता कितना समय न ज्ञात!

कितना सुन्दर सांझ प्रभात
मुझे मिले थे प्रियतम राम!

जन्म-स्थान—बीकानेर (राजस्थान)। जन्म-तिथि—सन १९१७। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)। विशेष—लिखना आठवीं तथा नवीं कक्षा से ही शुरू कर दिया था। जब नवीं कक्षा में थीं तो इनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपनी प्रारम्भ हो गई थीं। प्रथम बार सावित्री सोलंकी नाम से लिखती थीं। प्रकाशित रचनाएँ— अमिट



सावित्री डागा

निशानी (कविता-संग्रह) और मुक्तमनी (मुक्तक संग्रह)। अप्रकाशित कृतियाँ—'कविता की मीनार पर (कहानी-संग्रह) तथा दो तार एक झंकार' (कविता संग्रह)। आजकल आप मेघ स्मृति कन्या विद्यालय कालाडेरा (राजस्थान) में हिन्दी की प्राध्यापिका हैं। स्थायी पता—मोची और जोधपुर।

तुम आशा बनकर आते हो !

मेरे इस सूने जीवन में तुम आशा बनकर आते हो !

आ जाती जब नैराश्य निशा
छा जाता है तम आस-पास
जीवन का पथ छिप-छिप जाता
हो जाता भग्न मन उदास
ऐसे में तुम राका-शशि-से आ मन्द-मन्द मुसकाते हो !
मेरे इस सूने जीवन में तुम आशा बनकर आते हो !

जीवन के इस सूने नभ में
घनघोर घटा छा जाती है
पग-पग पर नूतन साज सजा
जब अमा निशा आ जाती है
ऐसे में तुम खद्योत बन जगमग जग-ज्योति जगाते हो !
मेरे इस सूने जीवन में तुम आशा बनकर आते हो !

जीवन का गौरव सपनों का
दुर्दिन शिशिर चूर कर जाता है
छाया की जलती लपटों से
जब मरु उपवन बन जाता है
ऐसे में तुम ऋतुराज बने कोयल-सी कूक सुनाते हो !
मेरे इस सूने जीवन में तुम आशा बनकर आते हो !

आतुर जग के सब साज क्षणिक
नश्वरता का नर्तन होना
यह देख चकित हो मेरा मन
जग की नादानी पर रोता
तब तुम्हीं प्रेरणा राग छेड़ नवजीवन-गीत सुनाते हो!
मेरे इस सूने जीवन में, तुम आशा बनकर आते हो!

जन्म-स्थान—जवाहरनगर, मेरठ छावनी। जन्म तिथि—१६ नवम्बर सन् १९१६। शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर साहित्य रत्न। विशेष—सन् १९४२ के आन्दोलन में जेल गईं। विशेष रूप से वीर रस हास्य रस और शृंगार रस की कविताएँ लिखने में अधिक सफलता मिली। रचनाएँ 'साप्ताहिक



सावित्री रस्तोगी

हिन्दुस्तान' 'सरिता' 'पराग' तथा 'किरण' आदि पत्र-पत्रिकाओं में ससम्मान प्रकाशित होती रही हैं। आकाशवाणी के नई दिल्ली केन्द्र पर भी रचनाएँ प्रसारित हुई हैं। वर्तमान पता—द्वारा श्री विद्या सागर रस्तोगी जवाहरनगर मेरठ छावनी।

तुम न आओ !

तुम न आओ प्यार की मनुहार की पाती पुराए
प्रीति का बादल बरसैया न रहा है !

कौन कहता है कि मनवन की सजा इतनी बड़ी है
मान का पर्दा उठाए मानिनी कब से खड़ी है
तुम न आओ रेशमी घूँघट बिना कर से उठाए
नैन का बादल बरसैया न रहा है !
तुम न आओ प्यार की मनुहार की पाती पुराए
प्रीति का बादल बरसैया न रहा है !

मौन मुखरित हो उठा अब रागिनी में छंद फूटे
प्यार भीगी आँसुओं से लोचनों के स्वप्न टूटे
तुम न आओ मधुभरी गागर पलक पनघट सुखाए
भीगता आँचल बरसैया न रहा है !
तुम न आओ प्यार की मनुहार की पाती पुराए
प्रीति का बादल बरसैया न रहा है !

गा गया उन्माद हलचल में भरी सुधि की गली है !
घूमने प्रिय के बसेरा अब साज की डोली चली है
तुम न आओ चाह की मृतप्राय-सी अर्थी सजाए
नेह का दृग-मन-रस बरसैया न रहा है !
तुम न आओ प्यार की मनुहार की पाती पुराए
प्रीति का बादल बरसैया न रहा है !

जन्म तिथि—१३ दिसम्बर १९१९। शिक्षा — इण्टर साहित्य विशारद (हिन्दी साहित्य-सम्मेलन)। विशेष — एक मध्यमवर्गीय



सावित्री शुक्ल

कान्यकुब्ज मिश्र-परिवार में जन्म। स्थायी पता—मुकाम गढ़न देवगढ़पुरा इटारसी (मध्य प्रदेश)।

मीत तुम्हारी सुधि आती है !

दूर चले जाते हो मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

मुझको तुम पर श्रद्धा ऐसी
जैसे सागर लहराता हो
पूनम में जैसे नीला नभ
अमित विभा से भर जाता हो
आँखों से ओझल होने पर केवल सुधि ही उर आती है !
दूर चले जाते हो मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

परिभाषा में हीन भले रे,
मेरा स्नेह सदा जगता है
पूर्ण चन्द्रमा सदा चमकता,
नहीं ज्वार भाटा बनता है
मेरे मन की मान नहीं पर कोकिल आम-तले गाती है !
दूर चले जाते हो मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

कौन किसी को सुख दे जाता
सुख-दुख तो मन में रहते हैं
चाहे हँस लो या सिसकी लो
हास्य-रुदन संग-संग चलते हैं
कभी विहँसती कभी सिहरती जगती जीवन की बातें हैं !
दूर चले जाते हो, मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

जन्म-स्थान—फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि—सन् १९२२। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)। विशेष—हिन्दी के विख्यात साहित्यकार श्री शम्भूदयाल सक्सेना की सुपुत्री और राजस्थान के [illegible] पत्रकार [illegible] श्री सम्पत्तिराय(?) भटनागर की पत्नी। राजस्थान विश्वविद्यालय में राज्य की समस्त छात्राओं में एम० ए० में प्रथम



सीता भटनागर

स्थान प्राप्त करने के कारण स्वर्णपदक प्राप्त किया। महाराजा बीकानेर के महारानी सुदर्शन कालिज में प्राध्यापिका। इनके गद्य-गीत, गीत, कविताएं और [illegible] विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। गद्य-गीतों का एक संग्रह प्रेस में है। स्थायी पता—सदर(?) [illegible] बीकानेर।

हिन्दी [illegible] के प्रमुख [illegible]

आया कौन रिझाने !

मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुनाने ?

आज व्यथा उन्मन मन्था का मौसम रहा सवार
लहर-लहर के अन्तर में है जाने कितना प्यार ?
आज जगी है नयनों के सम्मुख में सारी पीर—
बहते आँसू की लड़ियों को आया कौन हँसाने ?
मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुनाने ?

मेरे जीवन के उपवन में पतझड़ की नीरवता
तनहाई में सिसक रही मेरे अन्तर की कविता
अपनी सुरभित मलय-समीरी साँसों के जादू से—
कौन उजड़ते उपवन में आया मधुमास सजाने ?
मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुनाने ?

जब तक पीड़ा है तब तक जीने का मोह घना है
अभिलाषा प्रकाश की तब तक जब तक तिमिर घना है
कोई आएगा इस आशा में साँसों को थामा—
मेरी सुलगाती आशा को आया कौन रिझाने ?
मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुनाने ?



सुदर्शन बाहरी

जन्म-स्थान — स्यालकोट (पाकिस्तान)। जन्म तिथि — २९ अक्तूबर १९२९ शिक्षा — प्रभाकर साहित्य रत्न एम० ए० (पंजाब यूनिवर्सिटी से)। विशेष — अपनी माता श्रीमती सुशीला पुरी के साहित्य तथा संगीत के प्रति प्रेम के कारण इनका झुकाव भी कविता की ओर हुआ। विवाह से पहले आप सुदर्शन पुरी नाम से लिखती थीं। आजकल आप सी० आर० ए० कालिज सोनीपत में प्राध्यापिका हैं। वर्तमान-पता — सी० आर० ए० कालिज सोनीपत (पंजाब)।

बेसुध प्रीत-कहानी चलती !

रात रात भर दीप शिखा-सी मन की यह नादानी जलती !
नभ पर चलता चाँद, धरा पर बेसुध प्रीत-कहानी चलती !

युग-युग से बे पहचान-से,
किन्तु न बनकर प्राण अपने
छवि-सुषमा के रंग विरंग
जाग रहे पलकों में सपने
रात रात भर विरह मिलन की दुनिया सौ-सौ रंग बदलती !
नभ पर चलता चाँद धरा पर बेसुध प्रीत-कहानी चलती !

पिय को कैसे दर्शूँ भाग—
है सुख-दुख का ताना-बाना
अनजानों की इस बस्ती में
कौन यहाँ जाना-पहचाना
रात रात भर नया रूप धर भ्रान्ति मुझे अनजानी छलती !
रात रात-भर दीप-शिखा-सी मन की यह नादानी जलती !

भरकर पगली प्यास प्राण में
रस के मधुर गीत मैं गाती
सूनेपन में खोई-खोई
कांटों को राहें अपनाती ,
रात-रात भर सुधि-सपनों की, अविरल आनाकानी चलती !
नभ पर चलता चाँद धरा पर बेसुध प्रीत कहानी चलती !



जन्म-स्थान— कामोकी मण्डी गुजरानवाला (पाकिस्तान)। जन्म तिथि— सन् १९-१। शिक्षा—शास्त्री साहित्य रत्न इंगलिश का स्वतंत्र अध्ययन। विशेष— संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पंडित श्री हरनारायण शास्त्री के निरन्तर १० वर्ष के सान्निध्य से साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण। मल्लिका नामक मासिक

सुवेश प्रतिमा

पत्रिका की सहायक सम्पादिका। रचनाएँ— 'स्वप्नवधू' नामक सामाजिक उपन्यास 'मल्लिका' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रहा है। 'अनुभूति गुणार्जन' नामक गीत-संग्रह अभी अप्रकाशित है। स्थायी पता—द्वारा 'मल्लिका' प्रकाशन संस्थान, स्टेट रानी झाँसी रोड नई दिल्ली।

कौन मन की पीर जाने!

जो न प्रिय की पीर जाने!
तो भला किसका कहाँ मिलन तथा किसको विराम!
जो न प्रिय की पीर जाने!

नयन के निर्मल मुकुर में
है लिखी मन की कहानी
कल्पनाओं के बिरंगे—
फूल-कुसुम में है सुहानी
बदन पट पर हो लिखित, उसको न पढ़ भी सत्य मान!
जो न प्रिय की पीर जाने!

जो हृदय-तल में प्रतिष्ठित
जो बना सर्वस्व अपना
तारिकाओं में बसा रहता—
बना नित एक सपना
हो वही निष्ठुर पराया, मान यदि हठ आज ठाने!
कौन मन की पीर जाने!

रट सतत पी-पी जिसे
अनुराग-युत स्वर से पुकारा,
हा तृषा-बाधित कठिन था—
स्वाति-व्रत-संकल्प धारा

रट-व्रती चातक यति को, हाय घन अपना न माने ।
कौन मन की पीर जाने ?

बन अधिप तन और मन का
नित्य जा सन्ताप दहता
अश्रु अक्षय धार के-
अभिषेक से गुरु दीप्ति लेता
अब अमा बस मनाएं जो न फिर भी नेह माने ।
कौन मन की पीर जाने ।

जन्म-स्थान—बिजनौर। जन्म तिथि—फरवरी सन् १९३५। शिक्षा—सन् १९५५ में लखनऊ-विश्वविद्यालय से बी० ए०। इसके दो वर्ष बाद आगरा-विश्वविद्यालय से एम० ए०। विशेष—बिजनौर के प्रसिद्ध समाज-सेवी श्री रतन लाल जैन की सुपुत्री। १२ १३ वर्ष की आयु में ही साहित्य में

सुधा जैन



रुचि। तभी से कविताएं तथा कहानियां लिखने लगीं। लेख और गद्य-गीत भी लिखे हैं। चित्र कला में भी विशेष रुचि है। इनके पति डॉ० इन्द्रसेन जैन पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज चण्डीगढ़ में हैं। वर्तमान पता—मकान १६० हाउस १८ बी चण्डीगढ़ (पंजाब)।

साँसों का यह रथ चलता है!

प्राण! तुम्हारे स्मरण-मात्र से
साँसों का यह रथ चलता है!
प्रिय! तुम स्नेह-छोह देते हो
मेरा सुधि-प्रदीप जलता है!

नयनों में हैं मिलन सपन
पथ-मग में मगन सपन
मोह तुम्हारा निष्ठुरता का
हिम खण्डित होकर गलता है!
प्राण! तुम्हारे स्मरण-मात्र से
साँसों का यह रथ चलता है!

सतत हो मन-वीणा वन्दित
सतत हो जीवन है स्पन्दित
धूप-छाँह में नेह तुम्हारा
जल बन पलकों में ढलता है!
प्रिय! तुम स्नेह छोह देते हो
मेरा सुधि प्रदीप जलता है!

जन्म स्थान—मेरठ। जन्म तिथि—१८ मई सन् १९३५। शिक्षा—एम० ए० पी-एच० डी० (आगरा विश्वविद्यालय से)। विशेष—'विभिन्न युगों में सीता का चरित्र-चित्रण और तुलसीदास में उसकी चरम



सुधा बलवीर

परिणति' विषय पर शोध निबन्ध लिखा। जुलाई १९६१ से वर्धमान कालिज बिजनौर में हिंदी की प्राध्यापिका। स्थायी पता—सुमति सदन महात्मा गांधी रोड मेरठ।

मुसकाने को इन्सान बना।

मुझसे मुरझाया चाँद कहा करता है यों
'आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान बना।'

जब निशा कालिमामय अंचल
फैला देती है धरती पर
जब सूने पथ हो जाते हैं
रो देता है जब यह अम्बर

सब राही का मीमा सा स्वर यह कहता है—
सुनसान डगर में गाने का ही गान बना
मुझसे मुरझाया चाँद कहा करता है यों—
आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान बन

मैं आँसू के खारे जल में
प्रस्तर प्रतिमा को नहलाती
उसके कानों तक यह मेरी
पागल पुकार क्या जा पाती ?
देवालय के घंटे मुझसे यों कहते हैं—
मानव को छलना हो तो पाषाण
मुझसे मुरझाया चाँद कहा करता है यों—
आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान

। एक मृत्यु के क्षण में
सोनों मानाते सो जाते

[हिन्दी कवयित्रियों

चित्र था यह, या प्रणय था
रँग भरी अभिव्यञ्जना थी
तूलिका हो चित्रमय होकर
निजत्व मिटा चुकी थी
नह भर देखा न तुमने पुँछ गया शृङ्गार सारा
धुल रहे सब रंग क्या आकार भी रहने न दोगे ?
प्रथमा था एक यह अधिकार भी रहने न दोगे ?

जन्म स्थान — हाथरस (अलीगढ़), उत्तर प्रदेश। जन्म तिथि — २ जून सन् १९३ । शिक्षा — एम० ए० (हिन्दी) साहित्य रत्न सरस्वती। विशेष — लोक जीवन-विषयक अनेक निबन्ध लिखे हैं। 'ब्रजभाषा में मेंहदी तथा भारतीय सौभाग्य-चिह्न बिन्दी' आपके अनुसन्धानपरक निबन्ध



हृदयनन्दिनी भाटिया

हैं। आप संगीत में भी विशेष रुचि रखती हैं। मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ में हिन्दी तथा संस्कृत-विभाग के प्राध्यापक 'डॉ० कमलाचन्द्र भाटिया की सहधर्मिणी। वर्तमान पता — प्रधानाचार्या भारती महिला विद्यालय गांधी पार्क, अलीगढ़।

आ भी आ ओ मीत!

निपट अजानी पीड़ा भर दो, निष्ठुर! प्राणों में!

लगे कूल उगने कि प्रबल झंझा से टकरा दो
नभ लतिका विहँसी कि सुमन शूलों को बिखरा दो
अमिट निराशा-सी छाई उठते अरमानों में!
निपट अजानी पीड़ा भर दो निष्ठुर! प्राणों में!

व्यथ संयम की शपथ रहा व्यवहार अमर का है,
ज्ञात हुई थी भाँवर भी स्वर किन्तु समर का है
कहाँ मिल गया गरल सुधा-सी उन पहचानों में!
निपट अजानी पीड़ा भर दो निष्ठुर! प्राणों में!

आ भी जा ओ मीत कि दुस्तर हुआ प्रणय बन्धन,
तुझे द्वार पर टिके नयन, दुहराते प्राण लगन,
स्वयं उभर आई बन्दनी मृदु मुस्कानों में!
र दो निष्ठुर! प्राणों में!

जन्म स्थान — [illegible] (मध्य प्रदेश)। जन्म तिथि— २ मई सन् १९१५। शिक्षा— जबलपुर के महिला [illegible] स्कूल में शिक्षा ग्रहण ही कर रही थी कि आपका विवाह हो गया। विशेष–हिन्दी के प्रख्यात

हीरादेवी चतुर्वेदी



पत्रकार लेखक और 'सरस्वती' के भूतपूर्व सम्पादक श्री देवी दयाल चतुर्वेदी 'मस्त' की धर्मपत्नी। प्रकाशित रचनाएं— 'मंजरी' 'नामम' 'मधुवन'। स्थायी पता–पता श्री देवी दयाल चतुर्वेदी 'मस्त' सूचना विभाग मध्य प्रदेश ग्वालियर।

जाने कैसा उनका प्यार ?

नहीं समझ जो पाती हूँ मैं कौतुक अपरम्पार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

कहते रहते यही सदा थे, प्रेयसि ! प्राणाधार
स्मृति के कण-कण में तेरा सदा रूप निहार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

तिमिर-पूर्ण-सी घोर निशा में कहते यही पुकार–
प्रेयसि ! लगे जगमग जगमग दिखती छटा अपार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

उच्छ्वसित सरिता में भी जाकर, लखकर निज मनुहार
कहते मुझसे तुम्हें देखता लहरों में साकार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

कहूँ कैसे मैं उनका कपट पागल-सा व्यापार
या पगला था कहूँ इस मैं फिर समान अपार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

जन्म स्थान—मेरठ के प्रसिद्ध पत्थर वाले खानदान में। जन्म तिथि—माघ शीर्ष कृष्णा ५ संवत् १९५६ वि०। निधन तिथि — ३ फरवरी १९५१। विशेष—हिन्दी की प्रख्यात कवयित्री और कहानी लेखिका। प्रकाशित रचनाएं—कविता-संग्रह 'उद्गार' (१९३६) गद्य (१९३९) 'प्रतिच्छाया'



स्व० होमवती देवी

(१९३९ में श्री कृष्णचन्द्र शर्मा चन्द्र और श्री विरह प्रकाश दीक्षित 'बटुक' के साथ सम्मिलित रूप में)। 'निःस्पन्द' और अन्य कविताएँ अप्रकाशित। कहानी संग्रह निसर्ग (१९३९) 'धरोहर' (१९४६) स्वप्न भंग (१९४८) 'अपना घर' (१९५)। कुछ गद्य-काव्य भी लिखे थे जो कुछ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे।

जाने कैसा उनका प्यार ?

नहीं समझ जो पाती हूँ मैं कौतुक अपरम्पार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

बहुत रहस्य यहाँ सुना है प्रेयसि ! प्राणाधार
स्मृति के कण-कण में तेरा कैसा रूप निहार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

तिमिर-पुंज-सी घोर निशा में बहुत यही पुकार—
रूपसि ! लगी जगमग जगमग दिखती छटा अपार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

उच्छल सरिता में भी आकर, सस्वर निज मनुहार
कहकर 'मुझमें तुम्हें देखना लहरों में साकार !'
जाने कैसा उनका प्यार ?

कहूँ इसे मैं उनका चंचल पागल-सा व्यापार
या अपना हो कहूँ भ्रम मैं फिर अज्ञान अपार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

जन्म स्थान—मेरठ के प्रसिद्ध पत्थर वाले खानदान में। जन्म-तिथि—मार्ग शीर्ष कृष्णा ५ संवत् १९५६ वि.। निधन तिथि — ३ फरवरी १९५१। विशेष—हिन्दी की प्रख्यात कवयित्री और कहानी लेखिका। प्रकाशित रचनाएँ—कविता-संग्रह 'उद्गार' (१९३९) 'अर्घ्य' (१९३९) 'प्रतिछाया'



स्व० होमवती देवी

(१९१९ में श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'चन्द्र' और श्री विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक' के साथ सम्मिलित रूप से)। 'निसर्ग' और अन्य कविताएँ अप्रकाशित। कहानी संग्रह निसर्ग (१९३९) 'धरोहर' (१९४६) 'स्वप्न भंग' (१९४८) अपना घर' (१९५०)। कुछ गद्य-काव्य भी लिखे थे जो कुछ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

मुसकाती ऊषा के सम्मुख कैसे गीली पलकें खोलूँ ?
किस भाषा के उजियाले में मन के मनके बट पिरा लूँ !

सब कहते हैं तुमसे सबेरा
छोड़ चला पंछी गगन डेरा
मैं पंखों में क्या बल भरकर उड़ जाऊँ किस तरु पर बोलूँ ?
मुसकाती ऊषा के सम्मुख कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

गाने दो यदि खग गाते हैं
गीत मुझे अब कब भाते हैं ?
रहने दो चुपचाप मुझे मैं भार हृदय-पीड़ा का ढो लूँ।
मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खोलूँ

सुख-सपनों में विहग पल-पल
गाकर व्यथा पुरानी अविरल
यह सम्भव है मधुमय मादक दृगों उर-प्याला में घोलूँ।
मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

किसको मानूँ अपना जग में
साथी जो था भूला मग में
जिसके हित सब सुख प्राणों में मैं जीवन भर जागृत हो लूँ !
मुसकाती ऊषा के सम्मुख कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

जन्म-स्थान—मुरादाबाद। जन्म-तिथि—दिसम्बर, १९३०। शिक्षा—प्राइमरी तक बरेली में ९ वीं क्लास महिला विद्यालय लखनऊ से, मैट्रिक १९४५ में नागपुर से इन्टर भी वहीं से १९४६ में आगरा से बी० ए० उस्मानिया विश्वविद्यालय से १९५२ में एम० ए०। विशेष—कई वर्ष पहले तक इनके लेख



ज्ञान अस्थाना

और कविताएं 'कमल' 'गृहिणी' 'धर्मयुग' सरिता 'नारी अभिमान', अजन्ता तथा 'समाज' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। आज कल पिछले छह वर्षों से उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में प्राध्यापिका हैं। स्थायी पता—हिन्दी विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद।

तुम दृगों में छा रहे हो!

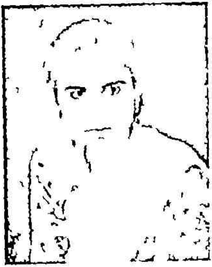
आज आखिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं!

चाँद छिप जाता गगन में
शान्त रजनी को सताने
मौन नयनों की तृषा का—
स्वप्न था आता बुझाने
स्वप्न में संसार को पर सत्य कैसे मान लूँ मैं!
आज आखिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं!

प्यार में बन याद के घन
तुम दृगों में छा रहे हो
प्राण! पावस में निरन्तर—
दूर हो, मँडरा रहे हो
इस सघन घन की ममता असत्य कैसे मान लूँ मैं!
आज आखिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं!

इस निशा के पन्थ का यह
पार दृग तक रहा है
श्वास के संघर्ष में—
विश्वास मेरा थक रहा है
तुम सदा मेरे रहोगे सहज कैसे जान लूँ मैं!
आज आखिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं!

जन्म-स्थान— बिजनौर। जन्म-तिथि— सन् १९३१। शिक्षा—विदुषी। विशेष—आपकी रचनाएँ मुरादाबाद काशीपुर तथा गढ़वाल आदि की



भागवती सकसेना

स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। पति के द्वारा इस दिशा में विशेष प्रोत्साहन मिला है। वर्तमान पता—२५ मसी माटाम बरेली (उत्तर प्रदेश)।



ज्ञानवती सक्सेना 'किरण'

जन्म स्थान— उदयपुर (राजस्थान)। जन्म-तिथि— १२ अगस्त १९१८। शिक्षा— विशारद साहित्य रत्न साहित्यालंकार, एम॰ ए॰। विशेष—६ वर्ष की आयु में ही पिता का देहावसान। विवाह के उपरान्त ही अपने अध्यवसाय से शिक्षा प्राप्त की। सन् १९६१ में ४३ वर्ष की आयु में विक्रम-विश्वविद्यालय से एम॰ ए॰ की परीक्षा उत्तीर्ण की। पति श्री ब्रजभूषणलाल सक्सेना आजकल रीवाँ (मध्य प्रदेश) में निवास कर रहे हैं। इनकी रचनाएँ प्राय: सभी प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। वर्तमान पता—द्वारा श्री ब्रजभूषणलाल सक्सेना एडीशनल डिस्ट्रिक्ट जज रीवाँ (मध्य प्रदेश)।

मुझसे मेरे गान न छीनो !

जीने को है साध न मुझको
मरने का अरमान न छीनो ।
मुझसे मेरे गान न छीनो ।

मैंने अपनी जीवन नौका
बीच भँवर में ला डाली है
मैंने अपनी नियति आशा
दुख की झंझा में पाली है
नयनों के निर्झर से झिलमिल
अधरों की मुसकान न छीनो ।
मुझसे मेरे गान न छीनो ।

सपपग का निर्मम दीपक
मेरी मंजिल का श्रम हरता
सहज सरस विश्वास तुम्हारा
मेरी पीड़ा का श्रम करता
स्थान मत दो पर मंदिर की
देहरी का पहचान न छीना
मुझसे मेरे गान न छीनो ।

ये मधुरिम दो बोल तुम्हारे
मेरे मानस में आ छाते

रीते रीते नयनों में तव
रिमझिम सावन घन भर जाते
क्षीण कुटी को झंकृत करती–
स्वर-वीणा की तान न छीनो !
मुझसे मेरे गान न छीनो !